समर्पण

जिनको पूर्व-राजपूत-संस्कृति और गौरव का गर्व है;
जिनकी रुचि और प्रेरणा से ये कहानियाँ लिखी गई हैं;
जो युद्धवीरता, दानवीरता, प्रतिज्ञावीरता, स्वातंत्र्य-
प्रियता, सत्यशीलता, सहिष्णुता, स्वावलंबन-
प्रियता आदि गुणों से परिपूर्ण आदर्श
राजपूत-सभ्यता के प्रति निस्सीम श्रद्धा
का भाव रखते हैं; और जो वर्त्तमान
काल में उन ओजस्वी गुणों को
भारतीय चरित्र में समन्वित
करने के इच्छुक हैं,

उन

सात्विकशील, उदारमना, सौजन्यसागर, दानवीर,
राजस्थानरत्न,

श्री० सेठ घनश्यामदासजी बिड़ला

की सेवा में तुच्छ भेंट समर्पित

—सूर्यकरण पारीक

क्रम-सूची

पृष्ठ

भूमिका

राजस्थानी कहानियों का सम्पादन करने के लिए गतवर्ष मुझे श्री० सेठ घनश्यामदासजी बिड़ला की ओर से प्रेरणा हुई थी। यद्यपि लगभग पिछले दश वर्षों से राजस्थानी के प्राचीन साहित्य का अनुशीलन करते रहने से मुझे यह धारणा अवश्य होरही थी कि निकट भविष्य में कभी इन कहानियों का आस्वादन पठित जनता को कराने का अवसर मिलेगा, परन्तु यह इच्छा इस रूप में इतनी शीघ्र कार्यान्वित हो सकेगी, ऐसी मुझे आशा न थी। इसका श्रेय उदारमना श्री बिड़लाजी को ही है। श्री बिड़लाजी के सौजन्यपूर्ण हृदय में मैंने प्राचीन राजपूत सभ्यता के प्रति निस्सीम श्रद्धा और सच्चे उत्साह को पाया और यह जान कर आशातीत प्रसन्नता हुई कि ऐसे २ उत्साही एवं लब्धप्रतिष्ठ महाजनों का ध्यान यदि भारतीय इतिहास और साहित्य के इस चिर-उपेक्षित अंग की ओर प्रेरित होता रहा, तो न केवल राजस्थानी और हिन्दी साहित्य का ही उपकार होगा वरन् भारतीय संस्कृति और सभ्यता का एक गौरवपूर्ण पक्ष जनता के समक्ष अपने उज्ज्वलरूप में शीघ्र ही उपस्थित किया जा सकेगा।

सुसंगठित और स्थायीरूप में राजस्थानी साहित्य के पुनरुद्धार, प्रकाशन और संग्रह के लिए श्री बिड़लाजीने इसी वर्ष एक विशेष आयोजना स्थापित की है, जिसको कार्यरूप में परिणत करने के लिए आपने पर्याप्त धन प्रदान कर अपने साहित्य-प्रेम और सात्विकशील उदारता का परिचय दिया है। इस आयोजना के अनुसार श्री बिड़ला कालिज, पिलानी की अवधानता में "पिलानी राजस्थानी ग्रंथमाला" प्रकाशित की जायगी। साथ ही पुरानी हस्तलिखित पुस्तकें, जो अप्राप्य

अथवा कष्टप्राप्य हैं, अथवा कालान्तर में जिनके नष्ट हो जाने की संभावना है—ऐसी पुस्तकें नकल करवा कर कालिज के पुस्तकालय के हस्तलिखित विभागमें सुरक्षित रखी जांयगी। राजस्थान के ग्रामगीत, कहानियाँ, लोकोक्तियाँ, दूहे, काव्य इत्यादि प्राचीन साहित्य-सामग्री के संग्रह का कार्य भी इसी आयोजना में सम्मिलित है।

उपर्युक्त पुस्तकमाला के अन्तर्गत "राजस्थानी वार्ता" यह पहली पुस्तक है। इस वर्ष तीन पुस्तकें प्रकाशित करने की आयोजना की गई है। दूसरी पुस्तक—'राजस्थानी दूहा-संग्रह' और तीसरी 'राजस्थानी लोकोक्ति-संग्रह'-भी लगभग तैयार हैं और इसके बाद यथाशीघ्र प्रकाशित की जांयगी।

जब से कर्नल टॉड ने बड़े परिश्रम और खोज के बाद राजस्थान का इतिहास लिखा है, तब से लोगों का ध्यान राजस्थान के पूर्व-गौरव की ओर विशेष रूप से आकर्षित होने लगा है। अपने इतिहास की भूमिका में टॉड साहब ने एक जगह लिखा है—

"There is not a petty state in Rajasthan that has not its Thermopylae and scarcely a city that has not produced its Leonidas."

राजस्थान के इतिहास के सम्बन्ध में टॉड के ये शब्द प्रायः लोकोक्ति की तरह प्रसिद्ध होगये हैं। परन्तु इन शब्दों की वास्तविकता की खोज बहुत कम लोगों ने अब तक की है। कुछेक गिने चुने विद्वानों को छोड़ कर राजस्थानी का क्षेत्र अब भी उतना ही अन्धकारमय है जितना कि टॉड के पूर्व था। परन्तु इस निराशान्धकार में आशा की नवज्योति प्रातःकालीन उषा की स्वर्णलालिमा की तरह फूटकर निकलने लगी है। इसका एक प्रमाण यह है कि राजस्थानवासियों के हृदय में पूर्वकालीन राजस्थान की प्रतिभा और गौरव की ओर श्रद्धा जागृत हो रही है।

इस छोटी-सी पुस्तक के प्राक्कथन के रूप में राजस्थानी सभ्यता और पूर्वसंस्कृति पर लम्बा निबन्ध लिख डालना अयुक्तिसंगत होगा। प्रस्तुत कहानियों का संकलन करते और लिखते समय यदा-कदा दो एक विशेष बातें हमारे ध्यान में आई, जिनका उल्लेख कर देना यहाँ अनुचित न होगा। संक्षेप में वे बातें ये हैं—

(१) राजपूत सभ्यता और पूर्वसंस्कृति का एक प्रमुख रूप इन कहानियों और इसी प्रकार की अन्य असंख्य आख्यायिकाओं में देखने को मिलता है।

(२) राजस्थान में कहानी कहने और लिखने की एक सुपुष्ट और अद्वितीय कलात्मक शैली प्राचीन काल से प्रचलित रही है, जो हिन्दी की अपेक्षाकृत अर्वाचीन-कालीन कहानी-कला से सर्वथा भिन्नरूप है।

(३) इन कहानियों में आंशिकरूप में प्रख्यात राजपूत कुलों का इतिहास रहता है। अतएव ऐसी कहानियों की खोज करके प्रकाशन करने से न केवल राजस्थानी और हिन्दी के मनोरंजक साहित्य की श्रीवृद्धि होने की ही सम्भावना की जा सकती है, वरन् बहुत सी इतिहास-सामग्री भी हस्तगत हो सकती है।

पहली बात पर विचार करने पर यह प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या वास्तव में राजपूत सभ्यता और संस्कृति का कोई अपना निजी रूप और अस्तित्व है, जिसकी खोज करने से भारतीय इतिहास और साहित्य को लाभ पहुँच सके। यह एक जटिल प्रश्न है, जिसका राजस्थानी साहित्य और इतिहास की वर्त्तमान तिमिराच्छन्न दशा में उत्तर देना न तो पूर्णतया संभव ही है और यदि आंशिक रूप में दिया भी जाय तो लोग उसके तथ्य को स्वीकार करने को तैयार न होंगे। हाँ, इस समय इतना कह देना पर्याप्त होगा कि राजस्थानी जीवन-चर्या, विशिष्ट व्यवहार, सामाजिक उत्तरदायित्व और व्यक्तिगत सैद्धान्तिकता में बहुत

सो ऐसी विलक्षणताएँ अवश्य मिलेंगी जो और देशों और जातियों में इतने प्रमुख रूप में नहीं मिलती। राजस्थान देश और उसमें बसने वाली राजपूत जाति के नाम के पर्य्याय से राजस्थानी और राजपूती विशेषताएँ लगभग एक ही समझी जाती रही हैं। वर्णाश्रम-विभाग के साधारण भेदों को छोड़ कर देखा जाय तो राजपूत क्षत्रिय और इतर राजस्थानी वर्णों के जीवन-निर्वाह में लगभग समानता ही है। परन्तु तो भी राजपूत नामोच्चारण से राजपूत क्षत्रिय ही का बोध होता है। इस सकलन में सग्रहीत कहानियों में क्षत्रिय वीरों के चरित्रों का ही दिग्दर्शन हुआ है। परन्तु इससे यह नहीं समझना चाहिये कि इतर वर्णों में आदर्श वीर, आदर्श दानी, देशभक्त और धार्मिक महापुरुष नहीं हुए हैं।

इन कहानियों में प्रदर्शित राजपूत चरित्र के कुछएक प्रमुख गुणोंका संकलन हम नीचे कर देते हैं जिससे उनकी संस्कृति और विशेषता का कुछ अन्दाजा लगाया जा सके।

(१) सबसे पहली विशेषता जो राजपूत के चरित्र में देखी जाती है वह है उसकी मन, कर्म और वचन से दृढ़-प्रतिज्ञता। प्रतिज्ञापालन से विमुख होना राजपूत अपनी कायरता समझता है, अतएव प्राण देकर भी प्रतिज्ञा का पालन करता है। इन कहानियों में आये हुए प्रायः सभी वीर दृढ़-प्रतिज्ञ हैं।

(२) राजपूत का जीवन-सिद्धान्त सत्य में बद्ध-मूल होता है, अतएव वह दृढ़ और अटल होता है। जहाँ सत्य और नीति में सघर्ष पैदा होजाता है, वहाँ राजपूत संस्कार की विशेषता इसी बात में प्रकट होती है कि वह सत्य पर दृढ़ रहता है, चाहे ऐसा करने में उसे सांसारिक दृष्टि से कितनी ही क्षति उठाना पड़े। यही कारण है कि बहुधा आत्मप्रतिष्ठा और प्रतिज्ञा का धनी एक ही क्षत्रिय वीर, नीति के सर्वथा विरुद्ध, बड़े से बड़े साम्राज्य के बल का सामना करने के लिए अड़ जाता है। वह

अलौकिक वीरता अवश्य दिखला जाता है, परन्तु आधुनिक सभ्यता के नीतिज्ञ उस धूम्रकेतु की सी चमत्कारिणी परन्तु क्षणस्थायी वीरता को मूर्खता अथवा अपरिणामदर्शी दुस्साहस ही कहेंगे। राजपूत वीर पिस जाता है, अपने अस्तित्व को मिटा देता है, परन्तु अपने सैद्धान्तिक सत्य की जीते जी रक्षा करने की भरसक चेष्टा करता है। यह एक विलक्षणता उसके चरित्र में पाई जाती है जो संसार की वहुत कम शूरवीर जातियों में मिलती है।

(३) कठोर क्लिष्टताओं से घिरे हुए स्वावलंबनपूर्ण जीवन से राजपूत को विशेष प्रीति होती है, क्योंकि यह गुणउसे अपनी प्राणों से प्रिय स्वाधीनता की रक्षा करने के लिए आवश्यक प्रतीत होता है। मुगल साम्राज्य के स्थापित होने से पहले के राजस्थानी इतिहास पर दृष्टि डाली जाय तो इस वात के असंख्य उदाहरण मिलेंगे कि किस प्रकार स्वाधीनता-प्रिय इस जाति ने उत्तरी और मध्यभारत की उर्वरा भूमि को छोड़कर जलहीन मरुस्थल में स्वाधीनतापूर्वक अपने छोटे २ राज्य स्थापित किये थे। वीरमदे सोनगरा, महाराणा प्रताप इत्यादि वीरों के आख्यान इसी स्वातंत्र्यप्रियता के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

(४) इसके अतिरिक्त पहाड़ के समान अचल संयमशीलता, सहिष्णुता और अटल धैर्य्य, अनुपम निर्भीकता, वैर-प्रतिशोध की तीव्र भावना, आत्मगौरव की अविरत रक्षा, प्रणत-पालन का विरद, दानवीरता और आदर्श शूरवीरता के अनेक ऐसे गुण हैं जो राजपूत चरित्र के विशेष लक्षण कहे जा सकते हैं और जो किसी न किसी रूप में इन कहानियों में व्यक्त हुए हैं। इन सब में भी आदर्श ख्याति प्राप्त करने की कामना की ओर राजपूत की सारी शक्तियों का झुकाव अधिक देखा जाता है। अमर कीर्त्ति प्राप्त करने की लालसा ने न जाने कितने अवसरों पर राजपूतों के हाथ से

ऐसे कार्य करवा दिये हैं जिनकी ऐहिक सम्भावना पर विश्वास करना कठिन हो जाता है। राजपूत में स्पर्धा का गुण भी विशेष मात्रा में होता है। मेवाड़ के इतिहास में शक्तावतों और चूडावतों का शूरवीरता का आदर्श स्थापित करने की दौड़ में पहले नम्बर आने की चेष्टा करना, एक ही वृत्तान्त नहीं है वरन् हजारों ऐसे प्रमाणों से राजस्थान का इतिहास भरा पड़ा हैं। राजपूत आदर्श-त्याग करने में अपनी बराबरी नहीं रखता। मेवाड़ के भीष्म राव चूँड़ाजी, कुवर भीमसिंह, राठौड़ वीर दुर्गादास— ये तो कुछ एक प्रातः स्मणीय नाम हैं। सारांश, राजपूत वीरता को भले ही कोई साम्राज्यवादी नीतिज्ञ दुस्साहस अथवा शक्ति का अपव्यय कहकर पुकारे, परन्तु ससार का मस्तक तो श्रद्धा की भावना से सदा ऐसे ही वीरों की स्मृति में झुकता रहा है और रहेगा। आजीवन युद्ध करने के लिए हृदय में अदमनीय लालसा रखना, सिर कट जाने पर घटों युद्ध करते जाना, निशस्त्र होकर शेरों से मल्ल-युद्ध करना और आत्मगौरव की भावना से प्रेरित होकर अपने हाथ से अपना मस्तक काट कर देना, ये असम्भव कपोल-कल्पनाएँ नहीं वरन् वास्तविक ऐतिहासिक तथ्य हैं, जिनका कर दिखाना ससार भर में यदि किसी जाति के लिए संभव है तो वह है राजपूत जाति।

इन उग्र और ओजस्वी गुणों के साथ ही राजपूत चरित्र की पूर्णता का द्योतक एक कोमल और स्निग्ध भाग भी है जिसमें स्वर्गीय सौन्दर्य की झलक देखने को मिलती है। यही रणभट्ट राजपूत उत्कृष्ट प्रेमी, शान्तिप्रिय उत्तम शासक और उच्चातिउच्च कोटिका विद्वान और कवि भी होता देखा गया है। महाराणा अमरसिंह, महाराणा राजसिंह, महाराजा जसवन्तसिंह, सवाई जयसिंह, राठौड़ महाराज पृथ्वीराज—ये कुछ उदाहरण हैं

परन्तु विधि-विधान का वैचित्र्य ऐसा है कि पूर्ण-चन्द्र में भी कलंक होता ही है। पूर्णता संसार की वस्तु नही है। कालांतर में राजपूत-चरित्र की देदीप्यमान गुणावली मे भी कलंकस्वरूप कुछ दुर्गुण ऐसे घुस गये जिन्होंने घुन की तरह उसे अंदर ही अंदर खा डाला। मिथ्या गौरव और पारस्परिक फूट ने प्रायः सभी प्रतिष्ठित राजकुलों का ह्रास कर दिया है; एक जयचंद की ही कौनसी बात है। प्रत्येक कुल में समय समय पर पारस्परिक वैमनष्य से ऐसी परिस्थितियाँ पैदा होगई हैं कि बाध्य होकर उत्तम से उत्तम वीर को दुष्प्रवृत्ति और ईर्षा का दास होकर अपने हाथ से अपने ही कुल-गौरव पर कुठाराघात करना पड़ा है। १२ वर्ष तक वीरता के साथ एक साम्राज्य की शक्ति के सामने जालौर गढ़ की रक्षाकर चुकने पर, उस अभूतपूर्व विजय का मजा एक क्षुद्रातिक्षुद्र भद्दी सी व्यंग्योक्ति के कारण किरकिरा होजाता है। गढ़ का वीर रक्षक दहिया सरदार ही सोनगरा कुल का भक्षक होजाता है।

दुर्व्यसनों ने भी राजपूत चरित्र का कम ह्रास नहीं किया है। जो मदिरा युद्धस्थल में उत्तेजित होने के लिए योद्धाओं द्वारा पान की जाती थी, वही शान्ति के समय में अच्छे २ राजपूत सरदारों के नाश का प्रमुख कारण हो गई। गोले, बारूद और तलवार की चोट से न परास्त होने वाली वीर जाति मदिरा के प्रवाह में बह गई। मदिरा ही क्यों, उसके साथ दुनिया भर के सब मादक पदार्थ, अवसर हो या अनवसर, सेवन किये जाने लगे। युद्ध को छोड़, विवाह-शादी में अफीम, तिजारा, कसूँभा (गला हुआ पेय अफीम) की नदियाँ बहने लगी और जब इन जहरों से काम न चला तो विषैले साँपों से कटवा कर ज़हर का आनन्द लिया जाने लगा। होते होते मामला यहाँ तक पहुँचा कि जहाँ धर्मवीरता, युद्धवीरता, दानवीरता और प्रतिज्ञापालिता के लिए वीरों के गौरवपूर्ण आख्यान

स्मरण किये जाते थे वहाँ मदिरावीर, अफीमवीर ठाकुरों की प्रशस्तियाँ कवियों के मुख पर शोभा देने लगी। "अमल की नीशाणी" नामक एक बड़ी लम्बी, भावपूर्ण कविता मैंने एक राजस्थानी कविताप्रेमी सज्जन के मुख से सुनी थी, जिसमें मारवाड़ के एक प्रतिष्ठित सरदार की प्रशंसा इसी घात में की गई थी कि किस प्रकार एक अफीम-वीर अपने जीवन में मणों-भर अफीम चाब गये। इतनी उच्च कोटि की होनहार जाति का यह परिणाम होगा, किसी को स्वप्न में भी आशा न थी! सचमुच, विधिविधान की बड़ी विषमता है!!

बहु-विवाह की प्रथा ने भी इस वीर जाति का अपकार ही किया। यह माना कि उस कठिन काल में क्षत्रिय कुलललनाओं के सतीत्व की रक्षा करने के लिए कभी कभी किसी समर्थ राजपूत राजा को एक से अधिक व्याह करने पड़ते थे और दूसरा यह भी कारण हो सकता है कि कन्या के पिता की ओर से प्रस्तावरूप में नारियल आजाने पर आन का धनी कोई भी क्षत्रिय उसे अस्वीकार नहीं कर सकता था, परन्तु ये कारण तो केवल अपवाद मात्र हैं। जानबूझ कर विषय-भोग की कामना से पचासों स्त्रियों से रातदिन घिरे रहना, कहाँ की शूरवीरता है। परमात्मा की दी हुई सत्प्रयोज्य शक्ति का ऐसा दुरुपयोग भी इस जाति के ह्रास का एक कारण रहा है। अस्तु।

(२) अपने प्रकृत विषय, राजस्थानी कहानी पर भी दो शब्द कह देना उचित होगा। हिन्दीसाहित्य के वर्त्तमान काल में कहानी-कला का बड़ा विकास हो रहा है और कहानी की लोकप्रियता उत्तरोत्तर बढ़ती जारही है। हिन्दी में कहानी की शुरुवात बंगला की गल्पों के अनुकरण से हुई। परन्तु राजस्थानी का कहानी-साहित्य उसकी निजी सम्पत्ति है। राजस्थान में बहुत प्राचीन काल से कहानी कहना और लिखना

चारणों और भाट कवियों का काम रहा है। इसके रूप की व्यापकता को देखते हुए कहना पड़ता है कि राजस्थानी का अधिकांश गद्य-साहित्य, यहां तक कि ऐतिहासिक सामग्री भी कहानी के ही रूप में प्रकट हुए हैं। राजस्थान के इतिहाक ग्रंथ "ख्यात" कहानियों के सग्रह मात्र हैं।

राजस्थानी कहानियाँ तीन प्रमुख रूपों में मिलती है— (१) केवल गद्यमय रूप में (२) गद्य-पद्य-मिश्रित रूप में और (३) केवल पद्यरूप में। इस जमाने में भी यदि खोज की जाय तो हजारों-ग्रन्थ "वातों" के मिल सकते हैं, जिनमें उपरोक्त तीनों रूपों में कहानियाँ मिलेंगी।। गद्यात्मक कहानियों को 'वात' कहते हैं और पद्यात्मक कहानियों को 'गीत'। दूसरा रूप सदा से लोकप्रिय रहा है और हमारी समझ में वही राजस्थानी कहानी का सर्वोत्तम रूप है। 'कहवाट' की कहानी इन तीनों रूपों में हमें पृथक् २ हस्तलिखित पोथियों में देखने को मिली। इतना तो राजस्थानी कहानियों के रूपात्मक अंग के संबध में हुवा।

विषय भी कहानियों के अनेक मिलते हैं। प्रमुख विषय तो वीरता ही है, जिस पर अनुमानतः सौ में से पचास कहानियाँ लिखी मिलती हैं। परन्तु इसके अतिरिक्त प्रेम, भक्ति, स्वामिभक्ति, प्रजापालन, गोरक्षा, पातिव्रतधर्म और नीति के अनेक अंगों पर भी स्वच्छन्द रूप से कहानियाँ लिखी गई हैं। अपने पहले प्रयास में हमने केवल वीरता के मुख्य विषय को लेकर सात प्रख्यात ऐतिहासिक कहानियों का संकलन किया है। यदि ये राजस्थानी और हिन्दी जनता को रुचिकर हुई तो इतर विषयों, यथा धर्म, नीति आदि पर भी संकलन उपस्थित करेंगे।

सब से विचित्र बात जो राजस्थानी कहानी में देख पड़ती है वह है उसकी शैली की विलक्षण वैयक्तिकता। राजस्थानी कहानी की शैली राजस्थानी ही की है, उसकी समता दूसरी भाषाओं में ढूँढना निरर्थक है।

इस भावना को हम तब तक समझा नहीं सकते जब तक हिन्दी के पाठक स्वयं उस मौलिक रूप को देख न लें। यह गूँगे का गुड़ है जो वर्णनातीत है। परन्तु तो भी उस शैली की कुछ विशेषताओं का यहाँ उल्लेख कर देते हैं।

कहानी का पहला आवश्यक गुण है उसका मनोरंजक और चित्ताकर्षक होना। जब तक यह नहीं होता तब तक उसमें हृदय-ग्राहिता का गुण नहीं आता, जिसके बिना उसका कहानीपना असार्थक रहता है। राजस्थानी "वातों" की शैली मनोरंजकता के लिए अद्वितीय है। मनोरजकता के साथ २ प्रसादगुण कूट-कूट कर उनमें भरा रहता है। कहानी कहने और लिखने वाले राजस्थानी कवियों को सरस्वती की विशेष कृपा से कुछ ऐसा अभ्यास और प्रतिभा प्राप्त थी कि सरल से सरल भाषा में उत्तम से उत्तम स्वाभाविक और लोचभरे भावों को भर देते थे। एक शब्द का भी वृथा प्रयोग नहीं होने पाता था। भरती के शब्द और भावों को उन में ढूँढ़ना आकाश-कुसुम की तरह निरर्थक था। इतनी सूत्राकार सूक्ष्मता होते हुए भी कहानी की गति में वह मतवालापन, वह स्फूर्ति और वह सजीवता रहती थी कि उसकी समता का उदाहरण ढूँढ़ना कठिन है। भावभगी और भावुकताद्योतक चमत्कारों की वो राजस्थानी 'वात' एक तरगिणी है जिसमें असंख्य भाव-लहरियाँ किलोल और कलरव करती हुई अपने उद्दिष्ट पथ की ओर प्रवाहित होती रहती है। बीच बीच में अलंकृत भाषा की निराली छटा देखते ही बनती है। दृश्यों की प्रभावोत्पादकता बढ़ाने के लिए अथवा विशेष वस्तुओं और परिस्थितियों की पूरी जानकारी कराने के लिए कहानी-लेखक ऐसी मनोरंजक सूक्ष्मता के साथ उसके अंग प्रत्यंग उधेड़ कर दिखलाता है कि आँखों के सामने सजीव रूप में उस वस्तु अथवा दृश्य का जीता-जागता चित्र अपने रंग विरंगे वैचित्र्य के साथ नाचने लगता है। राजस्थान देश और समाज का

चित्र अपनी वैयक्तिक विशेषताओं के साथ इन कहानियों में देखने को मिलता है। परन्तु खेद इस बात का है कि वर्त्तमान काल में इस कहानी कहने और लिखने की रुचि में बड़ी भारी शिथिलता आ गई है और आशंका होती है कि मौलिक रूप में इन कहानियों की नये सिरे से रचना बहुत शीघ्र विलुप्त हो जायगी।

राजस्थानी बातों से उद्धृत करके भाषा और शैली के कुछ उदाहरण नीचे देते हैं।

वर्णनात्मक शैली का प्रसादपूर्ण चमत्कार जगदेव पँवार की 'वात' (कहानी) के प्रारंभ में देखिये—

(क) "मालवौ देश माँहि धारा नगरी। तठै पँवार उदियादीत राज करै। नै तिणरै राणियाँ दो, तिण माँहै पटराणी बाघेली। तिणरै कँवर रिणधवल हुवो। नै दूजी रांणी सोलंखिणी। तिका दुहागण। तिणरा कँवर को नाँव जगदेव दीधौ। साँवळ रंग, पिण ज्योतिधारी नै रिणधवल राजरो धणी।"

दृश्य चित्रित करने वाली सुपुष्ट मनोरंजक वर्णनशैली का भी नमूना दिया जाता है—

(ख) "रात घड़ी एक दो गई। तद डको सुणियो। तरै योगेसर जांणियो कोई सिरदार आवै छः। तिसै हाथीरी वीरघंट सुणी, तुररी सहनाई सुणी, घोड़ां की कळहळ सुणी। चराकां सौ-एक मूंढा आगै हूवां चँवर ढुळ'ताँ हाथी माथै बैठो सिरदार दीठो। तिसै कैइक असवार महिलाँ आया। तिसै फरास आय मैलाँ आगे चौक माँहै जाजम दुलीचा बिछाया, गिलमां बिछाई, तकिया लगाया। तिसै तेजसीजी गादी तकियाँ आय बैठा। जोगेसर तमासा देखै छः।"

(ग) "भाक फाटी। जोगेसर जागियो। देखै तो लोक फिरै छः

देवरै झालरां बाजै छः। जोगेसर संखनाद पूरै छः।"

जैसा कि ऊपर कह आये हैं 'वातों' के रूप में राजस्थान का प्राचीन इतिहास लिखा गया है, अतएव इन 'वातों' में ऐतिहासिक सामग्री बहुतायत से मिलती हैं। ख्यात की 'वातों' में और मनोरंजनार्थ रचित बातों में एक स्पष्ट अंतर यह होता है कि इनमें कल्पना की मात्रा अधिक रहती है। ख्यात को बातों में जहाँ तक होसका है ख्याततलेखक ने वशावलियों के क्रम से प्रत्येक व्यक्ति और वंश के जीवन काल की मुख्य बातों का यथार्थ वर्णन किया है। कहानी की बातों में किसी एक ऐतिहासिक कार्य को लेकर और उसमें कल्पना की पुट देकर मनोरंजक सामग्री उपस्थित की गई है। अतएव यद्यपि इन कहानियों की आधारभूत बातें ऐतिहासिक हैं, परन्तु कहानी के समस्त रूप को ऐतिहासिक तथ्य मान लेना भारी भूल होगी। कहानी एक कला है और उसका प्रधान उद्देश्य है मनोरंजक रूप में किसी प्रमुख व्यक्ति अथवा घटना के सम्बन्ध में आख्यान लिखकर सहृदय जनता का हृदय आकर्षित करना। ससार के सभी साहित्यों में जहाँ भी देखा जाय, क्या कहानी, क्या उपन्यास, नाटक, काव्य—सभी में कल्पनात्मक प्रसंगों द्वारा वास्तविक तथ्यों को एक नवीन रागात्मक रूप दे दिया जाता है। वही बात इन कहानियों में भी समझनी चाहिए। इस दृष्टि से यदि देखा जाय तो जगदेव पँवार की 'वात' में यद्यपि जगदेव और सिद्धराव सोलंकी ऐतिहासिक व्यक्ति हैं, और इतिहास से उनका एकत्रित होना सिद्ध भी होता है और एक जगह लिखा भी है—"जगदेव पँवार सिद्धराव सोलंखीरो चाकर। कंकाली देवी ने आपरो सीस दियौ।"—परन्तु तो भी जगदेव का भैरव के गण को द्वन्द्व-युद्ध में परास्त करना तथा दो बार शीश-दान करने को उद्यत होना अतिशयोक्तिपूर्ण कल्पना मात्र है। सम्भव है, जगदेव ने काम पड़ने

पर एक ही बार स्वामी की सेवामें शीशदान किया हो। इसी प्रकार वीरमदेव की कहानी में शाहजादी से उसका प्रेम, युद्ध के कारणरूप में बताया जाना और उस प्रेम की पुष्टि के लिए काशी-करौत वाली पूर्वजन्म की अन्तर्कथा का निर्माण,—ये बातें कवि-कल्पना की करामातें हैं। हाँ, ऐतिहासिक दृष्टि से इतना सत्य है कि जालौर के स्वामी सोनगरा राजपूत, राव कान्हड़दे और उसके पुत्र वीरमदेव ने बड़ी वीरता-पूर्वक बादशाह की सेना के विरुद्ध गढ़ की रक्षा की थी। इसी प्रकार अन्य कहानियों में यद्यपि आधारभूत इतिवृत्त (Fact) ऐतिहासिक ही है परन्तु कल्पनाओं का प्रचुर परिमाण में नीर-क्षीर की तरह संमिश्रण होने से यह नहीं कहा जा सकता है कि यहाँ तक तो शुद्ध इतिहास है और इतना अंश काल्पनिक है। कहानी के लिए ऐसा वैज्ञानिक विश्लेषण करने की आवश्यकता भी नहीं है। कहानी तभी तक कहानी रहती है जब तक वह हमारा मनोरंजन करती है, हमे उच्छ्वसित करती है, हमारे हृदय में नई नई भावनाएँ और स्फूर्त्तियों को जागृत करके हमें सजीवित करती है। जब हम कहानी में ऐतिहासिक तथ्य को ढूँढ़ने लग जाँयगे उस समय स्वर्ग की छाया की तरह वह विचित्रता विलीन हो जायगी। तथापि इन कहानियों के सम्बन्ध में इतिहास ग्रथों तथा इतर प्रमाणों से जो कुछ सूचना हमको उपलब्ध हुई है, उसे पाठकों के सुभीते के लिए हमने टिप्पणियों में देदी है।

वर्त्तमान सकलन में आई हुई कहानियाँ लगभग १५० से २०० वर्ष पुरानी हस्तलिखित पोथियों में से चुनकर ली गई हैं। प्रायः सभी कहानियाँ प्राचीन हैं और परम्परा द्वारा राजस्थान में ख्यातिप्राप्त हैं। पोथियों में लिपिबद्ध होने के समय से अनुमानतः १०० वर्ष पुरानी तो ये कहानियाँ अवश्य होनी चाहिएँ। इस अनुमान से इन कहानियों का निर्माण-काल कम से कम २५० वर्ष पूर्व समझना चाहिए।

यद्यपि राजस्थान के भिन्न भिन्न प्रान्तों की बोलचाल की भाषा में सदा से थोड़ा-बहुत भेद चला आया है और अब भी है, परन्तु मारवाड़ (जोधपुर) प्रान्त की भाषा गद्य-रचना के लिए आदर्श (Standard) मानी जाती रही है। इसका कारण उसका स्वाभाविक माधुर्य्य, प्रसाद पूर्ण शैली और व्यापक शब्द-शक्ति हैं। इसी जोधपुरी भाषा में इस संग्रह की अधिकांश कहानियाँ लिखी हुई हैं।

मूल-पुस्तकों से कहानियों की प्रतिलिपि बनाते समय जहाँ तक हो सका है, केवल सुधार करने की दृष्टि से भाषा का रूपान्तर नहीं किया गया है। जहाँ जहाँ पोथी-लेखक की ग़लती से लिखने की अशुद्धियाँ रह गई हैं, उनको स्थान स्थान पर ठीक कर दिया गया है।

कहानियों के चुनाव और हस्तलिखित पोथियों की प्राप्ति में मुझे अपने अभिन्न सुहृद्वर श्री० ठाकुर रामसिंह एम० ए० तथा श्री० नरोत्तमदास स्वामी एम० ए० की बहुमूल्य सम्मति और सहायता मिली है। एतदर्थ मैं उनका अभारी हूँ।

जैसा कि इस वक्तव्य के प्रारंभ मे कह चुका हूँ, यह प्रयास श्री बिड़लाजी की प्रेरणा से इस उद्येश्य को दृष्टि मे रख कर किया गया है कि राजस्थानी जनता को अपने गौरवपूर्ण साहित्य का अनुशीलन करने का मौक़ा मिले और हिन्दी जनता को प्राचीन राजस्थानी संस्कृति के आन्तरिक रूप से कुछ जानकारी हो जाय। अतएव इस पुस्तक द्वारा आंशिक रूप में भी यदि मैं इस उद्देश्य को पूर्ण करने में सफल हुवा तो अपने आप को कृतकृत्य समझूँगा।

पिलाणी,
१ जनवरी १९३४

सूर्यकरण पारीक

जगदेव पँवार
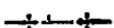
मालवौ देस मांहे धार नगरी। तठै पँवार उदयादित राज करै, नै तिणरे राणियां दो। तिण मांहे पटराणी बाघेली। तिणरे कँवर रिणधवल हुवौ। नै दूजी राणी सोलंखणी, तिका दुहागण[1]। तिणरै कँवररो नाम जगदेव दीधो। सांवलै रंग, पिण ज्योतिधारी, नै रिणधवल राजरो धणी। यों करतां बरस १२ मांहे जगदेव हुवौ। तठै राजा उदयादित कामदारांनै कह्यौ, सोलंखणीरै बेटौ छै कै नहीं। तदै राजा कह्यौ संसार मांहे बेटा समान काई वस्त नहीं। तदै कामदार बोल्या छै, पिण हजूर दरबार कदेई आवै नहीं। तदै राजा खवास[2] मेलिह जगदेव-नै तेड़ायो[3]। तदै जगदेव दरबार आयो, तिको वो साढुक[4] रो वागो पहिरणै छै, रुपीया १) री पाघ माथै छै, कानां हाथां मांहे कड़ा, सु इसे सलूकसूं[5] मुजरो कियो। राजा छातीसू लगाय मिलियौ, कनै बैसाणियो नै पोसाष देखिनै कह्यौ, बेटा इसा कपड़ा क्यूं। तदै कँवर कह्यौ, म्हांरी तपस्या मांहे खोट छै, महाराजरै घरै जनम पायो, पिण महाराजरै माल देस मांहे सीर[6] थोड़ो घलायो, तिणसूं माजीनै गांव

---

१ दुर्भाग्यवाली, जिस स्त्रीको उसके पतिने छोड़ रखा हो। २ नाई, चाकर। ३ बुलवाया। ४ एक मोटा सस्ता कपड़ा। ५ ढंग। ६ भाग।

१ आप दीधो छै। तिणरो हासल माफक[१] ही ज आवे छै । नै माँई जीरे (सौतेली मा के) हाथ राजरो काम छै। तिणसू गांव नांवै। मोटो, हासल छोटो दीधो छै और खांणे पेरणै दासदासी नै रोजगार रथ नै वहलिया अै समाचार छै, और सगला एकै गांवरै हासलमें निभै छै। तरै कपड़ा तो हासल[२] सारू छै। राजा इसौ सांभलिनै कह्यौ, रुपया २) हमेसा थांरै, रुपयो १) थांरै थालीरो नै रुपया १७) हाथ-खरचनै लीयां जावो। राजा कामदारांनै कह्यौ, हमेसां रुपया २) दीयां जाज्यो। तरै जगदेव अरज कीधी, महाराज तो बगसीस कीधी नै मैं पाई, पिण श्री माईजी[३] घणी मया[४] फुरमावै छै, निभै नहीं। ज्यू लिखियो[५] छै त्यू होसी। तरै राजा खजानची खनैसू थैली १ मंगाय दीधी नै कह्यौ, कपड़ा पोसाख आछी बणावो नै गाढ़ा सलूक माहे रहो। तद कंवरनै सीख दीधी। कंवर आपरी मानै आणि थैली दीधी नै सगली हकीकत कही। तिसै केइक बाघेलीरा आदमी बैठा था, देखै था, बात सुणै था। त्यां जाय नै कह्यौ, आज जगदेवसू महाराजा घणी मया कीधी नै रोजीनै रुपया २) दिराया नै थैली १ दीधी। आ बात सुण पगांरी झाल माथै गई[६]। तरै रांणी खोजाँनै[७] मेल्हि राजानै मांहे बुलायो, मुजरो कियो, सिंहासण विराजिया। तरै राणी आख्यां लाल करि कह्यौ, आज दुहागणरा बेटानै कासू दीधो। तरै राजा

१ ठीक ठीक ही, अर्थात् थोड़ा। २ पैदा। ३ सौतेली माताजी। ४ कृपा। ५ विधाता द्वारा भाग्य में लिखा है। ६ पगां री झाल माथै गई (मुहा०)=क्रोध की ज्वाला पैरों से सिरतक दौड़ गई, अत्यन्त क्रुद्ध हुई। ७ दूतों को।

कह्यौ, सोळ खणी दोहागण छै, पिण बैटो तो न छै। रिणधवळ तो पाटवी टीकायत छै, पिण जगदेव माहरी निजर आछो आयो, सखरो[१] रजपूत होसी। तरै बाघेली कह्यो, ऊ दई-मारयो कालियो डील मांहे छै, जिणरै करमांमांहे[२] काळा अख्खर छै, थैली डरी मंगावो। तरै राजा कह्यौ, ओ तो गुनो म्हांनै बगसो। अबै थांनै पूछि नै क्यू देस्यां।

तिसै मांडवगढ (मांडू) राजा, तिणरी चाकरी उदियादित करै छै। त्यांरा कागद बुलावणरा उतावळरा आया। तरै राजा तो उलग[३] नै चढ्या, कंवर दोनूं लारै राख्या। अबै जगदेवरी ऊठि[४] बुलावणरी सबरी[५] दीधी। तिणसूं लोक माहे बास[६] फूटी, नै दरबार तो रिणधवळ करै। जगदेव तो घर माहे रहास[७] छै तठै हीज रहै। तिसै बरस २ बीता। तठै गौड़ देसरो गंभीर राजा गोड़। तिण रा नाळेर[८] जगदेवनै आयो। हाथी १ घोड़ा ६ सोना रूपासूं मढिया नाळेर देनै प्रोहित कामदार धार मेल्हिया। तिके धार आया। तद सगळांने खबर हुई, गोड़ांरा नाळेर आया। तदि डेरो दिरायो वळरो[९] चारारौ जावतो करायौ। अबै प्रोहित व्यास कांमदार मिलि पूछियो, नाळेर बंदावो[१०]। तरै गोड़ांरो प्रोहित बोलियो, म्हांनै माहरै राजा जगदेव कंवरनै नाळेर देणो कह्यो छै। तिको कंवर जगदेवने पाट बैसाणो ज्युं तिलक करां अर नाळेर द्यां। तरै इतरो सांभळि

१ अच्छा। २ कर्म में, भाग्य में। ३ विदेश में सेवार्थ। ४ की ओर। ५ मनाही। ६ खबर फैल गई। ७ रहवास, रहने का स्थान। ८ विवाह के प्रस्ताव स्वरूप नारियल। ९ भोजन। १० स्वीकार करो, ग्रहण करो।

अबोला[१] रह्या। परा ऊठया[२]। मांहे बाघेलीरो डर घणो। सघला[३] जाय बाघेलीनै कह्यौ, नाळेर तो जगवदेनै कहे छै। तरै बाघेली बोली नै रीस कीधी नै कह्यो दई-मार्‌यांका कांन फूटा, म्हारा बेटाने नाळेर आया छै, जावो उण दई-मार्‌यांनै कहै तोही रिणधवळनै हरि भांति करि दिरावज्यो जी, नहीं तर थांहरी तो चाकरी करूंली। तरै प्रोहित कामदारां गोड़ प्रोहित कामदारांने कै रुपया देनै राजी कीधा नै कह्यो, जगदेव तो दुहागणरो छै, जिणरी मां पटराणी तिणने नाळेर द्यो। तरै पईसारा मार्‌या रिणधवळनै नाळेर वंदाया, तिलक कीयो। नोवत बाजी। तरै प्रोहित कह्यौ,एक वेळा जगदेव म्हांने आँख्यां देखाळो। तरै बाघेलीसू मालुम करी। जगदेवनें ल्याया। प्रोहित मंत्रवी दीठो तरै माथो घूणीयो[४] ज्योतिधारी कळाधारी उद्योतवंत[५] दीसै छै, पिण लेख ह्वै जिणसू हीज है। अबै सीख मांगी। तरै सिरपाव दे नै विदा कीया। तिके आपरे गोडावाटी आया। राजा गंभीरसूं मिलिया। नाळेर रिणधवळ नै दीधो। राजरो धणी छै पिण ज्योति कांति छः, तितो जगदेवरी होड न करै। गैहणो पोसाख नहीं तो पिण रिणधवळ सूरज आगै चंद्रमा दीसै त्यू दीसै थो। पिण लेखसूं[६] जोर नहीं। तरै राजा कह्यौ, घणा चूका, दीधो बिणदीधो[७] हुवै नहीं नै दूजी बाई काई नहीं। तरै जोसी तेड़िनै लेगन लिखाय धार मेलियौ नै दूजौ कामदारांनै कागद दीयो, तिणमें लिख्यो, जगदेवजीनै जांन साथै ल्यावज्यो नै उण

---

१ चुपचाप। २ उठ खड़े हुए। ३ सभी। ४ धुना, सिर हिलाया। ५ जाज्वल्यमान। ६ विधाता के लेख। ७ दिया हुआ बिना दिया हुआ नहीं हो सकता।

बिगर आया तो साहो होसी नहीं। आदमी लगन लेनै धार आया। कागद कामदाररे हाथ दीधा। कागद बांचि माँहे बाघेलीनै मेल्या। तरै बाघेली कह्यो दई-मारच्या कालियाने ही ले जावो। जांनरी तयारी कीधी। तरे जगदेवनै कहायो, कंवरजी जाननै तयारी कीज्यो। जगदेव कहायो, गैणो, पोसाख, घोड़ो, राजारो लाजमो नहीं नै पाळो[1] तो इसे लवेस[2] (लिबास) चालणी आवै नहीं। तरै कोठार मांहिसूं कड़ा, मोती कंठी, दुगदुगी[3] जनेऊ, मोतियांरी माळा दे मेल्या नै चाकर घणा ही छै। इसो भांति जलूस करि बीजारो तो क्यूं कहणो नहीं, असवार हजार २ सूं चढिया, तिका चालतां-चालतां टोडै टूंक महिलाण[4] हुवा।

टूंक चावड़ो राव राज नै कंवर बीज नांमै राज करै छै। तिको राजाराज तो आख्यां संजम[5] छै, पिण हीयारा नेत्र खुल्या छै। आख्यां देखतांसूं घणो सूझै[6]। तिणरे बेटी एक नाम वीरमती बडकंवार[7] छै। तिणरो साहो करणनै सगो सोझता था। तिसै जान आई। तिसै राजा राजजी कंवर बीजनै कह्यौ, जगदेव कंवर छै तिको निपट खरो। बीज हुकम प्रमांण कियो, देस रजपूत छै, तिणनै काल्हे फेरा दिरावस्यां। जान मांहे कंवर बीजजी जुहार करणनै आया नें कह्यो, विहाणे[8] गोठ आरोगनै चढिज्यो। घणा हठ-सूं गोठ मानी। कोट आय जोसी तेड़िनै लगन बूझियो। तरै प्रभाते

---

१ पैदल। २ लिबास, पहनावा। ३ गहना विशेष। ४ पड़ाव, ठहराव। ५ अधा। ६ चर्मचक्षुओं की अपेक्षा आन्तरिक चक्षु से अधिक दिखाई देता था। ७ ज्येष्ठ पुत्री। ८ सवेरे।

गोधूलकरो लगन छै। सगली सजाई कीधी। वीजे दिन वीरमती-ने पीठी[1] कराई, खेहटियो विनायक[2] थाप्यो। तीजे पोर गोठ जीमण-ने आया। आथमण[3] सूधा जीम्या नै चलू भरनै उठै तिसै लगन वेला हुई नै प्रोहित कांमदारांने कह्यो, कंवर जगदेवजीने म्हारी वेटी दीधी। तरै नालेर घोड़ा ४ सूं झलायो[4]। नै कह्यो तोरण वांदि[5] चँवरी पधारो। कांमदारां ही दीठो वडो काम हुवो। कोई थेट गोडांरे गयां आंटो[6] उठतो, आरे करि[7] तोरण वांदि चंवरी मांय सिधाया। गोधूलकियांरा फेरा लीया। भात हुवा[8]। हाथी १, घोड़ा २५, दोवड़ी दात[9] दीधी, दासी ६ दीधी। प्रभात हुवां सीख मांगी। साहै-वंध्यो कांम[10]। तरै चावड़ी तो पीहर हीज रही। कह्यो, पाछा फिरतां धार ले जावस्यां नै जांन चढ़ी। तिका गोडांरे जगदेव परण्यारी खबर हुई। राजा गंभीर जगदेवनै देखि प्रोहित विठागरां[11] सूं घणो वेराजी हुवो, पिण लेख-वंधी वात। अब गोड़ भात दिया। दोवड़ी तात दीधी, घोड़ा २५ हाथी १ दीधो, दासी ११ दीनी। देनै सीख दीनी। तिके टोडै आया। जरै चावड़ीनै रथमें वैसाण साथे दीधी। नगर आयां वाघेलीनै जगदेव परणियांरी खबर हुई नै मन मांहे घणो दुख पायो। तै कह्यो, इण दईमार्‍या कालियानै हरकोई रावजी वेटी दै, तिको कासूं देखनै दै छै। पछै सामेलो[12]

---

१ उवटन। २ गणपतिकी मूर्त्ति। ३ सध्या तक। ४ पकड़ाया। ५ तोरण मारनेकी प्रथा करके। ६ झगड़ा खड़ा होता। ७ ऐसा जानकर। ८ भोजन हुए। ९ दुहरे दहेज। १० लग्नके अनुसार काम। ११ धोखे-वाजों। १२ अगवानी, स्वागत, सामनेसे लेना।

कीधो। तठै गोड़ नै चावड़ी सासुवांरै पगे लागी। देवतांरी जात[1] कीधी। मास पछै गोड़-चावड़ा आया। आपरी बेटीनै ले गया। पीहर गई तदै दायजो दीधो थो, जितरो चावड़ी रे साथे मिलियौ थो, तिको जगदेव राख्यो।

हिवै वरस १८ मांहि जगदेव हुवौ। तठै राजा उदयादित उलगसूं[2] पधारिया। कँवर रिणधवल मोटी असवारी कर साम्हो गयो। पगे लागो। मूंता[3] सेठ पगे लागा। तिणां मांहि सिगलांरा मोला[4]-मुजरा लीया, पिण जगदेव मुजरै नायौ। तिसै घणा उछाह होतां राजा सिंहासण दरीखाने[5] विराजिया नै मुहतासूँ फुरमायो, जगदेव कँवर कठै छै। तरै कह्यो, सोलंखणीजीरै हजूर होसी। तद खवास मेलि तेड़ायो। तरै जगदेव सादी पोसाख पहिरियां पगे लागो। तरै राजा उठि छातीसूं भिड़ि मिलियो, माथै हाथ दीया, निपट नैडो बैसाणियो नै राजा पूछियो, कँवर, उणहीज पोसाख छो। तरै कँवर अरज कीधी, महाराजा, आप असवार हुवां पछै रोजीनारो थाली नै हाथ-खरचरो रुपया दोय फुरमाया चढिया[6] था, तिके मांहि जी कबूलिया नहीं, तिणरे हुकम बिनां खांनसमां न दीया। आपसूं मालूम हीज छै। हासल पैदास बिनां लवाजमा कुंकर[7] हुवै। जदि राजा कड़ा, मोती कंठसरी,[8] दुगदुगी, जनेऊ, हथ-सांकलां, सिरपेच, कड़ीयां री तरवार, ढाल, कटारौ, खंजर, तरगस, बांण, सर्व

१ देवयात्रा। २ परदेश की सेवा। ३ मुहता, मन्त्री। ४ मिलना-भेंटना, अभिवादन-स्वागत। ५ दरबार में। ६ चढ़े हुए थे, बाकी थे। ७ क्योंकर। ८ कंठमाला।

वगसीया। तद जगदेव मुजरो करि-करि लीधा। पिण दोनूं हाथ जोड़ि अर्ज कीवी, महाराजा, आप इनायत कीधी तिके पाया, पिण मांईजी म्हांसू घणी महरबानी फुरमावे छै नै आप बाघेलीजीरे महल पधारिया तरै सगली ट्रूमां (गहणो) मंगवाणी पड़सी, तिणसूं म्हारी रहवास ले गयां पछै मेलस्यूं नहीं, तिणसूं औ खालसै रैहणरो हुकम हुवै। तरै राजा कह्यौ, बाघेली कहै पिण म्हारे तो रिणधवल नै थे सारिषा कंवर छो। नै वलै तोनै कुं सरसो[१] गिणती मांहे गिणूं छूं। मैं म्हारो माल दीधो छै नै थारी असवारीरे वास्ते म्हारी असवारी-रो खासो[२] घोड़ौ दीधो। तरै कंवर मुजरो कीधो नै राजा सीख दीधी नै कह्यो, सांझरे दरबार वेगा आवज्यो। इसौ कहि सीष दीधी। घोड़ो खालसारी पायगारी[३] जायगा राख्यो। सोलंखणीसूं मुजरो कियो। इनायत वस्तां थी तिकी देखाई। तरै मा कह्यौ, वेटा, बाघेली आगे रह्यां हीज भरोसो। तिसै खोजां[४] नाजरां[५] दोड़ि बाघेलीसूं कह्यो, आज महाराजा खनै थो जितरौ सगलो जगदेवनै दीधो और असवारी रो पाटवी घोड़ौ बगसियो। इतरो सुणतसमो हिया मांहि लाय[६] लागी नै कह्यौ, महाराजा जनाने पधारीजे, रसोड़ो तयार हुवो छै, नै महारानी बाघेलीजी दांतण कियां विना विराजिया छै। पहिली महाराजारी सवारीरो दरसण कर आरोगे था नै आज धन दिन धन घड़ी पोहर महाराज पधारीया तिको दीदार[७] करि दांतण फाड़सी। इतरो राजा सांभलि दरबार वहोड़ि[८] मांहे पधारिया।

---

१ सदृश। २ ख़ास। ३ पायगाह, घोड़ों का अस्तबल। ४ दूतों ने। ५ नपुंसक कंचुकियों ने। ६ ज्वाला, अग्नि। ७ दर्शन। ८ समाप्त करके।

मुजरो करि निछरावळ हुई। सिंघासण विराजिया। तिसै वाघेली कह्यो—ज्वारीं सूरति ऊपरां घोळी जावो[1], पुखता हुवा[2], तिणसूं गहणांरो मोह छोडियो, पिण देसोत[3] कदेही पुखता नहीं। राजा कह्यो—गहणा तो था, पिण कंवर जगदेवनै अडोळो[4] दीठो जद गहणा बगसिया। इतरो सुणतसमो राणी बोली,' उंण काळूया दई-मारयाकै यूंहीज बण आई छै, गैहणा तो दोवडा[5] था, जांन चढ़तां कोठारसूं दिया था। सरब गैहणा तोडै चावड़ां पिण दीधा। सो महाराजा बिणनै समूधा[6] दीधा नै म्हारा बेटानै एक ही रीझ[7] दीधी नहीं, तिको आधा गहणा मंगवाय रिणधवळनै बगसो। तरै राजा कह्यौ, रीझ गरीब दै तिकोई मंगावै नहीं, तो पृथ्वीरा धणी राजा। और कंवर दोनूं सारीखा छै, मंगावणी नावै। तरै राणी कह्यो कड़ियांरी तरवार, पाटवी घोड़ो बडा कंवर पाटवी राखै, तिकै मंगायां दांतण फाड़स्यूं। राजा दीठो, वैरांरा हठ भूंडा[8]। तदि नाजरनै मेलि कहायो, बेटा, तनै निपट सखरी बीजी देस्यूं, तरवार दीधी तिका उरी मेलज्यो[9] नै मांनैं चैन चाहै तो इण वारां हठ मतां करिज्यो। नाजर आयर कंवर सूं अरज कीधी। जरै जगदेव तांमस[10] खायनै दीधी। जगदेव कह्यौ, जो लड़ां-भिड़ां तो कपूत कहावां छां, नै मूंछा आई। रजपूतरा बेटा छां। कठैक

---

१ न्यौछावर होती हूँ। २ विश्रब्ध, प्रतिष्ठित होने पर। ३ देशपति, राजा। ४ आभूषण रहित। ५ दुहरे। ६ उसको सभी। ७ प्रसन्नता से दिया हुआ पुरस्कार। ८ औरतों का हठ बुरा होता है। ९ वापिस भेज देना। १० क्रोध करके।

जाय वाजरी कढावणी१। यूं कह्यौ छैः—

दूहा

चंगै माड़ू२ घर रह्यॉ ए तीन अवगुण होय।
कपड़ा फाटै, रिण३ वधै, नांम न जांणै कोय॥
जोवन दरव४ न खट्टीया५ ज्यां परदेसां जाय।
गमीया६ यूंही दीहड़ा७ मिनख-जमारै८ आय॥

तिणसूं माजी हुकम द्यो कठै कै करम पतवाणां९। पायगासूं घोड़ो मंगावी खजानांसूं आपहीज खोलि थेली दो मोहरांरी लीधी। नैं हथियार वांधि मांसूं मुजरो करि रीस मांहि ज चढिया। तिकै पाथरै तोडै आया, वाग मांहि डेरो दीयो। घोड़ो ऊभो चोकड़ो१० चावै छै। कंवर चंवेली विड़ां११ मांहि जीणपोस विछाय वैठा छै। ढाल छाती आगै दे झोला१२ दै छै। सहिर मांहै, जाणै छै, दिन आथमिया१३ जास्यां। पछै दिन दो चार रहि आघा सिधावस्यां१४। तिसैं चावड़ी वीरमती सहेल्यांरा साथसूं चकडोल१५ वैसनै आप रो वाग छै तठै आई। परण्यांनै वरस ७ हुआ छै। तिको वाग मांहि वंगलो छै जठै विछायत हुई। आप वैठो छै। वाग मांहि माली धुरा-धुर१६ मरद रापियो न छै। पोलिया खोजा पोली वैठा छै। तिसै

---

१ जीविकोपार्जन करना। २ चंगे, स्वस्थ पुरुष के। ३ ऋण, कर्जा। ४ द्रव्य, धन। ५ इकट्ठा किया। ६ विताये। ७ दिन। ८ जीवन। ९ कर्म-परीक्षा करूँ। १० घोड़े के मुँह में लगाम की कड़ियाँ। ११ चमेली के वृक्ष-कुंज में। १२ झूल रही है। १३ अस्त होने पर। १४ चला जाऊँगा। १५ पालकी। १६ तक भी।

दासी फूल लेती-लेती असवार दीठो। घोड़ो रुपया हजार दो-तीन रे मोलरो दीसे छ। पिलांणरी साजत ऊंची दीठी। तरै छानैछै[1] विड़ाँ माँहे दीठा, बाइजीरै बररी सवी[2] दीसे छै। नाकरी डांडी[3], आंख्यां, निलाड़[4] डील रोमछर[5] देखि सही कंवरजी ही छै। तरै दौड़न आय कह्यो, बाईजी, बधाई पावूं, बाईजी सिलामत उगणीस विस्वा[6] तो श्री श्रीमहाराज कुंवरजी छै। तरै चावड़ी कह्यो, पर-पुरसरो मुंह देखूं नहीं। पिण तूं डाही[7] समझावार छै, तिणसूं आवं छूं। बीड़ारी ऊट[8] देनै देखै तो कंवरजी ही छै। तदि चावड़ी जाय मुजरो करि हाथ जोड़नै कह्या, धन दिन धन घड़ी धन वेला, भलांही श्री सूरजजी ऊगो, आज श्री प्रीतमजी रो दरसण पायो, श्री कंवर जी पधारिया। पिण साथ कठै। इकेला हीज पधारिया, तिणरो विचार कासूं। तरै कंवर सगली हकीकत कही नै हूं चाकरी करण-नै नीकलियो छूं। कोई मोटो राजा, तिणरी उलग[9] करण सारू निकल्यो छूं। थे कठेही वात प्रगट करो मती। तिसै दासी दोड़ि दरबार जाय बधाई दीधी, जंवाई पधार्या छै। सैंदाना[10] सरू हुआ, बधाई वांटी, बधावा बांटण लागा। कंवर पाल़ हीज आय मिलिया। चावड़ी दरबार आई। कंवर बीज जगदेवनै ले दरबार पधारिया। राजाजीसूं जुहार कीयो। दिन पाँच रहि सीख मांगी। तरै राजा कह्यो ओ दरबार रावलो[11] हीज छै, अठै उठै एकही ज विचार छै। राज

---

१ छिप लुक कर। २ आकृति, मूर्त्ति। ३ नाक की डंडी। ४ ललाट। ५ शरीर की रोमावलि। ६ बीस में से उन्नीसवाँ अंश, सचमुच। ७ चतुर। ८ ओट। ९ सेवा। १० स्वागत के वाद्य। ११ आपका ही।

अठै हीज रहो। तरै जगदेवजी कह्यो, इण वातरो हठ मत करो, इकेलो एक वार परदेस जायलै ताला[1] देखणा छै। तरै जोरावरीसू हांकारो कहायो। रात पड़िया चावड़ीरै महिल सिधाया, सीख मांगी। तिसै चावड़ी कह्यो, हूं तो कंवरजीरी चाकरी मांहि रहिस्यू, दासी वंदगी करस्यू। जगदेव कह्यो, हूं एकलो ही जास्यूं, थानै वेगा ही वुलावस्यू। चावड़ी कह्यो देहीरो छांहड़ो[2] जुदी देखावो देहसू अलगी[3] रहै तो मोने अठै रहणरो हुक्म करो। तरै चावड़ीरो वच आरै कीधो[4]। दोई घोड़ा पिलांण करायो। वणा जडावरा[5] हलका[6] सोना माहे जड़िया लीधा। मुक्नो[7] चावड़ीनै पहिरायो। जगदेव जी असवार हुवै तिण पहिली चावड़ी आंण ऊभी रही। थेली मोहरां री पाहुरां[8] मांहि घाली। तिसै कंवर वीजजी असवार तीन सौ सू पोंचावण चाल्या। चावड़ी मां-वापसूं मिली। धाय धावड़[9] सहेली ख्वाससूं मिली। तरै सासू तिलक काढ़िनै नालेर देनै चावड़ीरी भोलावण जगदेवजीने दीधी। जुहार करि आसीस लेनै राजा राजजीसूं मुजरो करि असवार हुवा। तिके सहिरसूं कोस एक आया तरै साथरां[10] पूछियो, कंवरजी, घरां पधारो तो ओ मारग छै। तरै जगदेवजी कह्यो, पाटण सिद्धराव जैसिघदेव सोलंखीरी चाकरी जास्यां। इलरो कहि सूधो मारग छै तिको पूछियो। तरै एकै कह्यो, पाधरै रस्तै टोकड़ी अठासूं कोस १२ छै नै निरभै राह

१ मौका, ढग। २ छाया। ३ अलग। ४ स्वीकार किया। ५ जडाऊ। ६ घोड़े का जड़ाऊ साज। ७ परदा, बुर्का। ८ जीन में लगे हुए थैले। ९ बड़ी धाय। १० साथ के लोगों ने।

पधारस्यो तो कोस ३० ऊपरां छै, डूंगर दोला[1] फिरनै सिधारस्यो। तरै जगदेवजी कह्यौ, इतरी ॲवलाई[2] खावां सो घोड़ासूं बैर नै छै। तरै कह्यौ, पाधरी राह नाहरी-नाहर विचै रहै छै, तिणां गांव ५-७ उजाड़ कीधा छै। के देवंसी नाहर छै, नगारा ढोल देनै राजा सिकार चढ़ी, नाहर-नाहरीरो एक रूं वढीयो नहीं[3]। तिणरा डरसूं मारग बंद हुवौ छै। तिणनै बरस ८-६ हुया छै। घास ऊभता दोय बध रह्या छै। बड़ी झंगी[4] मच गई छै, तिणसूं मारग कोस २२ री ॲवलाई खायनै लोक जायै छै। तिसूं निरभै राह पधारीजै। जगदेवजी कंवर वीजजीसूं जुहार करि सीख देनै पाधरे मारग खड़िया[5]। हठ तो वीजजी घणो ही कीधो, पिण पाधरे राह चाल्या नै कह्यौ, गंडक-गंडकड़ीरा[6] डरतां ॲवलाई खावणी आवै नही। हिवै वेहूं[7] सजोड़ै[8] निरभै थकां घोड़ा खड़ियां जायै छै। तरै चावड़ीनै कह्यौ, डावी जीमणी[9] घास माहै निजर राखतां जावो। यूं करतां कोस ६ पोंहच्या। आगै मारगरै सैं-बिचै[10] नाहरी वैठी छै। पीछे पांवडा १०० ऊपरा नाहर बैठ्यो छै, तिको चावड़ीरै निजर आयौ। तरै कह्यो, महाराज कंवरजी, सावज[11] बैठ्यो छै। तरै जगदेवजी ल्हेस[12] काढि चिलै आंणी[13] नै कह्यो, नाहरी, तूं रांडरी जात छै,

---

१ पर्वत के चारों ओर। २ घूम, चक्कर। ३ रोम, एक (बाल) भी बांका न हुआ। ४ बड़ी जंगी, बहुत बड़ी बीहड़। ५ चले। ६ कुत्ता—कुतिया। ७ दोनों। ८ सपत्नीक। ६ दांये, बांये। १० ठीक बीच में। ११ जंगली जानवर, सिंह (श्वापद)। १२ शेल, भाला। १३ चिल्ले पर चढ़ाया, वार करने के ढंग से सम्हाला।

तूं हत्या मती चाढे,[१] मारगसूं उठिनै डावी जीमणी टलि बैसि।' इतरो नाहरी सबद सुणितसमी[२] पूंछ पटकि धरतासूं मूंडा लगाय उछलनैं पड़ै, तिसैं ल्हैस छोडी। तिका सामी टीकै[३] लागी नै लद्वारा[४] कांनी पार उतरी। नाहरी उछली नै पांवडा १० ऊपरां पड़ी। जीव निकल गयो। आघा चाल्या तो नाहर बैठ्यो छै। ल्हैस चिल्है आणि कह्यौ, डावो जीमणो होयजा नहीं तो गंडकड़ी मिलैलो[५]। तिसै नाहर पूंछि पछाटि धरती मूंढो दे नै उछल्यौ। तिसै ल्हेसरी दीधी। तिको लागी टीकै माहै नै मूलद्वारै नीकली। तिका पांवडा २० ऊपरा पड़ी। तरै जगदेव कह्यौ, बापड़ा[६] गरीब जिनावर मार्या, हत्या चढ़ी। तद चावड़ी कह्यो, महाराजकंवार, राजांरी सिकार छै।

यों बातां करतां टोकड़ीरै तलाव आया। वड़ पीपल घणा छै; जल लहर्‌या ल्यै छै। तठै जाय घोड़ासूं उतरिया,हथियार खोल्या,गंगाजली[७] बादलो जलसूं भरि लाया। घोडांरा लालीया[८] छांट्या। आप आख्यां छांटी, कानांरा गोख[९] छांट्या। चावड़ी मुख धोयो, ठंढाई कीधी। तरै लारै बीजजीसूं बात मालूम कीधी, कंवर जगदेवजी पाधरै मारग खड़िया। तरै राजजी रीस कीधी नै कह्यौ, असवार २५ सिलह बगतरिया होय वंदूखां तीर बांधि करि जावो, लाभै जठै लाकड़ी देनैं आवज्यो। धायौ[१०] नाहर छै, दोय आदमी दोय घोड़ा भखनै पांणीरी तीर सूतो हुसी। धाया नाहर छै थानै डर कोई नहीं। तरै असवारां

१ लगावे। २ सुनते ही। ३ ललाट में। ४ गुदा-द्वार। ५ कुतिया (सिहनी) की गति को पावेगा। ६ बेचारे। ७ झारी। ८ फेन, झाग, दूर किये। ९ कानों के गवाक्ष (विवर)। १० तृप्त हुवा, पेट भरा हुआ।

चढतां सगला साथसूं राम-राम करि रोजगार-लूणरी तासीर चढियो[1] जोइजै, पिण पाछा आवणरी कांई आस न छै। चढिया डरता २ जायै छै। आगे नाहरी नाहर पड़िया दीठा, मूवा। ल्हेसां दोनूं ही उरी लीधी। राजी होय लारां दोड़िया। असवारां जाय जगदेवजी सूं मुजरो कीधो। चावड़ी ऊलख्या,[2] घररा राजपूत दीठा। पाछे मेलिया। तिके समाचार कह्या नै रजपूतां कह्यौ, महाराजकंवरजी पृथ्वीरो गायाँरो धरम लीधो। कालरा वरखा[3] किणीं राजा ठाकुरां सूं मूवा नहीं। इसौ पृथ्वीरो दुख राज विना कुण काटै। इतरौ सुणतसमो रजपूतांने सीख दीधी नै कंवर दिन आथमियै सहिर मांहे आय खाणां-दाणांरी कीधी नै टको १ देयनै घोडाँ रै खुररो करायो। रातब दाणों दिरायो। हाटां मांहे डेरो कीयो। रुपिया ४ लागा। यों मजलांरा मजलां चालतां २ पाटण आया। सहसलिंग[4] तलाव सिद्धराव जैसिंघदेजी करायो छै, तिणरी पाल ऊपरां मोटा बड़ छै, तिण हेठे घोड़ासूं उतरिया। घोड़ांने टहलाया, लोयलियां छांटिया, पाणी दिखाइयो। घोड़ा कायजें[5] हुवा ऊभा छै, चोकड़ो चाबै छै। कुं तोसो[6] थो तिको काढि दोनूं ही सिरावणी[7]

---

१ रोजगार और नमकहलाली के कार्य में चढ़े। २ पहचाना। ३ काल (यमराज) के बरसाये (पैदा किये हुए)। ४ सहस्रलिंग महादेव का मंदिर और उससे लगा हुवा उसी नाम का तालाव, जयसिंह देव सोलंकी के इतिहास में उसके बनाये हुए मन्दिर और तालाव का विवरण है, देखो नैणसी मूता का सोलंकियों का इतिहास। ५ एक साथ जोड़े हुए दो घोड़े। ६ सवल, परिश्रम निवारणार्थ यात्रा में खाद्यपदार्थ। ७ कलेवा।

कीधी । तिरै जगदेवजी कह्यौ—चावड़ीजी, राजि घोड़ां लियां अठै विराजिया रहिज्यो, हूं नगर मांहि जाय काई हवेली भाड़ै ले पछै राजनै ले जावस्यां, नै बेहू जणा साथे फिरता डूंब-डूंवणी[1] ज्यूं फिरता रूड़ा[2] न दीसां। तरै चावड़ी कह्यौ—पधारीजै । तरै जगदेव तरवार कटारी लेनै नगर मांहे हवेली भाड़ै पूछै छै। अै तो सैहर मांहे सिधाया छै नै चावड़ी तळावहीज छै।

इतरै अठै सिधराव जैसिघदेवरो माहिलवाड़ियो[3] डूगरसी कोटवाळ पाटणरो छै। तिणरो बेटो एक लालकंवर। तिको मोटियार छै । परण्यो तो छै, पिण मोटूयार, पाटणरे कोटवाळरो बेटो नै माहिलवाड़ियो छै। तठै पाटण मांहे पातरांरा[4] पान्चसै घर छै। तिण माहे एक जांबवंती पात्र छै। तिणरै सागरद[5] सहेली घणी छै। छोकरी छोकरा घणा छै। मालरी धणियाणी[6] छै । तिणरै कोटवाळ रो बेटो आवै। तिणरो सागरदसूं रमै[7]। एकै दिन कह्यौ, जांबोती, काई निपट फूटरी[8] चतुर कुळवंती बालक-बरसां[9] मांहि इसी काइक मिलावै तो खवास[10] करूं, नै तोनै निवाजूं[11]। जांबोती मुजरो करि आरे कीधी। आपरे चाकरांनैं पिण कहि राखियो छै । जांबवंतीरी सहेली पिण पाटण माहें देखती चोथती[12] फिरै छै। आछी अस्त्री जोवती[13] फिरै छै। तिण समीयै जांबोतीरी छोकरी पाणीरो घड़ो

---

१ ढाढ़ी-ढाढ़िन की तरह। २ भले। ३ राज्य महल का नौकर। ४ वेश्याओं का। ५ नौकर, शिष्य, शागिर्द। ६ स्वामिनी। ७ रमण करता है। ८ सुन्दर। ९ बाल्यावस्था में। १० मरज़ीदान, स्नेहपात्री। ११ प्रसन्न होऊं। १२ भालती, खोजती। १३ खोजती हुई।

लेनै दोपारां[1] सहस-लिंग तलाव आई। आगे चावड़ी मुकनां मूंढो ऊपरांसूं परो करि बैठी छै। आदमी फिरतो कोई दीठो नहीं, तद मूंढो उघाड़ जलरो तमासो देखै छै, वले कमठाणों[2] देषै छै। तठै गोली[3] पिण उणरै कह्यै चोघनी फिरै छै। तद चावड़ी दीठो, इन्द्ररी अपछरा, हजार चन्द्रमांरी सोभा दीसती देषनै हैरान हुई। घड़ो लियां चावड़ी कनै आई। मुजरो कीयो। पूंछियौ, बाईजी कठां सूं आया नै घोड़ांरा असवार सिव पधारिया छै। तरै चावड़ी कह्यौ, हूं उदियादीत राजा पंवाररा छोटा बेटारी परणी छूं। वले गोली पूछियो जेठ छै। कह्यौ, रिणधवल। तरै गोली कह्यौ, बाईजी, कंवरजी रो नाम कासूं। चावड़ी कह्यौ, गैली, घररा धणींरो नांम कदेई कोई कह्यो छै। गोली कह्यौ, कै श्री करताररो नांम कहीजै कै भरतार रो नांम कहीजै। आप तो देसोत छो। तरै चावड़ी कह्यौ, कंवर जग-देवजी। वले गोली बोली, आपरो पीहर कठै छै। चावड़ी कह्यौ, टोडे राजा राजरी बेटी, बीजरी बहिन, चावड़ा छै। तरै गोली कह्यौ, कंवरजी मांहे पधारिया छै, नै घोड़ांरी रखवाल रखावज्यो। तरै चावड़ी कह्यौ, उण काला पहाड़रा घोड़ा सामो जोवै कोई नहीं। वले गोली कह्यौ, मोटां राजारा कंवर एकेला कूं निकलिया। तरै चावड़ी कह्यौ, मांईसूं रीसाय नै निकलिया छै। लारली[4] वात सगली कही गोलीनै और गोली सगली वात ले मुजरो करि[5] पाणी भर घरै आई। जांवबतीनै कह्यौ, कदेई कंवरजीसूं मुजरो करो। इकेली बैठी

[1] दोपहर के समय। [2] भवन-निर्माण, कारीगरी। [3] दासी। [4] पिछली। [5] प्रणाम करके।

घोड़ा दोय लियां बैठी छै। धू रै मंडळै[1] वैर[2] जात न दीठी। कहता जिसी छै। ओर जात, जेठ, सुसरो, धणी, पीहर सगळा बताया। तरै जांबोती कपड़ा आछा पहिर पलमादार गुजराती गैहणा-पहिरया, रथ जूतग्यौ[3] जलूसदार। मांहै बैठी चिक पड़दा दे नै। छोकरी आपरी पराई २०/३० पाखती लीधी। चाकर पंचहथियार साथे लीधा। एक मालजादो[4] खोसरो[5] थो, तिको पोजो वणाइ घोड़े चढ़ि लीधो। तिका चावड़ी वैठी थो तठै चाली चाली आई। परेच[6] आडी खंचाई नै जांबोती कह्यौ, वहू, ऊभा हुवौ मिलां। हूं थाहरी भूवा-सासू छूं। मोनै इण वडारण[7], थांसु वात करि गई थी, तिकै मोनैं कह्यौ। तरै हूं महाराज सू मालूम करि रथ जोताई नै आई छूं। थांनै भतीज जगदेव परणियां टोडै, जरै हूं नाई[8] थी। तिणसू थे ऊळखो नहीं नै नैतौं रिणधवल री मा मेल्यो थो। भतीज जगदेव कठै सिधाया नै थे मोटे घररा छो अर मोटे घर आया। आ वैसणरी जायगा आपणीं नहीं। तरै चावड़ी देख भरममें आई, कदेही कंवरजी सिधराव री सगाई री बात कही नहीं नै राजारा राजा सगा होसी, यों जांण कपड़ो गैहणो तरै[9] देखि पगे लागी। आसीस दीधी नै कह्यौ, वहू रथ विराजो, भतीज अठै आयो रहसी। नफर[10] एक अठै ऊभो राखिस्यां तिको दरवार ले आवसी। खोजां नै कह्यौ। घोड़ा नफरा

---

१ ध्रुव मडल मे, पृथ्वीतल पर। २ स्त्री। ३ जुतवाया। ४ माल-ज़ादा, कामी, दुश्चरित्र पुरुष। ५ वेश्याओं का दूत। ६ कनात, तम्बू। ७ राज्य महल की वडी, प्रतिष्ठित नौकरानियां। ८ नहीं आई। ९ ढग। १० नफ़र, नौकर।

नें सुंपणा मांड्या। तरै चावड़ी थेली दोनूं ही डरी लीधी। रथ बैठाय नै रथ खड़ियौ। तिसै खोजांने वडारण साथे कहाड़ियो[1], आदमी अठे एक ऊभो राखो, जगदेव आवै जरै साथे लेनै वेगो आवै। यों करि नै घरै आई। घर मांय पोलीदार[2] छै जठै मांय आघो रथ छोडयो नै जांवोंती उतरी, चावड़ी उतरी। तिसै मांहेसूं सागरद थी तिका वडी पोसाख कीधां सामी आई। क्यां[3] मुजरो कीधो, कै पगे लागी, केई सहेली खवास[4] हुई खमां-खमां[5] करती आगै चाली। मांहे गई तरै ऊभो[6] मालियो निपट बेबाह[7] छात बंधी छै। पाखतां कली[8] ऊपरां सोनेरी चित्राम जाली काच जड़िया छै, जाणै सागै[9] हीरा जड़िया दीसै। तिसीहीज बिछायत ऊपरां गाव-तकिया[10], वगल-तकिया, गींदवा[11] बादेला[12] पास्वा[13] मसंद[14] ऊपरै पड़िया छै। तिण मालियै लेनै वैसाणी। तरै थेली दोय मंगाय नै राखी। गरम पांणी दिराया नै तिसै एकै छोकरीनै कह्यौ, जा श्री महाराजा सूं मालूम करि, म्हांरो सागी भतीज जगदेव अठै पधारियो छै, महाराजा घणी गोर करावज्यो जी। आवै छै तरै पगे लागसी जी। सजोड़ै छै। चावड़ी म्हारै महिल छै। छोकरी मुजरो करि घड़ी दोयनै आय कह्यो, महाराजा घणा खुस्याल हुवा नै फुरमायो छै, आवत-समो भूवा सूं

---

१ कहलवाया। २ दरवान, द्वारपाल। ३ कइयों ने। ४ नौकरानी का रूप बनाकर आई। ५ 'खमा खमा' ये शब्द प्रजा द्वारा राजा के अभिवादन में मारवाड़ मे बोले जाते हैं। ६ ऊँचा महल। ७ अर्थ सदिग्ध है। ८ दीवार पर की हुई कलई। ९ सचमुच। १० गाल रखने के तकिये। ११-१२-१३ नाना प्रकार के तकिये जो सौख्यपूर्ण घरों में मिलते हैं। १४ मसनद, गद्दा।

पछै पगे लगावज्यो । एक वार म्हांसूँ मिलावज्यो । तितरै जीमण तयार हुवो। तरै जांवोंती कह्यो, वहू, संपाड़ा[1] करो, ज्यां[2] जीमां। चावड़ी कह्यौ, मोनै पतिव्रता धर्मरो पण छै, कंवरजी आरोगियां पछै आरोगणरी वात। तिकै तो अजेस[3] पधारिया नै छै । तिसै एकै छोकरी आय कह्यौ, वहूजी साहव, राजरो भतीज जगदेव मुजरो कीयो छै। नै महाराजा कनै पधार विराजिया छै । महाराजारै रसोड़ै थाल पधारियो थो। तरै जांवोंती कह्यौ, जा उतावली जगदेव अवाय[4] तो होय जिसी, महाराजा साथै आरोगिया छै कै नहीं तो म्हाराजा सूँ अरज करि तेड़ ल्याव, भूवा भतीजो भेलाही जीमस्यां। जिसै इणरै ही थाल ल्याया । तरै जांवोंती कह्यो वे कू (कूवे ?) पराडां[5] जगदेव भतीज आयां पेहलां हूषा जूटण (?) नूँ वैसूँ। आरोगियां ही खवर आवै जरां पछै जीमवाकी वात। तिसै छोकरी जाय आई। वहूजी साहव, महाराजरै साथै सांपड़िया नै वडे थाल दोनूँ सिरदार जीमतां देख आई छूँ, पिण रावलो भतीजो होय तिसो होज रूप रंग मांहे सांवला छै। जावोंती कह्यौ, आ तो म्हारा घररी खान[6] छै, भाई उदियादीत पिण रंग मांहि सांवला छै, पिण म्हारा घर जिसो रूप कठैही न छै । इसी भाँति वातां करि चावड़ीरो मन

---

१ स्नान। २ जिससे। ३ अब तक। ४ ले आ, बुला ला। ५ यद्यपि इस वाक्य की भाषा, लिपिकार की गलती से समझ में नहीं आती, परन्तु आशय इस प्रकार समझ में आता है—तब जाम्बवंती ने कहा, जगदेव भतीज के आने से पहले अन्न को छूने (हूँषा जूठण, बैठना (मेरे लिए) कूए में पड़े (कूवे पराड़ां)। ६ घराने की विशेषता।

परघलायो[१] । थाल दीधो, बहू आरोगी । तरै क्यूँ जीमी क्यूँ न जीमी, थाल छोकरी उठाय लियो । अवै वातां पूछणी मांडी । तीजो पहर आयो । चावड़ी कह्यौ, कंवरजी मांहे भूवाजीसूँ मुजरो करणने पधारीया नहीं । तरै जांबोती कह्यौ,जा ए छोकरी, भतीजने तेड़ ल्याव[२] । जांबोती वहूने वातां लगाई । तिको जगदेव विना तो वातां अलूणी[३] लागै छै । तरै छोकरो घड़ी-दोय पछै आय कह्यौ, महाराजा उठण दे नहीं । कह्यौ, राति पोहर एक गियां पोढणनै आवसी, तरै भूवासूँ मिलि लेसी । इतरो सांभल रीस कीधो, महाराजा सूं अरज करि, परभाते घणी वातां करिसी, पिण अवार मिलण रो हुकम हुवै । छोकरी भले[४] घड़ी-दोय नें आई । आगे कह्यौ त्यूंहीज कह्यौ ।

तिसै दिन मंदिर पधारियो[५] नै लालकंवर नै कहायो, आज म्हारो मुजरो छै । रात पोर एक गियां वेगा पधारिज्यो, आपणे वस छै । खवास चाहो तो खवास राखज्यो, नहीं तो हूँ सागरदां में राखस्यूं । अवै लालकंवर अमलांरा जमाव[६] मांडिया, गलियो गुलसरो[७] छूटो अमल कियो । पछै वत्तीसो कसूभो मिश्री माहें कढाय पीधो । मुफर[८] माजुम लीधो । पछै दारू रुपया ६० सेर लाभै तिको अधेला भर ल्यै तो चार पांच सेररो पीवा कै चांकां रहै[९], तिणरो प्यालो पईसां च्याररो लीधो । पछै पोसाख

---

१ पिघलाया । २ बुला ला । ३ नीरस । ४ फिर । ५ दिन अपने घर गया, सूर्य अपने मन्दिर (मंदराचल, अस्ताचल) को गया, सूर्यास्त हुआ । ६ अफ़ीम जमाना (खाना) शुरु किया । ७ गुलदस्ता । ८ मुख के स्वाद के निमित्त किसी पेय पर खाने का पदार्थ । ९ चार पाँच सेर शराब पीने के बराबर मस्त रहे ।

गहणो पहिरियां, सूंधो[1] चोवो अतर लगाय कस्तूरीरी कंठी वणाइ, सेलरा थेगा दे[2] तोड़ूंकतो-तोड़ूंकतो[3] आयो। वतक[4] एक सेर दारू सूं भरी रुपया ६० सेर वालो। तिको ले पान फूल मिष्टान लेनै आयो। तिसै गोल्यां बोली, बहूजी, वधाई देज्यो कंवरजी पधारिया। चावड़ी जाण्यो पधारिया तो परा। तिसै मालियेरै बारनै आयौ ज्यूं निजर और दीसै। तितरे छोकरी दारूरो वतक पांन मिष्टान मसंद ऊपरां मेल्हि पाछी हीज घिरी। जाती कीवाड़ जड़ि बाहररी सांकली दीधी। चावड़ी देखै तो दूजो। तरै मन मांहे जाणियो कोइक तो दगो दीसै छै नै हूं अघोरी जात, औ मरदरी जात नै अमलां मांहे असुर[5] दीसै छै। इण आगै म्हारो धर्म राखणो छै, तो कपटसूं करणौ। यूं जाणि नै ऊभी हुई नै कह्यौ, कंवरजी आघा पधारो, ढोलिये विराजौ, इण अखी कह्यौ। तरै लाल कह्यौ, चावड़ीजी राजि विराजो। रूप देखि नै गोलो रीझ गयो। इण पिण नैणांरा बांणां सूं वींध नाख्यौ, पांणी ज्यूं हो गयो। लाल कंवर कह्यौ, म्हांरी जांबोती बडी चाकरी कीधी। चावड़ीजी, अै मालजादी छै। मैं यांनै कह्यौ थो, कुलवंतो रूपवंत चतुर बालक काई मिलावै तो खवास थाए। तिसा हीज थे छौ। मोनै हुकम करस्यो सो करस्यूं। तरै चावड़ी जाण्यो म्हारी साली मालजादी मोसूं घणो दगो कीन्हो नै मोनै जोर भोलाई[6]। तरे चावड़ी वतक प्यालो हाथमें लीधां दीठो, अमलां

---

१ सुगन्धित द्रव्य। २ ठेंक देता हुआ, सहारा लेता हुआ। ३ सांड की तरह ताँडता हुआ, नाद करता हुआ। ४ वत्तख, शराब पीने की सुराही। ५ दैत्य के समान। ६ बड़ी आपत्ति में डाला।

मांहे आंधो दीसै छै। तरै प्यालो दारूसूं धकधक छलियो[1] नै आघो हाथ कियो। कंवरजी, आघो हाथ करि म्हारो हाथरो प्यालो लीजै। तरै लाल कह्यौ, ओ पईसां दस भर नै बीजो पांच अथवा सात सेर दारू अमलां पौंचै छै, तिको अजे निपट चाक हीज छूं नै प्यालो निपट करड़ो छै नै बातां करणी छै। चावड़ी कह्यौ बातांरी किसी फिकर छै, पहिली वार म्हारो हाथ ठेलो[2] मति, थूं जिको ल्यौ। मोनैं ही बातांरो कोडि[3] छै। इतरो कह्यौ, तरै प्यालो लीधो। तरै धूजते हाथ लालकंवर प्यालो भरि नै चावड़ीनै दीधो। चावड़ी घूंघटो करि कंचू[4] मांहे ढोल[5] दीधो नै खंघारो कीधो, थूकियो। तिसै दूजो प्यालो चावड़ी वलै भरियौ। जाणियो गोलो अजे सपगां[6] छै। दारू आयो तो खरो[7] पिण लोटपोट न हुवौ। तितरे चावड़ी प्यालो आधो कीधो। तिको गोलानें दारू आयो। वलै प्यालो मूँढै लाग्यो। तरै दूजौ प्यालो लेतसमें ढोलिया ऊपरी पाधरा पग करि दांत तिड़ाय[8] नै पड़ियो। चावड़ी उणनें अमलां मांहे बेखबर देखि, तरै उणरी ही तलवार काढि गलो कीधो[9]। हाथ जुदा जुदा काटिया पगांरा जांघांरा जुदा २ तखता कीधा। करनें चांदणी[10] मांहे घड़ देनै बांधियो। ऊपरां पिला-पोस वींटीयो[11]। तिण ऊपर जाजम छोटी थी, तिको वींटी। गांठ गाढी सैंठी[12] वांधी। तिण झरोखे नीचै राज

---

१ लबालब भर लिया। २ रोको। ३ चाव। ४ कचुकी, कांचली अंगिया। ५ गिरा दिया। ६ छधिवान्, होश सहित। ७ शराब का नशा आया तो सही। ८ निकाल कर। ९ गलो कीधो (मुहा०) = गला काट डाला, मारडाला। १० बिछाने की जाजम। ११ लपेट दिया। १२ जोरदार।

मारग निकलै छै। तिको रात आधीरो समीयो थौ, तिसै चौकीदार चौकी देता आय निकलिया। आगे गांठड़ी दीठी। देखिने जाणियो किण एक साहूकाररी हाट फाड़ी,[१] तिको चोर म्हांरां डरसू गांठड़ा नाखि न्हाठा। म्हांरो मुजरो होसी। उपाड़ै[२] तो भार घणो। मांहो माहे[३] कह्यौ, कै तो बादलो पारचो[४] कै नीलक घणोसो माल दीसै छै। खोलो मती। दिन ऊगां दरबार बाहर घालण[५] नै आसी, तिणसू बांधी ज राखौ नै कोटवाली चौतरै[६] मेलौ। तरै राजी थकां गांठड़ी मेली। दिन ऊगां मुजरो होसी। अबै चावड़ी गाढी सैंठी मरणरूपी होय बैठी छै।

हिवै जगदेवजी हवेली भाड़ै लेनै पाछा घोड़ांरी ठौड़ आवै तो चावड़ी, घोड़ा दीसै नहीं नै रथरा खोज दीसै। तरै जाणियो चावड़ी नै कोइ भोलाय[७] नै लेगयो। तरै दरबार जाय कहूं। तरै दरबार आया। आगै ठावा लायक सहाणी[८] घोड़ांरी पायगा विचै बैठा छै। तिणसूं राम २ कीधी। तरै सहाणी लायक ठावो वणायतो डील देखि उठि मिलियो। पूछियो किठासू आया नै आगै किसै गाँव पधारस्यो। तरै जगदेवजी कह्यौ, अठातांई सेवा करण नै सेर बाजरीने आयो छूँ, पंवार रजपूत छूँ। तरै साहणी कह्यौ, जो घोड़ांरी जाबता[९], रातब, उड़दावो[१०], घासरो जाबतो करावौ तो

१ दूकान तोड़ी, दूकान तोड़ कर चोरी की। २ उठावे। ३ मन ही मन। ४ कीमती चाँदी की झारी अथवा अन्य बहुमूल्य पात्र। ५ फरियाद करने, कूक मचाने। ६ चौकी पर। ७ छल कपट करके। ८ घोड़ों का रक्षक। ९ बन्दोबस्त। १० सेवा।

अपे[1] भेळा रहां। रुपिया ३०) रो महीनो लियां जावो नै म्हारे रसोवड़े जीमो। जगदेवरो जीव तो थिर नहीं, पिण जाएयो राजरो सहाणी हजूरी छै। तिसै सहाणी कह्यौ, थानैं महाराज रे कटूमां लगावस्यां[2]। तिसै थाळ परूसियो सहाणी रै आयो। कह्यौ, जगदेवजी, अरोगो। तिको धान भावै तो नहीं; पिंण उण देखतां अरोगिया। थाळ परो ले गया। रात पड़ियां पायगा माहें होज ढोलियै उपरै आडा-तेडा[3] हुवा।

तिसै दिन ऊगतै कोटवाळ कचैड़ी आय बैठो। तदि चाकरां बहिलायतां[4] मुजरो कियो, गांठड़ी दिखाई नै कह्यौ, आपरै परतापसूं म्हांरे लोह कोई पचीयो[5] नहीं, धाड़ी-री-धाड़ी[6] चोरां री थी, पिण म्हे रावळा रिजक[7] ऊपरां रांमजीरो नाम लेनै हाक करी, चोरां ऊपरि राल्या,[8] तिसै[9] चोर गांठड़ी नाखि न्हास गया। कोटवाळ राजी हुवो,कह्यौ, देखो गाठड़ी मांहे कासूं छै। जदै पयादां[10] उतावळां मुजरायतां[11] खोलणी मांडी। जठै तीजो वट[12] खोलै तिठै लोही लागो दीठो। सगळा चमक्या[13] नै बीटणो उघाड़ै तो मांटी-मारयो[14] निजर पड़ियौ। तिसै कोटवाळ ऊळख्यो नै कह्यौ, रे म्हांवाळो

---

१ अपन, हम दोनों। २ राज्यकुटुम्ब में नौकरी लगा देंगे। ३ आड़ा टेढ़ा, थोड़ा आराम। ४ कृपापात्रों ने। ५ म्हारे लोह······नहीं = हमारा लोहा किसी को बरदास्त नहीं हुवा। ६ धाड़ की धाड़, डकैतों की बड़ी सेना। ७ नौकरी। ८ चोरों के ऊपर पड़े। ९ जिससे। १० पायकों ने, पैदल सिपाहियों ने। ११ कृपाभिलाषियों ने। १२ परत। १३ चकराये। १४ हतभाग्य।

लालड़ो[१] दीसै छै, रे दौड़ो खबर करो। चाकरां कह्या, कवरजी तो महलां मांहे पोढिया छै। तरै मांहे खवास ने पूछियो। तरै कह्यौ, रात पोर एक गयां जांबोती पात्रर घरे सिधाया था। तरै आदमी बोल्या, पात्रने पूछियो। तरै पात्र बोली, मालिये मांहे घणै सुख मांहे छै। पयादां कह्यौ, आर बुलावै छै, परा जगाय। तरै दासी ऊंची जाय किवाड़ांरी छेकड़[२] मांहि मूढौ घालिने कह्यौ,चावड़ीजी कँवरजीने जगाय उरा मेलो। तरै चावड़ी भूंजती[३] बोली, मालजादी रांडाँ, थारे बापने जरै ही मारि गांठड़ो बांधि झरोखेरै मारग नाख दीधो। मो चावड़ी सू इसो चज[४] करो, जो कठेही कँवरजीनै खबर हुई तो थांरो नाम कहिसी अठै मालजादियाँरा घर था, थां मांहे घणी कुपीच[५] होसी, थांरौ सत्यानास नारायण गमै,[६] मो कने गोलाने मेल्यौ। इतरी बात सुणत समों राँडांरा जीव उडि गया। चाकरां सुणियो, तरै दौड़ जायनै कह्यौ, जांबोती काई चावड़ी रजपूताणी चज करि आंणीथी। तिण लालजीनै मारियो। तरै कोटवाल उकलते कालजे[७] आदमी सौ दोय ले नै पात्ररै घरै आयो। मालियै चढिया। आगै बारणे रा किवाड़ सैंठा[८] दीठा नै बारी एक पसवाड़ा[९] री भीतीं माहे थी, तिण कांनी निसरणी देनें मालियै माहिं जावणनें मूंढौ आघो घालियो। तरै चावड़ी झटका री दीनी, तिको मालियै माहें माथो पड़ियो नै धड़ पाछो सूदावाणो[१०] पट दे[११]रो धरती पड़ियौ। यों आदमी ४-५ मारिया। अबै किण ही

१ लाल कुवर। २ छिद्र, दरार। ३ जलती भुनती हुई। ४ छल, कपट करके। ५ यातना। ६ खोवे। ७ व्याकुल चित्त से। ८ जड़े हुए, ढके हुए। ९ पास को। १० सीधा होकर। ११ धमके के साथ।

री आंगवण[१] हुवै नहीं। हलचलो[२] हुवौ। तिको सिद्धराव जैसिंघ नै खबर हुई, काई चावड़ीसूं मालजादी दगो कियो थो, तिको राते लालनै मारियो, अवारू[३] पाँच आदमी मारिया, मालिया रा किवाड़ जड़ बैठी छै। राजा कह्यौ, कोई उणनै कहौ मती, म्हें पधारां छां। तिसै राजा पाला[४] लेनै आप घोड़े असवार होय चाल्या। तरै सहाणी लूंब[५] झाली। तरै जगदेव पिण वात सुण राजी हुवौ। तरै दूजै कांनी लूंब जगदेव झाली। राजा जगदेव नै देखै छै, इणनै म्हें कदेई दीठो। यों राजा विचारतो वार वार जोवतो पात्रैं घरै गयो। सहर रो लोक साथे हुवौ। मालियै ऊंचा महाराजा, सहाणी नै जगदेव तीन आदमी चढिया। तिठै राजा बोल्यो, वेटी चावड़ी, थारौ पीहर किसै नगर नै किणरी वेटी छै, नै थारौ सासरो किसै नगर छै, सुसरा रो नाम खांप कासूं छै। तरै चावड़ी जाणियो कोई मोटो लायक दीसै छै, इण आगे कह्यौ चाहीजे। तरै कह्यौ, बापजी, पीहर तो नगर टोडै छै। राजा राजरी धीव[६] छूं, वीजकँवररी वहिन छूं, सासरो धार नगररो धणी, जाति पंवार, राजा उदियादीत रै लोहड़ा[७] वेटारी अंतेउर[८] छूं और पाछली सगली मांडनै[९] बात कही। मोनैं छल करनै मालजादी रांडां ल्याई। पछै म्हारो धरम खोलणनैं[१०] गोलो आयो। तरै गोला नै मारियो, नै बापजी, रजपूतरी वेटी छूं, घणां ने मारिनै

---

१ आगमन, आगे बढ़ने की हिम्मत। २ हलचल। ३ अभी। ४ पैदल सिपाही। ५ शाही घोड़े की सजावट के लटकते हुए इधर उधर के रेशमी फुन्दे। ६ पुत्री। ७ छोटे। ८ स्त्री, पत्नी। ९ ब्योरेवार। १० भ्रष्ट करने को।

काम आविस्यू। जीव ऊपरां खेल्यां ऊभी छूं। नै कंवरजी तो नगर माहे छै। तरै जगदेव राजा आगै होय बारणै आय बोल्यो, चावड़ी जो किवाड़ खोलो, थे घणो अचंन[1] पायो। तरै साद[2] पिछांण किवाड़ खोल्यो। जगदेवजीसू मुजरो कियो। तरै राजा जाणियो, जगदेव ओ होज। तरै राजा कह्यो, तू म्हारै धर्म री पुत्री छै। चाकरां नै हुक्म कीयो, थे पालपी १ दासी १० सिताव ल्यावो नै खालसारी हवेली दरबारसू नेड़ी हुवै, तिण माहे डेरो दिरावो। तिसै कोटवाल कह्यो, म्हारी घररी गमाणहार[3] नै कासू फुरमावो छो। राजा कह्यो, तोनें सहर इसा कुकरम करणनें भोलायो[4] छो? इतरो कहि कोटवालीसू दूर कीधो नै मालजादी तितरी[5] थांणे पकड़ मंगाई, कांन नाक काटि माथो मुंडाय पाटड़ा पाड़ि[6] गधै चाढि सहर भदर[7] कीनी। घर लूट लीना। अबै चावड़ीनें सुखपाल[8] बैसाण दासी पाषतीं हुवा हवेली माहे उतारिया। राजाजी साथै छै गरढो[9] एक खोजो, नाम मियां मुस्ताक, डोढियां राख्यौ। बरस दिन रो धान चोपड़[10]रो आदमियां माफक सामों[11] राख्यो। पुखतो एक पोलियो राख्यो। मायसू सुवागो[12] मंगाय दियो। पछै राजा जगदेव, सै[13] साथे करि दरबार आया। बैठा बातां करी। राजा निपट राजी हुवौ। उठै हीज जीम्या। रात पोहर एक गई। तरै आया। भारो सिर

---

१ दुःख। २ शब्द, ध्वनि। ३ नष्ट करने वाली। ४ सौंपा था। ५ जितनी थी उतनी। ६ केशपाश उखाड़ कर। ७ लांछित। ८ पालकी। ९ पराक्रमी। १० घी इत्यादि, स्निग्ध पदार्थ। ११ सामान। १२ सुहाग सम्बन्धी मङ्गल समाग्री, जो सुहागिन स्त्री को भेंट की जाती है। १३ सभी।

पाव मोत्यांरी माऴा, घोड़ो, कड़ा मोती देनै सीख दीनी। डेरै हवेली आया। चावड़ी सूं मिलिया। मोतियांरी माऴा चावड़ीनै बगसी नै कह्यौ, म्हाराजा सूं राज मिलिया, नहींतर दिन १० तथा २० में किणीक नै कहिनै मुजरो गुदरावतो[१], तरै मिलणो होतो। यों बातां करतां रात्र गई। चावड़ी पतिव्रता, तिका निरणी[२] रही। तरै रात पाछिली पोहर एक रहीं जरै रसोड़ो कीधो। रात घड़ी चार रही तरै जगदेवजीनै जगाया। सेतिषानै[३] गया। हाथ पग ऊजिऴा करि, कुरला करि दांतण कीनों। तारां[४] हीज थकां थाऴ परूस दास्यां लाई। कँवर कह्यो, इतरो उतावऴो बेगो थाऴ कुं। चावड़ी कह्यौ, आपने दरबार राजाजी तेड़ावसी,[५] थाँसू राजाजी बात कीधी छै, तिको थाँ बिना घड़ी एक रहसी नहीं, नै मोनें व्रत छै, आप आरोग पधारो पछै म्हारो जीमणो होसी। तरै जगदेवजी साँच जाणि भेऴाही[६] आरोगिया[७]। तिसै घोड़ो ले चोपदार आय आवाज कीधी। तरै जगदेवजी सीख मागी, घोड़े असवार होय हजूर गया। राजा उठि आदर दीधो। बातां करी। कह्यो, चाकरी करस्यो। जगदेवजी कह्यौ, सेर बाजरीनै हीज आयो छूं। तरै राजा कह्यौ, पटो लेस्यौ कै कोरी वरतन (वेतन) लेस्यो। जगदेवजी कह्यौ, कोरी वरतन लेस्यूँ। हजार एक जीमणी भुजारा, नै हजार एक बामीं भुजारा। हजार दोय रुपिया देसी तिकेरी चाकरी करस्युं। विखमी अवढी[८] जाइगारी चाकरी करस्युँ। तरै राजा

---

१ मालूम करवाता। २ भूखी, उपवासी। ३ पाखाने। ४ तारे। ५ बुलावेंगे। ६ एक साथ ही। ७ जीमे, भोजन किया। ८ विषम और कठिन जगह की सेवा।

खानसांमाने तेड़ि कह्यौ, रुपिया हजार दोय हमेसा जगदेवजीनै कोठार सूं देज्यो। मास एक रुपिया हजार साठ दीयां जाज्यो नै सिरपाव दीधो। रोजगाररो परवानो करि हाथ दीधो। वले, रीझ दे सीख दीधी।

अबं पाटण रावड़ा बड़ा उमराव कुस राखै छै[१]। एकै डीलरा दो हजार रुपिया दीजै छै तिको इकेलो किसी लाख घोड़ांरी फौजां भांजसी, यों बातां करै। राजा तो जगदेव आवै तरै घणौ कुरब[२] करै। कन्है साम्हो बैसाणै, रीझ बिना सीख न द्यै। यों बरस एक नें जगदेवजीरे कंवर हुवौ। तिणरो नाम जगधवल दीधो। बरस तीन रे आंतरे वलै कंवर हुवौ। तिणरो नांम वीरधवल दीधो। घणां लाड-कोड कीजै छै। राजारी रीझां लीजै छै। पिण जगदेव काला गहिलारो दातार[३] छै। रुपिया हजार एकरो दान हमेसा करै। दातार-गुरु नाम षट्व्रन[४] कहै। इसी भांति रहतां बडो बेटो बरस पांच में हुवौ नै बरस दो मांहे छोटो बेटो हुवो। एक दिन भादवारी मेह अंधारी रात मच[५] नै रही छै। छरमर छरमर मेंह बरस नै रह्यौ छै। बिजळी भळभळाट[६] करनै रही छै। इणी समै तिको रात आधी रो समो छै। तिको राजारै कान सुर पड़यौ। ऊगूण दिसी

---

१ द्वेष भाव रखते हैं। २ आदर। ३ काला गहिलारो दातार (मुहा० ;=आपत्ति (काला) के समय (गहिला) मार्ग का दिखाने वाला, आरतहरण। ४ छहों वर्ण, समाज की सभी जातियाँ, चार वर्ण+अस्पृश्य हिन्दू जातियाँ+विधर्मी जातियाँ। ५ झुक रही है। ६ चमचमाहट।

नं जणो[१] चार गावै छै नै केईक त्यारी अलगी रोवै छै। राजा सुण नें कह्यौ, जगदेव, थांरे कांन इण मेह मांहे कोई सुर और ही सुणो छो। जगदेवजी कह्यौ, महाराजा केईक बायां[२] गावै छै नै केईक रोवै छै। तिको सुणूं छूं। तरै राजा कह्यौ, इणारी खबर ल्याह्वो, कुं गावै छै, नै कुं रोवै छै। प्रभाते म्हांसू मालूम करज्यो। इतरो हुकम सुण जगदेव मुजरो करि ढाल माथा ऊपर मेलि नै चालियो। खड़ग हाथ मांहे ले नै चलाया। तरै राजा जाणियो इसी अंधेरी रात मांहे जाये के न जाये, यूं जाणि नें राजा पिण छानो[३] थको लारे हुवो। तिसै चौकी पोहरे उमराव था, त्यांनै कह्यौ, चोकी किण किण री छै। जिकै उमराव था तिणरा नाम ले ले नै कह्यौ। तरै राजा कह्यौ, देखां ऊगूण दिसि ने कोई गावे छै, कोई रोवे छै, तिणरो विवरो[४] ल्यावो। तणै किणीक उमराव कह्यौ, दिनरा दो हजार रुपया पावे छै, तिणनें कहो, हिवरूं[५] तो ऊ[६] जासी। इतरा बरस हुवा फांसू[७] रुपिया ठोके[८] छै। इतरो राजा सुणियो। तिसै उमरावां कह्यौ, महाराजा, खबर आंण नें कहां छां। मांहोमांहे ढोलियै सूता हीज कह्यो, फलाणा[९]जी फलाणाजी उठो जावो। इतरो कहि ढालांरा खड़भड़ाट[१०] करि पाछा पौढ रह्या। नै राजा तो उणांनै कही नै जगदेवरे लारां हीज हुवौ। हिवां जगदेव उणांरा सबदरै अणुसारै[११] चाल्यो जाय छै। राजा पिण छानो छानो लारे छै। पोल खुलाय बारै निकलियो। तरै राजा पोलियां

---

१ स्त्रियां। २ कन्याएँ। ३ छिप कर। ४ विवरण, ब्यौरा। ५ अभी। ६ वह। ७ मुफ्त का। ८ खाता है। ९ असुक जी। १० खलबली। ११ पीछे, के अनुसार।

नै कह्यौ, हूं जगदेव रो खवास छूं मोनें ही जाण द्यो। तरै राजा पिण वारै आयो। आगे जगदेव रोवै छै त्यां तीरै[1] गयो। तरै बोली, आवो जगदेव। कह्यौ, थे हिवारूं आधी रातरी रोवो छो, सो थांनैं कांइ दुःख छै। तरै उवै बोली, पाटणरी जोगणियां[2] छां, तिको प्रभात सवा पोर दिन चढतै सिधराव जैसिंहरी मृत्यु छै, तिणसू रुदन करां छां। म्हांरी सेवा पूजा घणी करतो, सो अबै कुण करसी। तिणसू रोवां छां। राजा पिण सुणै छै। तरै जगदेव बोलियो, उवै[3] गीत कुं गावै छे। जोगणी कह्यो, तू उणांने ही पूछ आव। तरै जगदेव उणां कनै गयो, ज्यूं उणां पिण कह्यौ, आवो आवो जगदेव। तठै राजा पिण ऊभो नैड़ो[4] सुणे छै। जगदेव पगे लागि नै कह्यौ, आप खंभायची[5] राग माहें सोलो[6] गावो छो, बधावो छो। सो थे कुण छो नै किसी बधाई खुस्याली मांहे गावो छो। जरे कह्यौ, म्हे दिल्ली री जोगणियां छां, जिकै राजा जैसिंह ने लेणनै आई छां। तिणसूं बधावा[7] गीत गावां छां। जगदेव कह्यौ, कुंकर मरसी। तरै जोगणी बोली, प्रभाते दिन सवा पोर चढियां राजा सेवा सारू[8] संपाड़ो करसी, पीताम्बर पहर[9] बाजोट ऊपरै ऊभो रहसी। तरै कडॅमांहे[10] तर[11] देस्यां नै बाजोट उलाल[12] देस्यां। इण भांति देह छोडसी। तरै जगदेव कह्यौ, आजरी वेला मांहे सिद्धराव

१ के पास। २ योगिनियाँ, दिशा अथवा प्रान्त की अधिष्ठातृ देवियां। ३ वे। ४ नजदीक। ५ राग विशेष, खम्माच। ६ बधाई का गीत विशेष। ७ बधाई के मङ्गल गीत। ८ पूजा के निमित्त। ९ पाट, लकड़ी का तख्ता १० कटि में। ११ तरी, सन्निपात। १२ उलट देगी।

जैसिंघ सो राजा बीजो कोई नहीं। किनी दान पुण्य धर्म कीधां कष्ट टलै। तेरे जोगणियां बोली, जो राजारा जोड़रो माथो आपरा हाथ सूं उतार म्हांने चाढै तो सिधराव की ऊमर बधै। जगदेव कह्यौ, जो म्हारो माथो स्यो नैं सिंधरावरी ऊमर वधारो तो म्हारो माथो तयार छै। तरै जोगणियां बोली, तूं राजासूं चढ़तो[१] छै, जो थारो माथो हाथसूं उतारि कमळ-पूजा[२] करै नै म्हांनै चाढै तो राजा री ऊमर वधै। तरै जगदेव कह्यौ, घड़ी २ वा ३ राज अठै विराजि रहज्यो, म्हारे घरे चावड़ी छै, तिणांसूं सीख मांग नै आऊं, इतरै विराजिया रहज्यो। तरै जोगणियां बोली वैर (स्त्री) मांटी[३] नै मारण वेई[४] सीख कांकर देसी, पण भलां, तू वेगो आवज्यै, म्हे बाट जोवां छां। इतरी वात करि, जगदेव पाछो विरियो। सिधराव जाण्यौ देखा पाछो आवै कै नावै, चावड़ी किण वाणी बोलै। राजा पिण लारै हुवौ। तिकै जगदेव घरे आया, पोळ माहें पैठा, मालिये चढ़िया, चावड़ीसूं मिळिया। सिधराव जैसिंघ वातां सुणै छै। तिसा सळवा[५] वैठा छै। जगदेव कह्यौ, चावड़ीजी, एक वात इसो छै। तरै थेट[६] सूं मांडि नैं वात कही। तिको थानै पूछण नैं आयो छूं। चावड़ी बोली, धन दिन धन रात आजरा दिन नै महाराजारो रोजगार खावा छां सो भर देस्यां, माथा ऊपरै ही रोजगार पटो खेत दीसै छै। आप मोटी विचारी, रजपूतीरी वट छै[७] माथो पेट दूखनै ही मरै, तो धणियांरै सिर लदकै,[८] नै सिधराव जीवतो रहै नै राज करै तो पछै माथो

---

१ अधिक, चढ़ा चढ़ा हुआ। २ मस्तक-पूजा। ३ पति। ४ मारने के निमित्त। ५ चैनसे, सुख में। ६ ठेठ, शुरुसे। ७ व्रत, प्रतिज्ञा है। ८ काम आवे।

किसै काम आवसी। पिण एक अरज छै। राज पिछे हूं पिण जीवती रहूं नहीं नै दो तीन पौरो ओवात[1] देखूं नहीं। पिण माथो देस्यूं। तरै जगदेव कह्यौ टाबरांरो किसो सूल[2] होसी। तरै चावड़ी बोली, टाबर आपां भेला रहसी। इतरो सुण नै जगदेव कह्यौ, तो परा उठो, जेजरी[3] वेला नहीं। एक बड़ो कंवर जगदेव काख मांहे लीनो नै एक चावड़ी लीनो नै माळियासूं उतरिया। सिधराव देखै नै माथो धूणे छै, धन्य २ रजपूत नै रजपूताणी नैं। अै चारूं आगे चलिया जाय छै नै पाछे राजा छै। अै पाधरा जोगणियां कनै आया। राजा ऊभो सुणै छै। चारूं जणां नै देख जोगणियां बोली जगदेव थारो माथो चाढि। तरै जगदेव कह्यो, माता, म्हारा माथा बदलै सिधरावने किती उमर बगसौ छौ। तरै जोगणीं बोली, बारे बरस राज वलै करसो। जगदेव वलै कह्यौ तो म्हारी अस्त्री चावड़ी नै दोय कंवर प्यारा बारै २ बरस हुआ। अै पिण मो जिसा छै, तिणसूं सिधरावनै वरस अडताळीस बगसो। अै हूं चारूं सीस चाढसूं। जोगणियां इणरो साहस देखि नै वर दीधो। भलां २ कह्यौ। तरै चावड़ी बडा बेटानै झाली[4] नै ऊभो राखियो। जगदेव षडग काढ़ि नै पुत्ररो सीस छेदियो। नै बीजा कंवरनैं ल्यावे, तिसै जोगणियां कह्यौ, इणरो सत साहस देखि नै राज बरस ४८ रो दीधो नै थारा महिल[5], बेटा बगसिया। अमी रो छांटो नाखियो। बडो कंवर उठि ऊभो हुवौ। जोगणियां हस २ बोली, बरस ४८ रे

---

१ अहिवात, वियोग, दुहाग। २ हाल, दशा। ३ देरी की। ४ पकड़ कर। ५ महिला, स्त्री।

राजरो वर दे नै सीख दीधी । जगदे चारूंसूं घरे पधारिया । राजा ओ सत सामधरमाई[१] देखि नै निपट राजी हुवौ । महिल आया, पोढिया । धन्य जगदेव ४८ वरस रो राज दिरायो । नींद तो काइ नाई[२] । पाछिली रात घड़ी चार रही नै चोपदार खवास मेलियो तेड़नै । तरै जगदेवजी श्री परमेसरजीरी सेवा-पूजा करि घोड़े असवार होयनै दिन ऊगतसमां दरवार आया । सिधराव सिरै[३] दरवार वैठा छै । जगदेवनै देखि नै मंसद ताई[४] साम्हो आय मिलियो । वीजो सिघासण मांडि वरोवर वैसाणियो । तरै उमरावांरै सामों जोयनै राजा कह्यो, रातरी वातरी कांई खवर, गीत रोवणांरी हकीकत ल्यावो । तरै थानैं कह्यौ थो, तिण रो जाव[५] द्यौ । तरै उमराव वोलिया, हां म्हाराज, फुरमायो छो तरै ही फलांणसिंहजी[६] ढीकण[७] सिंहजी गया था सो वारै दोय गुढा[८] ऊतरिया था, नै एकण गुढ़ा मांहे एकण रे टावर मुवो थो, तिणसूं टूपरी[९] करती थी, नै एकण रै जायो[१०] हुवो छौ, सो गीत गावती थी । आ रातरी हकीकत छै । तरै सिधराव जैसिंघ सामो जोयो । उमरावांरी वात सुणि नै राजा हंसियो नै कहयो लाख लाखरा पटायत छो, सात खुरसीरा मींच[११] छो, थे खवर न ल्यावो तो वीजो कुण ल्यावे । तरै जगदेव नै राजा

---

१ स्वामि-धर्म, स्वामीभक्ति । २ विलकुल नहीं आई । ३ दरवार के शिरोमणि होकर । ४ मसनद के छोर तक । ५ जवाव । ६, ७ असुक असुक व्यक्ति । ८ वनजारों का दल, चलते फिरते व्यापारियों का संघ । ९ रोना-पीटना । १० पुत्र-जन्म । ११ दरवार की सात कुरसियों को घेर कर वैठने वाले, सरदार, उमराव हैं ।

कह्यौ, रातरी वात कहो। तरै जगदेव वोल्यो, अै उमराव कहै त्यूंहीज थो। राजा कहै म्हारो सूंस[१] छै, वात छै त्यूं कहो। तरै जगदेव कहै, कांई ज्यादा दीठी हुवै तो कहूं नै भूठा लपराई[२] करणी आवै नहीं। गंभीरपणो देखिनै सिधराव वोलियो, भायां, उमरावां, आज सवापोर दिन चढियां मृत्यु थी। तिको वरस ४८ रो राज जगदेवजी दिरायो छै, सो हिवै राज करूं छूं। आपरो, चावड़ीरो दोनूं वेटांरो माथो म्हारै वास्ते देणां मांडिया नै वडे वेटारो तो माथो जोगणियां ने चाढियो। तिको इणरो सतधर्म नै चावड़ीरो पतिव्रत धर्म देखि नै पाछा वगसिया। कंवर जीवतो कीधो। सामध्रम देखि नै सगळा वगसिया, उमर दीधी। नै थे भूठ वोलिया इणमें कांई नफो दीठो। म्हें म्हारी निजरां दीठा नै कांना सुणिया! थे इणरा रोजगार रो ईसको[३] करता जिको हमेस इणने लाखां कोड़ां दीजै तोही इसो राजपूत मिलै नहीं। इतरो कहि आपरी वडकंवार[४] पुत्री थी, तिणरो नाळेर[५] जगदेवजीनै दीधो। दोय हजार गांव दीधा, घोड़ा हजार दोय हाथियांरो हलको,[६] पालखी ११०० रथ २०० लाख एक रुपिया रोजीना कर दिया। घणो महत[७] वधारियो नैं सीख दीधी। घरै आया, चावड़ीने कह्यौ। तरै चावड़ी वोली, थे देसोत छो महिल[८] दो चार हुवै। थे भलो काम कीधो, मोटी सगाई छै। तरै जगदेवजी नाळेर झालियो। लगन साहो कीधो। दत्त दायजो घणों

---

१ सौगध। २ लवारपना, वाचालता, आत्मप्रशंसा। ३ ईर्षा। ४ ज्येष्ठ पुत्री। ५ विवाह के प्रस्ताव स्वरूप नारियल। ६ भूल, झुण्ड। ७ महत्व, प्रतिष्ठा। ८ स्त्रियाँ, पत्नियाँ।

दीधो। सिधराव जैसिंघजी नै जगदेवजीनें सरब लोक सरीखा करि मानै।

तिसै बरस २।३ बीता नै जाड़ेचांरो सिधराव नै नाळेर आयो। डोळो[१] ले आया। परणिया। तिका जाड़ेची सूरतिमांहे निपट सखरी[२]। पदमणीं नहीं, पिण सरीसी दीसै। तिको देही सोरम[३] छै हीज[४], ५०० रुपयांरै सुंधामांहे नित संपाड़ो करै। तिकै सुंधामांहे जनाना परनाळा वहै। तठै भला भला भोगी भंवर होसनाक[५] खस-बोई[६] लेणनें ऊभा रहै। तठै रूप सुगं-धाईसू काळो भैरूं जाड़ेचो रै महल हमेशा आवै। तिको सिधरावने हेठो[७] नाखि छाती ऊपरा पागो देनै जाड़ेची नै भैरूं सोवै। नै दूजी राणियांरै महिल भैरूं जाण दे नही। कहै, दूजी राणीरै महिल गयो तो इणहीज दिन मारस्यूं। तिणसू डरतो जावै नहीं। जाड़ेचीरे महिल पोढ़ै नै रात आधी गयाँ भैरूं हमेशा आवै। इसी भांति रहै, सिधराव मांहे हेल[८] करै। तिणसू राजा तूटै लागो[९], पीळो पड़ियो। फिकर घणी, पिण कहिणी ना आवै। बागवाड़ो, खुस्याली, चूंप[१०] राजारी मिट गई। सारो दिन फिकर माहे रहै। दरबार करै, वेपातर[११] सो बैसे। इण भाँति मास ७ बीताँ आधे डील हुवो। तिसं जगदेव दीठौं। आज हूं म्हाराजनें वेखातर

१ वड़े राजा को अपनी पुत्री व्याहने के लिए छोटा सरदार राजा के घर ले जाकर अपनी पुत्री व्याहता है, इसे 'डोला' की प्रथा कहते हैं। २ सुन्दरी। ३ सुगन्धित। ४ तो है ही, सही। ५ छैले। ६ सुगन्धि। ७ नीचे। ८ अवहेला, अपमान, यातना। ९ तूटै लागो (मुहा० = शरीर में घटने लगा। १० शरीर की रक्षा में सावधानी। ११ बेखबर।

रो समाचार पूछ्स्यूं। साम्फ पड़ी, रूसनाई[१] हुई। जगदेव हजूर छै। रात पोर एक गई। सिधराव दरबार वडो कियो[२]। ने आप जाड़ेची री दोढियां[३] आया। तरै जगदेव साथे होज छै। सिधराव ओर हजूरियाने देखै तो जगदेव ऊभो छै। तरै राजा कह्यो, कंवरजी थेही पधारो। जरै जगदेवजी कह्यो, महाराजासूं एक अरज पूछणी छै, जो चाकरनै कहो तो अरज करूं, नहींनर डोढी वैठूं छूं। सिधराव कह्यो, किसी अरज छै। जगदेव कह्यो, मास ७ हुवा जाड़ेचीजी परणिया नै। तठा पछै सरीर मांहि उनमाद[४] नहीं, खुस्याली नहीं। तिण री हकीकत मोनें फुरमाईजे। तरै सिधराव निसासो[५] मेलि नै कह्यो, कंवरजी, दुख छै तिको तो माहिलो सरीर जाणं छै, कह्यांसू हांसो हुवै नै गरज पिण किणहीसूं सरै नहीं, ने राज म्हांरा जीवरा दातार छो, नै म्हारे भलो परताप दीसै छै सो राजरो उपगार छै। थे पूछो छो तो इण ठोड़े दाड़िमरा वीड़ा[६] छै, दोढी माहे ढोलियो ज्यूं-रो-ज्यूं निजर आवे छै, दुख छै तिको देख्या रहसो। इसो कह राजा मांहे पधारिया, नै जगदेव दाड़म नै चंवेलीरा वीड़ा मांहे बैठा। हाथ माहे खड़ग ढाल कनै छै। तिसै आधीरात वीती। राजा पोढिया था नै कालो भैरूं लूंगी[७] रो लंगोटो पहिरिया केस तेल माहे गरक कियां[८], सिंदूर लागो, गुरज[९] हाथ मांहे लीधां, चोखा ऐराक[१०] मांहे

१ रोशनाई, रोशनी। २ वडो कियो (मुहा०)=समाप्त किया। ३ जनाने महल का दरवाजा। ४ उमग, उल्लास, प्रसन्नता। ५ निश्वास, दुःखसूचक दीर्घ श्वास। ६ वृक्ष, दरख्त। ७ मोटा लाला कपड़ा। ८ सने हुए। ९ अस्त्र विशेष। १० अर्क़, शराब।

मैंमंत[1] हुवौ थको सिधराव छै तिठै जाय नै हाथ पकड़ नीचौं नाखि पागा नीचे देनै जाड़ेची कनें भैरूं पोढ रह्यौ। जगदेव सारो बिरतंत दीठो, मन मांहे जाएयो सिधराव इणरो किणनै कहै। न्याय, लोह मांस कठाथी चढ़ै नै म्हारा साहिबनें पूरो अचैन छै। इसो मनमें जाणीं नै खड़ग हाथ मांहे झालि सिंहरा सा पांचड़ा[2] भरिनै ढोलिये कनै जायनै उलाल दीधो नैं भेरूंनें हेठो नाख्यो। सिधरावने कह्यौ, उठ बैठा हुवौ नै भैरूंसूं दाकल[3] कीधी। पर-घर-पैसण चोरटा[4], सापचेत[5] हुइ, हूं जगदेव आयो। तिसै भैरूं नै जगदेव बथो-बथ[6] हुवा। तिकै करैक तो भैरूं ऊपरां, करैक[7] जगदेव ऊपरां। यूं करतां पाछिली रात घड़ी तीन रही। तरै भैरूं बलहीण हुवौ नै भैरूं कूका किया[8], मनैं छोडि, आज पछै इण महिल कदे नाऊं। इतरौ सुणतसमों जगदेव ऊभौ हुवौ नै लातरी साथल[9] मांहे दीधी। तिका साथल भैरूंरी तूटी। नै भैरूं हेला टसका करतां[10] मांहे जगदेव आपरा कछणा[11] सूं भैरूंनें अपूठी मसकां[12] वांधियो नै थिरमां[13] मांहे गांठड़ी बांधि कांधौ करि[14] नै आपरै डेरे ल्याया। तिकौ ऊंडो[15] तहखानो थो, तिण मांहे बैसाण आडा ताला जड़िया। प्रभातरा जगदेवजी दरबार सिधाया, जरै गांव हजार दोय वलैं दीनां।

---

१ मदोन्मत्त। २ मोटे कदम। ३ ललकार। ४ दूसरे के घर में घुसने वाला चोर। ५ सावधान। ६ भुजाओं से भुजाएं भिड़ाकर, कुश्ती। ७ कभी। ८ चिल्ला उठा। ९ जघा। १० ज्यों त्यों, कठिनाई से, हाँफता हुआ। ११ रस्से से। १२ पीठ के पीछे हाथों को बाँधकर। १३......(?)। १४ काँधे पर डाल कर। १५ गहरे।

इसो भाँति दिन सात बीता। चामंडरे[१] अखाड़ै काळो भैरूं नावै। तरै जाणियो हमेसां बरजता पाटण जगदेवदिसां जाये मती, पिण रहतो नहीं, घोड़ो हुयो बंधमांहे पड़ियो छै। तद काळा भैरूं छुडावण नै मिनषलोक आय भाटण[२]रो रूप करि आई। तिका काळी, डीगी[३], मोटा दांत, दूबळी, घणीं डरावणीं, माथारा लटा[४] विखरिया, घणां तेल मांहे चवत्ती, धवळा केस, माथै निलाड़ सिंदूर थेथड़ियो[५] थको, लोवड़ी[६] काळी, काळो धाबळो[७], कांचळी तेल मांहे गरकाब थकी, उघाड़ै[८] माथै कीधाँ, हाथ मांहे त्रिसूळ झालियां दरबार आई। तद सिधराव कहै—

कवित्त

सिधराव कहै मुष वैण कर, कर सीकोतर डाकिणी
प्रतक्ख आवै जगड़ कर कै छलाय दै तणी
इसा मानव न थायै, सुणी नह दीठी केण
रूप असंभ्रम दिषाइ, हैरांन थयां क्यां कंपणी
छूटै आवत नयड़ी, जगदेव देष हरषित कहै
जाचण .... डाइण भद्रणी।[९]

---

१ चामुण्डा, चण्डी दुर्गा। २ भाटिनी। ३ लम्बी। ४ केशपाश। ५ चर्चित, लिपा हुवा। ६ ओढने का ऊनी वस्त्र। ७ मोटे कपड़े का गँवारू लहँगा। ८ खुले सिर। ९ कवित्त का अर्थ—सिद्धराव मुख में ये वचन लाकर कहते हैं-क्या है-शिकोतरी (प्रेतिणी) है या डाकिन। प्रत्यक्ष में ऐसा प्रतीत होता है मानो कहीं से झगड़ कर आरही है। अथवा

तिसै दरबार उघाड़ै माथै आई । सिद्धरावनें डावा हाथसूं अह्लाव[1] दीधो । तरै जगदेव सामों देखि मूंछां ऊपरि हाथ फेरियो । जदि कंकाली[2] माथा ऊपरी पलो[3] लीधो नै जीमणा हाथसूं अह्लाव दीधो । तरै जगदेव गिंदवो[4] आघो कीनों । तिण ऊपरां कंकाली बैठी । राजा जाणियो, म्हारो दरबार मोटो नै हूँ पिण सिद्धराव जैसिंघ छूं । तिणसूं माथा ऊपरि वड़[5] लीधो छै । इतरै जगदेव सीख[6] कीधी । तिको डेरै आयो । तरै लारे रावां पूछियो, कुण अन्न[7], कठै वास । तरै कंकाली कह्यौ, अन भाट, नवखंडकेरा राजा[8], सती असतिरी, दातार, भूम्झाररी निवै[9] करती फिरूंछूं । तरै सिधराव कह्यौ, थं उघाड़ै माथै ऊपरि वड़ किणनें देखि खैंच्यो नं जीमणे हाथसू जगदेव नै अह्लाव दीधो, तिको वड़ किणनें देखिनै खैंच्यो । कंकाली कह्यौ, जगदे पंवार सामो देखि मूंछा हाथ फेरियो । तरै हीज जाण्यो, इण सरीखो दातार नहीं । धरती मांहे नै थारे दरबार मांहे इण सरीखो दातार कोई नहीं । तिणसू लोवड़ीरो वड़ माथा ऊपर खैंच्यो । इमो

छल कपट से रूप बना कर आई है । मनुष्य तो ऐसे नहीं होते; न तो सुना ही और न किसी ने देखा ही है । यह अपने अद्भुत रूप को दिखा कर कइयों को हैरान करती है, कइयों को देख कर कँपकँपी छूटती है । नजदीक आते देख जगदेव ने हर्षित होकर कहा, यह तो कंकाली है जो राजदरवार में याचना करने आई है ।

१ आशीर्वाद । २ दुर्गा की पूजा करने वाली चारणी । ३ पट, वस्त्र । ४ गद्दी । ५ ओढनी । ६ आज्ञा मांग कर प्रस्थान किया । ७ वर्ण, जाति । ८ हे नवखंड के राजा । ९ मैं सती स्त्री, दातार और वीर श्रेष्ठ की खोज में……… ।

सिधराव सांभळ[1] नै कह्यो, म्हे सवालाख पटब्रनरा दीकरा[2] नं रूपकरा देवाळ[3] छां, तिको तोने दान पाछै देस्यां। एकवार जगदेवकनां लेआव। जगदेव देसी तिणसू श्री सदासिवजी करसी तो चौगुणों देस्यां। तरै कंकाळी बोली, सिद्धराव, कोई दानसूं पृथ्वी मांहे पंवारा सू होड किणी कीधी नहीं, न करसी।

दूहो

प्रिथमी बडा पॅवार, प्रिथमी पंवारां तणी।
एक उज्जैणी धार, बीजो आबू बैसणो ॥[4]

जगदेव देसी तिण बरोबर देणी नावसी[5]। राजा कह्यौ, थे उठै जगदेव कनै लेआवो, पछै म्हे चौगुणो तो देस्यां। राव कनांसू कंकाळी वाचा[6] देनै उठी जिका जगदेव री पोळ मांहे ऊभी रही नै विरदाव[7] दियो। जिण वेळा जगदेवजी सेवा करै छै। तिसै कंकाळी ऊंचो साद करयौ, पंवार राव, सिधराव जैसिंह तोसूं चौगुणो दान देणो कह्यौ, तिको आज सूधो पंवारांसू बराबर दान दीधो नहीं नै राजा चौगुणों दान देणो कह्यौ छै, तो कनै सीख दे मेली छै, जगदेव कनां दान लेआव, तोलनै चोगुणों देस्यां, तिणस दान दे, ज्यू राजानें दिखाऊं। इसो सांभळ नै जगदेवरी अस्त्री कनै ऊभी थी, तिणनें पूछियो,

---

१ सुन कर। २..........।) । ३ देने वाले। ४ अर्थ-पृथ्वी में पॅवार बड़े हैं, और पृथ्वी पॅवारों पर अश्रित है। एक ओर तो उज्जैन और धार में उनकी राजधानी है, दूसरी ओर आबू में। ५ देते नहीं बन पड़ेगा। ६ वचन। ७ विरद बखान करना।

दान तो राजासूं किणी बात पोंच आवां नहीं[1], थे कहो तो म्हारो सीस दान द्यूं। तरै राणी कह्यो—

कवित्त

दियै गाजता गयंद, दियै तोषार विवह परि
दियै गांव कोठारि, दियै रतण थालां भरि
मही दीजिये वहोत, हीर सोवन जो वाहै
नहीं कीजिये नाकार कहैं कामण ऊमांहै[2]
दीजिये दान डींभूसहित भट्टां थट्ट समप्पणां
इम कहै श्री जगदेवनैं, सीस न दीजे अप्पणां ॥

तरै जगदेव कहै—

कवित्त

आपां एक गयंद राव जद पंच समप्पै
आपां पांच तोषार राव पंचास सु अप्पे

---

१ किसी बात में बराबरी नहीं कर सकते। २ कवित्त का अर्थ-गर्जना करते हुए हाथी दीजिये, नाना प्रकार के घोड़े दीजिये, गाँव, खजाना, थाल भर कर के रत्न दीजिये। विस्तृत भूमि दीजिये, जिसमें हीरे और सोना उपजता हो। याचक को नांही मत दीजिये। इस प्रकार उत्साह पूर्वक कामिनी कहती है कि हे भट्टों को रण में समर्पित करनेवाले, डींभू (?) सहित दान दीजिये, परन्तु हे जगदेव, दान में अपना शीश न दीजिये।

आपां हीर सुचीर सोव्रन रूप मोताहल़
आपां धन अगिणित थाल़ भरि भरि चित्त उज्ज्वल़
दीजिये सीस कंकालि़ नै काची देही अति घणो
इण दान राव पौंचै नहीं सीस न थायै चोगुणो ॥[१]

तरै राणी बोली, इसी भाटणियां घणी ही आवसी, माथो किण किणनें देस्यां। माथा ऊपर हीज मंडाण[२] छै। इतरी बात करतां मांहे जगदेवजी राजा फूलरी बेटी परणिया छै, जिणरो नाम फूलमादे छै। तिका दुहागपणै छै। तिणसू कदेही बोलणरो काम नहीं थो। तिण कह्यौ, महाराज बड़ी बात विचारी। इण दानसू सिधराव हारै, तिको राजरो सीस नै बीजो म्हारो सीस दोनूं हीज दीजै। आठ माथा कठासूं देसी। तरै जगदेवजी कह्यौ, स्याबास रजपूताणी, तोनें इसो हीज चाहीजै। पिण म्हारो सीस कंकालीनें द्यू नै थे पाछे तिरस्यो नै तारस्यो[३]। पाछली जाबता थे राखो। इतरो कहि नै डीक[४] नै ऊभी राखी नै कह्यो, थे थाल़ मांडो, थे जायनें देज्यो।

---

१ कवित्त का अर्थ—अपन (हम) जब एक हाथी देंगे तो राव पचास दे सकेगा; हम पांच घोड़े दे तो राव पचास देगा, हम हीरे, सुन्दर वस्त्र, सोना, चांदी, मुक्ताफल, अगणित धन, उज्ज्वल चित्त से थाल भर भर करके देंगे तो भी राव उनसे कई गुना अधिक दे सकेगा। अतएव, ककाली को शीश देना चाहिए, कारण, एक तो शरीर नश्वर पदार्थ है और बार-बार मिल सकता है, दूसरे, इसी दान में राव हमारी बराबरी नहीं कर सकेगा, क्योंकि शीश चौगुना नही हो सकता। २ ससार का प्रपंच। ३ पीछे से अपनी खुद विचार लोगे। ४ बाला।

इसो कहि बड़ग काढि सीस उतारियो। तरै फुलमादे राणी थाल सालू[1] सूं ढाकि नै पोळी आई। तरै कंकाळी कह्यो :—

कवित्त—छप्पै

किसे असूधो कज्न, किनां निद्रां भर सोयो
कै हुवौ चित्तभंग, किनां रावां दिस जोयो
हूँ कंकाळी भट्ट, सती असती नर पेखूं
स्वर्ग मर्त्य पाताळ, देव नर नाग परेखूं
विक्रम भोज पूठै मही, जस ज्यारो मन भावियो
कंकाळी कहै फुलमादि नै, (थारो) रावत के मन आवियो ॥[2]

तरै फुलमादे बोली :—

कवित्त

राजदेव अवतार, अभरि करि बास समत्थं।
तिणनैं अप्पण दान, कहा दीजे वहु हत्थं।

---

१ थाल ढकने का वस्त्र। २ कवित्त का अर्थ—कैसा असम्भव (कठिन) कार्य किया है, अथवा आज यह भर नींद सोया है, अथवा पागल तो नहीं हो गया, या राव से स्पर्धा करके ही ऐसा किया है। मैं भट्टिनी, ककाली हूँ और सत्य और असत्यवान नर की परीक्षा करती हूँ—स्वर्ग, मर्त्यलोक और पाताल के देव, नर, नागों की परीक्षा करती हूँ। विक्रमादित्य भोज के बाद में जिसका यश मेरे मन भाया है, वह तेरा पति है जो राजा के मन में भी चढ़ा हुआ है। ऐसा ककाली ने फुलमादे को कहा।

सिद्धराव जैसिंघ कहा तसु होड कराई
नह पूजै मंडली, तो कहा पंमार गिणाई
इम जाण दान मो हत्थ दे, परगट थाल पठावियो
फुलमादे भणे कंकालसूं, रावत मो मन आवियो ।[1]

इसी बात करि थाल उघाड़ै तो हड़-हड़[2] हँसतो देखिनैं मुळकतो माथो पाग मोत्यां समेत सीस देखिनैं कंकाळी हँसी । थाल उरो हाथ मांहे लीधो नै कह्यौ, थारो सुहाग भाग चूड़ो कायम[3] । इसी आसीस दे बोली, धड़ ऊपरा माखी बैसणरो जतन राखिज्यो, सिधरावनैं हराय भूडो मूंढो[4] कराय आवू छूं । जगदेव ज्यूं-रो-ज्यूं जीवतो करस्युं, पृथ्वी माहें अमर नांव करस्युं । इतरी भळावण[5] दे थाल लोवड़ी[6] सू ढकने चाली । विचै मारग मांहे जगदेवरो भाणेज सगतसिंह खीची छै । जिणरी पोळ आघै थाल लीधा कंकाळी आई । तरै सगतसिंह खीची कह्यौ, देखां मामेजी कासूं दियौ । तरै थाल खोल

---

१ क्षत्रियों में देवता के अवतार (सिद्धराव) सामर्थ्यवान राजा के पास रह कर उसी को अपने हाथों से बहुत सा दान करना ठीक नहीं। परन्तु अब सिद्धराव जैसिंह उसकी क्या बराबरी करेगा ? यदि क्षत्रियों की मण्डली में पूजा न जाय तो पँवार कैसे गिना जा सकता है ? ऐसा जान कर मेरे हाथ थाल देकर भेजा है । फुलमादे कंकाली से कहती है, यह रावत (मेरा क्षत्रिकुलभूषण पति) मेरे मन भाया है । २ खिलखिलाता हुआ । ३ सौभाग्य, भाग्य और चूड़ा सुरक्षित रहे । ४ लजित मस्तक । ५ सिखावन । ६ ओढनी ।

नै दिखाल्यो । तरै सगतसिंह एक आंषदिसी रुषो[1] छै । तरै देखती आंख थी तिका आंगुली घालिनै काढि थाल मांहे मेली नै कह्यौ, मामांजी होड नहीं, पिण इतरी दुगाणी[2] म्हारी ही ले पधारौ । नेत्र ले लोवड़ीसूं ढकिनै दरबार आई । आगै जैसिंह देखै छै, जाणें ही ल्यावे त्यूं ल्याई । देखिनै राव बोल्यौ, कंकाली ल्याई तो थाल मांहीज, म्हाने दिखावो ज्यूं चोगुणों द्यां । इतरो कह्यां लोवड़ीरो वड़ ऊंचो कियो, देखै तो जगदेवरो सीस छै, नै पाखती नेत्र झलझलाट[3] करै छै । रावनें कांपणी छूटी । कंकाली कह्यौ, हिवै चौगुणों दान दे । तिको एक तो थारो सीस, पटराणी, पाटवी कंवर, पाटवी घोड़ो यां च्यारां रो सीस उतारि नै मौनें दे नै च्यार नेत्र दे । राजा उठि मांहे राणी कनै गयो । राणीनें कह्यो, जगदेव ऊपरि[4] नांम करै छै । रांणी कहै, बीजी होड हुवै, पिण सीसरी होड नहीं । ऊपरां नाम हुवौ भावे नीच नांव हुवो । अै वचन संभालि नै कंवरनें आय कह्यौ, कंवर ही नाकारो कियो । तरै बाहिर आय कंकालीने कह्यौ, म्हारो सीस नै घोड़ारो सीस त्यार छै । भली वात । हाथ सूं उतारिने द्यो । तरै राजा कह्यौ, थे उतारिल्यो । तरै कंकाली कह्यौ, हूं कोई मांणस-खाणी[5] न छूं, भिच्छक छूं, दीधो लू छूं । राजा कह्यो, औ तो काम म्हांसूं न हुवै । तरै कंकाली बोली, एक काम करो, थांरो सीस बगस्यौ[6], ऊंचा मालिये चढ़िनै हेलौ[7] करौ, जगदेव पंवार जीत्यौ, हूं हारियो । इसौ सातवार कहौ नै थाल नीचै सातवार नीसरो । राजा कह्यौ, भली वात । राजा

---

१ निस्तेज, काना । २ नजर, भेंट । ३ झलझल, देदीप्यमान । ४ बढ़ कर । ५ मनुष्यभक्षिणी, राक्षसी । ६ छोड़ा । ७ घोषणा ।

सातवार थाल नीचै निसरियौ। पाछी थाली ले जगदेव री पोल आई। सगतसिंह एक आंख दीधी तिणनें दोनूं आंख दीधी । तिणरै दोनूं ही आँख्यां हुई नै धड़ ऊपरा सीस चाढ़िनै अमीरो छांटो नाख्यौ। जगदेव खंखारो करितौ उठ बैठो हुवौ। नै दांन भैरूं छूटणरो मॉग्यो। तरै काला भैरूंने छोडयो । तठा पछै खोड़ो भैरूं कहीजै छै । पछै जगदेवनै घोड़ो चाढि साथे कंकाली होयनें सिद्धरावरे दरबार आया। मुजरो कियौ । तठे राजा कह्यौ, मात, हिवै म्हारे कंवररो, राणीरो, घोड़ारो सीस ल्यौ, थांरी दाय आवै[१] तो परग्रह[२] सुधा सीस लो। राजा सीस उतारणरी त्यारी कीधी । तरै कंकाली कह्यौ, उवा पल वेला गई[३] । हिवै ठंडा पाणीसू जावो मती[४] । कंकाली कहै—

कवित्त

जो न भांण ऊगमैं, जो नवि वासग धर झलै
राम वाण न ग्रहै, करण पारथ्थो जु मुलै
ब्रह्मा छोड़े वेद, पवन जा रहै पुलंतौ
चन्द सूर ना वहै, रहै किम अमी झरंतौ
पंमार नाकारो नां करै, मेर-समो जाको हियौ
कंकाली कीरति करै, सीस दान जगदे दियौ ।[५]

---

१ पसंद आवे। २ कुटुम्बजन। ३ वह साइत ही गई। ४ व्यर्थ को जान मत दो। ५ चाहे भानु न उदय हो, चाहे शेषनाग पृथ्वी को धारण करना छोड़ दे, चाहे रामचन्द्र समुद्र का मानमर्दन करने के लिए बाण न चढ़ावें, चाहे कर्ण अर्जुन को परास्त कर दे, ब्रह्मा वेद को धारण करना छोड़ दें, पवन बहना छोड़ दे, चन्द्र और सूर्य अपनी दैनिक यात्रा को छोड़ दें

दूहा

संवत इग्यारह इकांणवै, चैततीज रविवार
सीस कंकाली भट्टनैं, जगदे दियो उतारि ॥

पछै कंकाली जैसिंघ कनै ही राखी। जिण कंकालीरै सात बेटी छै, सो कनै छै। आप कंकाली रावणखंडी[1]। तिण कंकाली इसो विरुद[2] कीधो।

सिद्धराव जैसिंघजी, खांप सोलंखी, तिणनैं छिन्नूं हजार गाँव हुता। पोरसो[3] एक कोठार मांहे हुवौ। संवत ११३३ तपिया, नै चोटी मांहे गंगा बहै। महारुद्ररौ अवतार हुवौ। सिद्धरौ पिण वर थो, तिणसूं सिद्धराव कहाणो। इसो सिद्धराव हुवौ। भीम भार्या, निर्मलदे पुत्र। कर्णराजा भार्या, मिलणदे पुत्र। सिद्धराव जैसिंघदेव हुवौ, तिण मालवापति, नरवरराजानैं बांध्यौ, मोहबक पाटणधणी मदभ्रम राजानै जीत्यौ। जिणरै ३२ राजकुळी[4] सेवा करै। संवत् ११९९ सिद्धराव जैसिंघ वैकुण्ठ गया। सिधराव जैसिंघदेरै प्रधान कुशल मंत्री साजनदे हुवौ।

[इति श्री जगदेव पंवार री वार्त्ता सम्पूर्ण]

और चन्द्र में से अमृत झरना बन्द हो जाय, परन्तु जिसका मेरु के समान अचल हृदय है, ऐसा पँवार वीर जगदेव याचक को नांहीं नहीं कर सकता। कंकाली कीर्त्तिगान करती है कि जगदेव ने शीश-दान किया।

१ रदन-खंडिता, टूटे हुए ओठवाली। २ प्रशस्ति, यश। अद्वितीय पौरुष वाला। ३ क्षत्रियवंशी।

जगमाल मालावत

—++++—

नगर महेवै रावळ मलीनाथजी कंवर जगमालजी राज करै। तिकै रावळजी तो पीर[1] हुवा, तिके भजन समरण मांहे रहै। राज जगमालजी करै। तिण समीयै अहमदाबादरो पतिसाह महमदवेगड़ो राज करै। तिणरै वेटी गींदोली छः। तिण पातसाहरै उमराव एक हाथीखांन पठांण, तिको मोटो उमरांव, मुनसुबदार। तिणनैं पाटनरो सोबो[2] दियो। तिन निपट करड़ो[3] अमल[4] कीयो। तठै कोस तीस पाटणथी[5] सोभटो नगर। तिणरो धणी तेजसी तूंवर, तिको धाड़वी[6]। तिण ऊपरां अचाचूक[7] गो हाथीखांन असवारी लियां आयो। तठै तेजसी तूंवर रजपूत सो तीन (३००) सू बाज नै[8] काम आयो। हाथीखांन गांव लूंटियो। तेजसीरी अंतेवर[9] भटियाणी थी। तिणरै वेटी बरस १३-१४ मांहे, तिका वेढ[10] हुंतां मांहे वेटी ले नीकळ गई। तिका कुसळे पड़ी[11] पीहर गई, नै पठांण गांव मारि नै पाछो पाटण गयो। नै कोई नारायणजी रा चक्र[12] थीं तेजसी तीन सै रजपूतां

---

१ सिद्ध पुरुष। २ सूबा। ३ बहुत कठोर। ४ शासन। ५ अपादान का चिन्ह, पाटण से। ६ डकैत। ७ अचानक। ८ लड़ कर। ९ स्त्री, अन्तःपुर वासिनी। १० लड़ाई। ११ सुरक्षित अवस्था में। १२ दैव सयोग से।

सूधो भूतरी गति पाई। तिको आपरै गाँव असवारीरी जलूस करि आथण[1] रो आपरै मैहलां आवै, बड़ी मजलिस करि हरहमेस आवै। गाँव सूनो पड़ियौ छः । दिनरै पोहर पाखती[2] रा गावांरा गोरी[3] बैसे, रमै खेलै नै गायां चरावै।

तिण समीयै एकै दिन एक योगीसर आयो नागो; गोरी बैठा देखि मैलां मांहे आयो नै झरोखे बैठो। तिसै संझ्यारा गायां ले नै गोहरी[4] घरांनै घिरिया। तरै जोगीसरनै गोहरयां कह्यो, बावाजी किणही गाँव जावो परा, अै महल तो सूना छः नै रात पड़ियां मैलां रो धणी तेजसी तूवर आवै, जिको भूतरी गतिमें छैः । थे धोको खास्यो। पछै थे जांणौ। तरै जोगेसर सुणि नै मन मांहे विचारियो, देखां भूतमाया किसीएक हुवै छः। तरै महिल मांहे हीज आसण कीधो।

रात घड़ी दो एक गई, इक डंको सुणियौ। तरै जोगेसर जांण्यौ कोई सिरदार आवै छैः। तिसै हाथीरी बीरघंट[5] सुणी, तुररी सहनाई सुणी, घोड़ांरी कल्हल[6] सुणी। चराकां[7] सौ एक मूंढा आगै हुवां, चॅवर दुलतां, हाथी माथै बैठो सिरदार दीठो। तिसै कैइक असवार महिलां आया। तिसै फरास आय मैलां आगै चौक मांहे जाजम दुलीचा[8] विछाया, गिलमां विछाई, तकिया लगाया। तिसै तेजसीजी गादी तकियां आय बैठा। जोगेसर तमासा देखै छैः। तिसै कैइक

---

१ सन्ध्या, सूर्यास्त के समय। २ आप-पास के। ३ ग्वाल, गोपालक। ४ गोरी (ग्वाल) का रूपान्तर। ५ हाथी के शृंगार की बड़ी घंटी। ६ कोलाहल। ७ चिराग़। ८ गलीचा।

चाकर महिल मांहे ढोलियो बिछावणनैं आया। आगै जोगेसर आसण कीधां बैठो छैः । तिकै महिलवाड़ियां[1]रा लक्खण, तिणां जोगेसर आसण कीधां बैठो छैः तिकै महिलवाड़ियां उठावणो मांड्यो नै रीस करणी मांडी[2]। पिण जोगेसर आसण उठावै नहीं । तिसै औ सबद तेजसीरै कांने पड़ियो नैं कह्यौ, किणनैं स्यूं[3] कहो छो। चाकर बोल्या, एक कोई जोगी सरभषड़ो[4] मांणसियो[5] बैठो छः। तरै तेजसी कह्यौ, कोई इण जोगेसरनैं क्यूं ही कहो मती । तिसै तेजसी साद[6] दियो, बाबाजी, उरा[7] पधारो, अठै बातां करां । तरै आसणसू उठि तेजसीजी कनै बैठो । आगै डावीनै जीवणी मिसल रजपूत ढालांरा कड़ा देनै दरबार बैठा छैः। रसोड़ादार रसोड़ै लागा छैः। चरू कड़ाहा चढाया छैः। खेह दीधी छैः। रोटा खेह मांहे दावै छैः। मांस, बूटा, सोहिता हुवै छैः। तेजसी नै जोगेसर बातां करै छैः।

तिसै आधी रातरी बलि[8] तयार हुई नैं पाँतियो[9] दीधो, रूपा[10]रो बाजोट[11] बिछायो । तेजसी तीन सै रजपूतांसूं पांतियै बैठा, थाल दीधा । तिसै जोगेसरनैं पिण आपरी पाखती बैसाण्यौ, पतर[12] मांहे परूसगारो[13] कियौ। मनुहारे मनुहारां जीमिया। तठै जोगेसर जांण्यो, अै भूत माया छैः, कि जांणीजै जीमण कांई छैः। यूं जांण हाथ खांच बैठो। तेजसी कह्यौ, बाबाजी, अरोगौ[14] क्युं न

---

१ महल में काम करने वाले नौकर चाकर। २ करना शुरू किया। ३ कुछ भी। ४ सरभंगी, वीतराग। ५ मानव योनि का। ६ शब्द। ७ इधर, यहाँ। ८ मांस का भोजन। ९ पंक्ति। १० चांदी। ११ पट्टा, चौकी। १२ पत्तल। १३ परोसना। १४ भोजन करो।

छो। जोगेसर कह्यौ, अबार तीजै पोहर रोटी खाई थी, सो गाढो[१] चांकां[२] छूं। इतरो कहि पतर ढक मेल्यौ। तिसै घड़ी दो मांहे सगळो साथ जीमियौ। चळू[३] कीया, पांन, लूंग, मुखवास[४] दीधा। तिसै तेजसी ऊंचै ढोलियै पौढण सारू[५] उठियो नै जोगेसरनै पिण कह्यौ, थे पिण ऊंचा आय बैसो। तरै जोगेसर ऊंचो आसण मांड तेजसीजी कनै बैठो छः। तठै तेजसो बातां करै छः। तठै कह्यौ, बाबाजी, एक म्हारो सन्देसो तो मोनैं निवाजो[६]। तरै जोगेसर कह्यौ, बाबा, तुम कहो। तेजसी कहै छः—हूं इण गांव नै इण मैळांरो धणी तेजसी तुंवर छूं। तिको हाथोखांन पठांण ऊपरां आयो, वेढ कोधी, धार तीरथ[७] करि तीन सो रजपूतांसूं खेत पड़ियौ[८], अगति गयौ। प्रेत तीन सै हुवा, तिकै अै रजपूत थे दीठा हीज छै। तद मैं श्रीपरमेस्वर जीरै दरबार पूछियौ, म्हाराज, म्हे खत्रीधर्म धारातीरथरी मौत पाई, नै भूतरी गति दीधी, तिको किसै प्रायछित[९]। तरै कह्यौ, असुररै हाथ मौत पाई, तिणसूं अगति लाधी। अबै थारी बेटी परणाय कन्यावळ[१०] लै, तो वैकूंठ आवै। तिको बाबाजी, म्हारे मिनखजमारा[११] री बेटी भटियाणीरै पेटरी नीपनी[१२] मामांरै छै, तिका परणै कुण, तिणसूं औ सन्देसो कहणौ। नगर महेवै राठोड़नाथ रावळ मलीनाथजी कंवर

---

१ खूब। २ छका हुआ, तृप्त। ३ भोजनान्त में आचमन। ४ मुख शुद्धिकारक द्रव्य। ५ के लिए। ६ कृपा करो। ७ रणक्षेत्र में वीरतापूर्वक युद्ध करके सुगति-लाभ करने को 'धारा तीरथ' कहते हैं। ८ रणक्षेत्र में पड़ा। ९ पाप के फल से। १० कन्यादान का पुण्य। ११ मनुष्य योनि की। १२ पैदा हुई।

जगमालनै कहिज्यो,बडो सगो छै, म्हारी बेटी इथा महला आय परणीजे, तो मोनै वैकुंठ हुवै। इतरो सन्देसो बावाजी कहिज्यो। नै तो विना बोजारी अठै आवणरी आसंग[१] नहीं छै। जोगेसर प्रमांण कीयो[२]। तिसं जोगेसरनै पगे लागा। तरै तेजसी चाकरानै हुकम कीयो, जावो जोगेसरनै मेहेवै पोहचाय आवो। कोस पचासरो आतरो छै। चाकर मिनखा सूता ही जोगेसरनै महेवारी हाटां माहे मेल्हि[३] आया।

भाक फाटी। जोगेसर जागियो। देखै तो लोक फिरै छः। देवरे[४] झालरियां बाजै छः। जोगेसर संखनाद पूरै छः। तद एकण नैं जोगसर पूछियो, बावा, औ किसो नगर छः। उण कह्यौ, नगर महेवो छः, रावल मालोजी कंवर जगमालजी धणी छः। जोगेसर पूछियो, कंवर करै[५] ही वारै आवे छः। तरै उण कह्यो, अवार घड़ी एक दो दिन चढियां बाग पधारसी। तिसै जोगेसर स्नान करि, कालम्नि[६] पढि बभूत चढाई। तितरै[७] जगमालजी रजपूत सौ च्यार (४००) लियां बाग पधारै छः। तरै जोगी पिण लारै[८] हुवौ। बाग मांहे गया, तरै जोगी पिण बाग मांहे गयो। तरै कंवार जोगेसर देखि नमो नारायण शिवाय कियो नै पूछियो, कठीसू[९] आया। तरै जोगी-सर नैड़ो आय नै कह्यौ, बावा कंवर, एक तो संदेसा है। जगमालजी बोल्या, कहो किण कह्या है। तरै जोगेसर कह्यौ, इहां थी कोप पचास ऊपरां किस तुंवर को गाव भी थो। कंवर कह्यो, तेजसी तूवर आछो

१ सामर्थ्य। २ वचनबद्ध हुआ। ३ छोड आये। ४ देवालय में। ५ कभी। ६ योगियों के इष्टसम्बन्धी मन्त्र। ७ तब तक। ८ पीछे। ९ कहां से।

देस-रजपूत थो, तिण तुरकसूं वेढ करि कांम आयो। तिके सुणां छां भूति गति पाई। जोगेसर कह्यौ, तो बाबा, तेजसी का संदेसा है। तेजसी कही तिका नै आपरी वाघू बाघू[1] पेटसूं[2] सरब कही कै औ संदेसो कह्यौ छः,—बड़ा सगा छो, म्हारी बेटी मामारै छः; तिको बडो रजपूत छः तो मोनै गति मेलज्यौ[3]। बाई परणियां म्हारी गत होसी। इसी बात सुण जगमालजी मन माहे राखी नै जोगेसरनैं आटो दिरायो नै सीख दीधी।

अबै दिन ५-७ नै नवलखै घोड़े पिलांण मंडायो। जगमालजी इकेला ही ज असवार हुआ। तिकै दिन घड़ी एक थकां महलां पोहता-सोभटै पोहता। घोड़े सूं उतरिया, अमल कीधा नैं टेवटा[4] लीधा तितरै घड़ी एक दो गई नै एक डंको सुणियौ, घोड़ां री पोड़ि[5] हौकार[6] सुणिया। ज्यूं जोगेसर बात कही थी, तिम हीज दीठी। तितरै कंईक भल-घोड़िया[7] आगै आया। त्यां जगमाल मालावतनैं आगे दीठा था, त्यां जाय वधाई दीधी। तरै तेजसीजी बहुत राजी हुआ। इतरै तेजसीजी पिण आया। जुहार[8] हुआ। जद तेजसी भूतांने पिण हुकम कीनों, जावो बाईनैं लेय आवो। नै जगमालजीने बिछायत करि पधराया। तिसै रात घड़ी चार जातां बाईने ले नै आया। बिचै आवतां बाईने भूतां सगली बात कही—थारो बाप तोनै परणावसी जगमाल मालावतनै, पछै गति

---

१ अधिक, बढ़ा कर (बात)। २ अपनी ओर से। ३ सद्गति करवाना। ४ शौचादि से निवृत्त हुए। ५ घोड़ो के खुरों की ध्वनि। ६ कोलाहल। ७ अच्छे घोड़ों के सवार। ८ मिलन के समय नजर, न्यौछावर।

मिलसी। तिण बाईनै मेलाँ माँहे वैसाणी। भूतणियाँ आई। व्याह री आरी-कारी[1] माँडी, पीठी[2] कीधी, पीठीरा गीत गाया, वेह[3] चौंरी[4] बंधाई। राति पोहर १॥ जाताँ फेरा[5] लीधा, मौड़[6] बाँधिया, कर-मूँकाँवणी[7] री वेळा तेजसी कह्यौ, कँवरजी राजरै जोईजै[8] तिको माँगौ। तद जगमालजी जाण्यौ, मोनै परणाई तिका मनुष्य छः किना[9] भूतणी छः, इणरी निधै[10] करणनै कह्यौ, एक वार रजपूताँणीसूँ दोय बात करूँ, पछै माँगूँ। तदि भूतणियाँ मझिल्यों[11] गावतीं ऊँचा माळियै गया। तठीं जांणी तो, पिण बूझिया, थे मिनष छो कै भूत छौ। तरै तुँवर हाथ जोड़ी मुजरौ करि नै कह्यो, हूँ मिनष छूँ, मामारै घरे थी। तठासूँ ल्याय नै परणाई छः। इतरौ सुणि नै वारै आया। नै जगमालजी तेजसी कनै माँग्यौ,—हूँ रजपूत छूँ, घणा आटा-नाटा[12] छः, कोई सबळो[13] काँम पड़ै वेढ-राड़ि[14] रौ, तठै रावळा[15] रजपूत मदत माँहे आवै। और म्हारे काँई कुमी[16] नहीं। तरै तेजसी तीन सै रजपूताँ नैं भेळा[17] करि कह्यो, जिको म्हारौ लूंण-पाँणी[18] खाधो छः, तिको जगमालजी याद करै, तेजसीरा रजपूताँ वेगा आवज्यो, इतरो कह्याँ

---

१ लोकाचार। २ उबटन। ३ विवाह-वेदी में सौभाग्य-कलश। ४ च्यौंरी अथवा विवाह-मंडप। ५ भाँवरी। ६ वर का मुकुट। ७ वर-वधू का विवाह के उपरान्त कर-ग्रहण छुड़वाने का लोकाचार। ८ चाहिए, आवश्यकता हो। ९ अथवा। १० तलाश, खोज। ११ विदाई का गीत। १२ कष्ट और आपत्ति के समय। १३ कठिन कार्य। १४ युद्ध अथवा झगड़ा। १५ आपके। १६ कमी। १७ एकत्रित। १८ नमक-जल, अन्न-जल, दाना-पानी।

ऊभो रहै, तिणनैं लूंण हराम छः। तद रजपूतां प्रमांण कियौ। नै तिसै तेजसीनै पालखी उतरी, तिको रांम रांम कहि नै तेजसी वैकुंठ गयो। तद जगमालजी भूतां मांहे मुदो[1] थो उमराव, तिणनैं कंवर कह्यो, कोस ५० घोड़ो खड़ियो[2], तिको आलस करै छः, तिणसूं नगर महेवै पोहचायो जोईजै। तदि च्यार भूतांनैं साथे दीधा। तिके पोहचाय नैं आया।

वाग मांहे राते रह्या। दिन ऊगां वागवान साथे भोपति हुल[3] परधांन[4] नै कहायौ, परणीज आया छां, पैसारो, साम्हेलो[5] लीजो। तरै नगर वाजार ओछाड़ि[6] सुखपाल ले नै दास्यां आई। तिके घणां रली-रंग[7] करतां दरवार आया। घणी खुस्याल[8] हुई। गोठां[9] करावै। व्याहरी वात सगली रजपूतांनै कही नै सिरपाव केसरिया कराया, जाचकां[10] नै दुगांणी[11] दीधी। घणा तरंग[12] मांहे रहै छः।

तिण समीयैं हाथीखांन पठांण सुणी, महेवारी तीजणियां[13] निपट सखरी[14] छः। तिणनैं देखणरो कोड[15] घणो छः। पिण जगमालजी

---

१ अगुआ। २ चलाया। ३ मेवाड़ के गुहिलोत वंश की प्रधान ४ शाखाओं में से एक शाखा "हुल" भी है। यह प्रधान भोपति हुल शाखा का राजपूत था। देखो, नैणसी की ख्यात (ना० प्र० सभा) पृष्ठ ७७। ४ प्रधान, मन्त्री। ५ अगवानी करना। ६ पार करके। ७ रंग रलियां। ८ खुशी, आनन्द-विनोद। ९ खुशी के उपलक्ष में भोज। १० याचकों को। ११ दान, बख्सिस। १२ मन-मौज। १३ चैत्र शुक्ला तृतीया के दिन गणगौर का त्यौहार मनानेवाली और गौरी का व्रत रखने वाली कन्याएँ। १४ उत्तम। १५ लालसा।

रो अति भौ[1] घणो, तिणसू जासूस लगाया। इतरै दैवरै जोग जगमालजी भाटियांरै वीकूंपुरै वेर[2] ऊपर दोड़ि[3] गया नै जासूस जाय पाटण कह्यो। तरै सावणरी तीज[4] ऊपरां चढियो तिको पाछिले पोहर वड़ो दोय दिन थकां महेवै तीज मिळी छः, तीजणियां लहर[5] गावै छः। तिसै हाथीखांन हजार पांच (५०००) घोड़ांसू आयो, तिको सात-वीसी[6] साईन्यां[7], डावड़ी[8] वरस १५।१६ मांहे थी। तिके पकड़ि नै पाछो हीज वूहो[9]। महेवारा लोकांसूं कूं ही ज सझियो[10] नहीं। तिसै रात आधी जाता मांहे जगमालजी वैर काढि नगर आया। लोका वाहर घाली[11]। सगळी वात सुणी, पिण जोर कोई चालै नहीं। महेवारै झाड़ां लेह लगाय[12] नै कूस[13] ले गयो। तरै जगमालजी पाघ खोलि लपेटो बाध्यो। वळे आखड़ी[14] लीधी, कपड़ा धोवणा, दाढी सुधरावणी मीयांसू आंटो[15] काढियां करिस्यां। इसी वात मियां सुणी, तरै धूजियो[16]। तद हजार सात-

---

१ भय। २ वैर-प्रतिशोध के निमित्त। ३ धावा किया। ४ राजस्थान में दशहरे के त्योहार के बाद, चैत्र शुक्ला तृतीया के दिन गणगौर का त्योहार बड़े समारोह और आनन्दोत्सव के साथ मनाया जाता है। यह विशेषतः कन्याओं का त्योहार है। इसे "तीज" कहते हैं। ५ राजस्थान का गीत विशेष, सारंग राग का भेद। ६ एक सौ चालीस (७×२०)। ७ सम वयस्का। ८ कन्याएँ। ९ चला गया। १० सजा नहीं, बन पड़ा नहीं। ११ वाहर घाली (मुहा०)=फरियाद मचाई। १२ झाड़ां लेह लगाय (मुहा० = मान मर्दन करके, (वृक्षों पर अपवित्र पदरज लगा कर)। १३ छीन कर। १४ अक्षय प्रतिज्ञा। १५ वैर। १६ कांप उठा।

आठ पषरैत[1] तबलबंध[2], सेर जुवान[3] सीपाही राखिया। कदेक बारै चढै, तद ५०० घोड़ची[4] सुतरनाल[5] रामचंगी[6] लियां चढै। इसी भांत मास दोय बीता। तरै भोपत हुल जाणियो, राजा रा वचन, वळे आंटा नीकळता नीकळै, नै आखड़ो पिण टणकी[7] घाली। तदि घोड़ी व्यावर[8] अढाई सौ षालसै[9], तिण मांहे २५ बछेरा ऐराकी[10] बापता[11]। जिण मांहे तिणरा पेटरा ऊपना[12] टळाया[13]। त्यांनैं रातब[14] देणी मांडी। दोनां ही टंकां[15] सेर दोय घीरत[16], रातब मांडी। धपाऊ[17] धांन दीजै। तिकै बरस एक तांई अपटां[18] चराया। तिकै घोड़ांरी तळियां[19] घीसूं भरीज गई[20]। तठै टाळका[21], आपरै समभा[22] रा,साखैत[23], मोटा पटायत उमराव त्यांनै बछेरा फेरणनै सूंप्या[24]। तिकै पचीस असवार साथै फेरै। कोस पांच फेर पाछा आया। बीजै दिन कोस १० जाय पाछा आया। तिको भोपति हुल रजपूतांनैं कह्यो, बात मन मांहे राखज्यो, कांई तुरकसूं इसड़ी[25] करां, तिका पृथमी प्रमांण[26] रहै। प्रधान कह्यो सु

---

१ कवचधारी। २ घोड़े। ३ शेर-जवान, साहसी। ४ घुड़सवार। ५ ऊँटों पर लदी हुई तोपें। ६ बड़ी तोपें। ७ जबरदस्त। ८ गर्भिणी, बच्चा देनेवाली। ९ खालसा, राज्य में। १० ईराक़ देश के प्रसिद्ध घोड़े। ११ पैदा हुए। १२ पैदा हुए। १३ चुन लिए। १४ घोड़ों का पौष्टिक खाद्य विशेष। १५ समय। १६ घृत, घी। १७ भर पेट। १८ खूब, निपट। १९ तलुवे। २० भर गई। २१ चुने हुए। २२ पसद के। २३ पैजधारी, कुलप्रतिष्ठ। २४ सौंपे। २५ ऐसी। २६ पृथ्वी में यश प्रमाणित रहे।

सगळां कबूल कीधो नै ऊठी[1] दोय अहमदाबाद राख्या जावता[2] करण नैं।

अहमदाबादरो पातसाह महमद बेगड़ो। तिणरी बेटी गींदोली नांम, तिका हिंदू राह[3] मांहे चालै। गणगोर्‌यां दिनांसू गोर[4] मांडीजै, गीत गाईजै। तिण ऊपरां जासूस दोय डोढी[5] राख्या। तिको ऊठी एक आवै खबर ले नै; एक उठै ही जाबनो करै। दिन दो री खबर दे। कोस एक सौ दसरो आंतरो छः। पिण ऊठी दिन दोय मांहे पाछो जावै। इसी जासूस पोहचावै नै तिसी भांति बछेरा सभाया। साठ कोस जाय नै साठ कोस पाछा आवै। तद पचीस असवार गणगोर्‌यां पहिली दिन दोय आगूंच[6] अहमंदाबाद गया। तठै बीज[7] रो दिन, संभ्यारो पूजण, नैं पांणी पीवणनैं गोर काढी। तठै गींदोली चकडोल[8] बैंसि गोर पाछै पांणी पावण चाली। तठै असवार हजार दस जाबतामें पातसाह दीधा। नगारा, ढोल, सहनाई बाजै छः। लुगायां[9] गीत गावै छः। हजारां लेबै[10] गोरां नैणां-सरणै[11] रही छः। धूड़रो डोरो[12] ऊछळियो छः, तिको कोई किणनैं जाणणी आवै नहीं। तिण समीयै तळाव मांहे गोरां मेल्ही छः। तठै भोपति हुल एकेलो असवार हुवो नै चाल्यौ नै बीजा असवार पाषती[13] जाबता सारू[14] राख्या। अठी उठी असवार चार

---

१ सदेशवाहक। २ बन्दोबस्त। ३ प्रथानुसार। ४ गौरी, पार्वती की प्रतिमा। ५ ड्योढ़ी। ६ पहले। ७ द्वितीया। ८ पालकी। ९ स्त्रियाँ। १० के लिए। ११ नैणा सरणै=नेत्रों का लक्ष्य। १२ धूलि का बादल, बगूला। १३ सारे। १४ के लिए।

सळ्वा[1] राख्या नैं हुल ठाकुर घोड़ां छूटारो मिस करि नै अपूठे[2] पगै घोड़ानैं चलायो नैं गींदोली साहिजादी कनै आय बांह पकड़ घोड़ा ऊपर घाली, नै हूल[3] पड़ी। तरै भोपति हुल गींदोली ले जातां कह्यौ, जगमाल मालावतरो रजपूत छूं। तिको महेवा नगर मांहे कोई छो नहीं, तद हाथीखांनियौ सात-बीसी तीजणियां महेवासूं ले गयो थो, तिको सूनै गांवमें सूं ल्यायो थो। नै कंवरजी बीकूंपुर दोड़ि[4] पधारिया था, तरै सूनी जायगा[5] थी ले आयो थो। नै हूं इतरा सिपायां देखतां आगै साहिजादी ले जावूं छूं। अबै ताता[6] घोड़ां रो धणी, ऊकळतै[7] काळजै हुवै, सो वेगो पोचज्यो। तरै तुरकांरी चढी असवारी थी, तिके ज्यूं-रा-ज्यूं घोड़ा लारै मार फीटा किया[8]। तिको कोस एकरो आंतरो पड़ि गयौ। तुरकांरा घोड़ा ठांणै[9] रा छूटा, रातबां-दाणांरा खुराकी था। छांह वांधा रहता, तिके एक-ससिया[10] दोड़ता हांफण लागा। परसेवो[11] गरमी हुई, झाग काछौं चढिया, तंबोल[12] मूढांसूं पड़ै। तिकै घोड़ा थाका पगफाड़ा राळता[13] देखि फोज ऊभी रही। पातिसाहनै खबर हुई। तरै महमद बेगड़ो

---

१ पराक्रमी, उत्तम। २ पीछे। ३ भगदड़, कोलाहल, कुहराम। ४ वैर लेने के लिए आक्रमण। ५ जगह। ६ तेज। ७ ऊकळतै काळजै=व्याकुल कलेजेवाले। ८ मार फीटा किया (मुहा०)=थका कर घोड़ों को हैरान कर डाला। ९ घोड़ों का ठाण (स्थान)—अस्तबल। १० एक सांस से, बेतहाशा। ११ प्रस्वेद, पसीना। १२ मुख से झाग, (फेन) का गिरना। १३ पगफाड़ा राळता (मुहा०)—चौड़े, ओछे, डिगमिगाते हुए, पैर पटकते हुए।

फोजरा डेरा उठै मारग मांहे हीज कराया। हाथ वाढ वाढ[1] खावण लागो, पिण जोर कोई लागै नहीं।

अवै पातसाह फोजांरो सामांन करणो मांड्यो। अवै भोपति हुल गींदोली ऊठीने सूंपि चढाई लीधी। तिकै असवार पचीस नै दोय ऊठी एकै रातिवासै[2] पाछलै[3] घड़ी चार दिन रह्यां महेवा री सींव मांहे आया, जठै कंवर जगमालजी गौर वोलांवण[4] सारू चढिया। असवारी वणी छः, गीतां रा रमिझोल[5] लाग रह्या छः। तठै चोपदारनै वूझियौ, भोपतजी कू नाया[6]। तरै चोपदार भोपतजीरै डेरै जाय रजपूतांनैं पूछियो। तरै रजपूतां कह्यौ, ठाकुर तो कनै[7] आजरो तीसरो दिन छः, सहलां[8] सिधाया[9] छः। तिकै समाचार चोपदार आयनै कह्या। तरै जांणियौ अठेई हुसी, कठै सखरै रूड़ै[10] काम सिधाया हुसी। तिसै असवार निजर चढिया। तरै खवर करै। तिसै भोपतजी निजर चढिया नैं भोपतजी घोड़ासूं उतरि पगे लागा, मुजरो कीयो। नै गींदोली ऊठीसूं हेठी[11] उतार निजर कीधी नै हाथ जोड़ि अरज कीधी। कह्यो, पतिसाह महमद वेगड़ो, तिणरी वेटी साहिजादी छः। तीजणियांरै आंटै[12]

---

१ हाथ वाढ खावण लागो (मुहा०)=क्षोभ और अपमान के आवेश में अपने ही हाथ नोंच-नोंच कर काटने लगा। २ रात्रि के समय। ३ पिछली। ४ किसी समर्थ पुरुष का, असमर्थ की रक्षार्थ, उसके साथ सहायतार्थ जाना। ५ झकझोर, झड़ी सी। ६ नहीं आये। ७ न जाने। ८ सैर को। ९ गये हैं। १० अच्छे, उत्तम। ११ नीचे। १२ वैर-प्रतिशोध।

मांहे रावलजीरा भजनसू[१], कंवरजीरा तेज, प्रतापसूं घणा सिपायां चढिया विचै मूंढो मारि नै[२] ल्यायो छूं। आ वात कंवरजी सुणि अति मौज चढिया। तरै आपरा कड़ा मोती सिरपाव, मोतियां री माळा, असवारीरो घोड़ो, आप कनै सामान थो तिको वगसियो[३] नै सुखपाळ मंगाय गींदोलीनैं वैसांण नगरनैं चाल्या नैं गीतणियां[४] नैं हुकम कियो, म्हांने नैं सहजादी गींदोलीनैं गावो। गीतेरणियां नैं सवागा[५] मंगाय दीया; चूड़ा पहिरावणे हुकम दीयो। तिको गींदोली गवावतां गवावता महिलां दरवार पधारिया। अवै खवास[६] थापी सुखमैं रहै छः।

तरा पछै पातिसाह फोजां भेळी कीधी। वाईसी[७] एक तठा भापर[८]रो सोवायत[९], फोज एक सोरठ[१०]री, फोज एक पाटणसूं हाथीखांन ले चढियो, फोज एक पंचाल[११]सूं चढी। इसी भांति पांच फौज करि असवार हजार अस्सीरै साथसूं पातिसाह महमद वेगड़ो तिण महेवा ऊपर चढाया। तिकै महेवासूं कोस तीन ऊपरां डेरा दिया। पहाड़ांरा मोरचारी मारसूं अळगो[१२] ऊतारो लीयो। तरै जगमालजी घोड़ो हजार ३/४ मेलो कीयौ। तठै जांणियौ असुरांरी फोजां घणी, तरवारियां लड़िया पिण पावां नहीं। तरै जगमालजीनै

१ प्रताप से, बल से। २ मूंढो मारिनै (मुहा०)=मुह मार कर, साहस करके। ३ बख्सीस की। ४ गीत गानेवाली स्त्रियों को। ५ सुहाग-सम्बन्धी वस्त्राभूषण। ६ रखैत, पासवान, प्रेमपात्री। ७ सेना। ८ पहाड़ की। ९ शोभायमान। १० सौराष्ट्र प्रान्त की। ११ पांचाल प्रान्त की। १२ जुदा, अलग, दूर।

तेजसीरा रजपूतांरी बात याद आई । तरै लापसी, बाकुळा[1], तिलट[2], दाळिया[3], सोंकुळियां[4] कराई मण सै-पांच अथवा छः सै मण धांन रंधायो[5] । पछै दारूरी तूंगां[6] मण ५०/६० री भराई, कसूंभो[7] मणांबंध[8] कढायो, तिजारो[9] मणाबंध कढायो । तिसैं राति घड़ी च्यार गई । तठै ताळी दीधी तीन नै जगमालजी कह्यौ, तेजसोजीरा रजपूतां, आ थांइरी वेळा छैः, बेगा आज्यो । इतरो कहत-समांन तीन-सै रजपूत प्रेतरी गति मांहे था, तिकै आया नै वळे[10] कैइक साथे लेनै आया। तिजारो, कसूंभो, दारू पाई । लापसी, तिलवट, बाकुळा, दाळिया सरजांम[11] कीधो थो, तिणसूं धपाय[12] आंधा कीधा[13] नै मस्त हूवांनै तरवारियां हाथां मांहे दीधी। तरै जगमालजी कह्यौ, लोह करो[14] तिको म्हांरो नांव लेनै करिज्यो नै कहिज्यो, "आ ही जगमालरी तरवार" । इतरो सुण भूत अमलांसूं आंधा हूवा थका तुरकांरी फोज मांहे पड़िया । तिका "जगमालरी तलवार" कहिता जावै नै नर, कुंजर, हैवर एके झटकै कितरा एक ढाहै[15]। जठै कितरा एक जीव लेनै भागा । पातिसाह जीव लेनै भागो नै घणा मारिया नै जगमालजीरी फतै हुई । नाठा[16] तिकै अहमंदाबाद

---

१ उबाले हुए नाज के कण । २ तिल । ३ पीसी हुई दाल की पकोड़ियाँ, बड़े । ४ तेल में तली हुई चपातियाँ । ५ पकाया । ६ हौज । ७ द्रवरूप में घोटा हुआ अफीम का पेय । ८ मणों के परिमाण में । ९ एक मादक पेय । १० फिर । ११ बन्दोबस्त । १२ तृप्त करके । १३ आंधा कीधा (मुहा०) छकाकर अधा-धुंध कर दिये । १४ लोह करो (मुहा०)= वार करो, तलवार चलाओ । १५ गिराते हैं । १६ भागे ।

गया । लाज सरम छोडिनै भागा नै कहण लागा, यारो, कोई मुनी यादम[1] लडै तो तिण सैं लड़ियै। पिण, क्या जांणां केते ही जगमाल थे। "जगमालरी तलवार" कहै अर[2] मारै। इह तमासा अजब देखा। हिवै पातसाह हीयो हेठो घालि[3] अबोलो[4] रह्यौ नै कह्यौ, जिसके पीछे खुदा ई[5] मदत करै तिणसूं जोर कोई चलै नहीं। यारो, रजपूतांसूं आंटा न करियै। तठै राते जनांनै पातिसाह गयौ, तरै हुरमां पूछियो,—

बीबी पूछै खांननै जुध कितरा[6] जगमाल ।
पग पग नेजा पाड़िया[7] पग पग पाड़ी ढाल ॥

अठै जगमालजी री फतै हुई। भूतांनैं सीख दीधी। गींदोलीनैं खवास थापी। तिको गींदोली[8] गाईजे।

इतरी वारता। संवत् १३२५ चैत सुदी ३ मंगलवार ल्याया, औ विरुद[9] आयो। जगमालजी नै गींदोलीरी बात मूरमूल[10] सूं कही।

[इति श्री गींदोली री बात सम्पूर्णम्]

---

१ मानव या आदमी। २ और। ३ हियो हेठो घालि (मुहा० =हृदय हारकर, मुंह की खाकर, लज्जित होकर। ४ चुप। ५ भी। ६ कितने। ७ गिराये। ८ अहमदाबाद के बादशाह मुहम्मद बेगड़ा की लड़की गींदोली के हरण के पीछे राजस्थान में इस वृत्तान्त का स्मारक गीत "गींदोली" नाम से प्रसिद्ध हो गया, जो गणगौर के त्यौहार पर अब भी गाया जाता है। ९ प्रशस्ति, प्रसिद्धि। १० जड़-मूल से, आदि से।

वीरमदे सोनंगरा

—○:o:○—

गढ जालोर सोनगरा वणवीरजरै कंवर दो हुवा। बडो कंवर कांनड़दे, छोटो कंवर रांणकदे। टीकै कांनड़देजी वैठा। सुखै राज करै। तिके एकै समै सिकार चढिया। तिके जालोरसूं कोस सात तथा दस ऊपरै गया। तठै राति पड़ी। कनै एक खवास रहयो। तिणरो नाम बीजड़ियौ। तारां रावजी नै वीजड़ियो चाल्या जगलरै विचै एक देहरै आया। वासौ लीधो। देहरैमें पाखाणरी पूतली, सा घणी रूड़ी फूटरी[1]। कान्हड़देजी उणरै रूप दिसी[2] घणो गोर करि जोवण लागा। तिण समै कोई देवरै जोग उवा पूतली थी तिका अपछरा हुई। तरै रावजी कह्यौ, थे कुण छो। तरै उवा बोली, अपछरा छूं, मै थांनै वरिया[3] छै। पिण म्हारी आ बात किणी आगै कही तो परी जासूं[4]। तरै रावजी सारी बात आरे[5] कीवी। पछै दिन ऊगां कोस चार ऊपर बराड़ो गांव। तठै सांखलौ सौमसिंध वररौ धणी[6] रहै। तिणरै घरे अपछरा मेली[7] नै कह्यो

---

१ बहुत अधिक सुन्दर। २ की ओर। ३ वरा है, पति संकल्पित कर लिया है। ४ चली जाऊंगी। ५ स्वीकार की। ६ गृहस्थी। ७ भेजी।

म्हे आथण[१] रा आवाँ छाँ, तोरण-थाँभरी[२] तयारी कर राखज्यौ म्हे परणीजण[३] नै आवाँ छाँ। नै रावजी लारे आया। उठासूं चूड़ौ वरी[४] दे मेलियौ, ग्रहणा[५] सर्व मेल्या नै गोधूळकरै साहै जाय परणीया। सुखपाळमैं बैसाँण गढ ल्याया। अलाहिदो[६] महिल एक अभोगत[७] पैली करायौ थौ, तिण माँहे राखी। घणा सुंधा[८] अतर तेल चोवा माँहे कपूर कस्तूरी माँहे गरकाव राखै। यूं वरस दोयनै बेटो हुवो। तिणरो नाँम वीरम दीधौ। दूजी राँणीरै बेटी हुई, तिणरो नाँम वीरमती दीधो। मोटा हुवाँ वरस सात माँहे वीरमदेवौ। तठै पाटरो[९] हाथी मदरो आयो[१०] छूटो। तिको पाधरो[११] दोढी आयो। आगै वीरमदे माहिलवाड़ियाँ[१२] रा टावरांसूं रमतो थो, तिको दोढ़ी कनै बारै भींतर पाखती वीरमदे दोड़ियो नै हाथी लारै दोड़ियो। तिसै माहिलवाड़ियाँरा टाँवराँ कूका[१३] कीया, रजपूताँ पिण कूका कीया, 'कँवरनै मारियो, कँवरनै मारियौ'। तिसै अपछरा झरोखैं वैठी सुणियौ। तरै अपछरा धरती सांमो जोवै तो वीरमदेनै हाथी लपेटियो महे[१४] छै। तरै

१ सन्ध्या के समय। २ विवाह के समय लड़की के घर के द्वार पर लकड़ी का 'तोरण' बांधा जाता है, जिसे विवाह करने को आया हुवा वर मारता है-इसे 'तोरण' की प्रथा कहते है। थाँभ से यहाँ आशय विवाह वेदी के स्तभ से है। ३ व्याहने। ४ वधू का सौभाग्यसूचक हाथीदांत का चूड़ा और वस्त्राभूषण (वरी)। ५ गहने। ६ पृथक, जुदा, एकान्त में। ७ अछूता, नया। ८ सुगन्धित द्रव्य। ९ पाटवी। १० मतवाला। ११ सीधा। १२ महल के नौकरों के। १३ चिल्लाहट। १४ लपटने ही को है।

अपछरा झरोखै बैठी हाथ पसारनै झरोखा मांहि लीधो। तिको रजपूतां दीठो नै सगलांनै अचरज हूवौ। राति पड़ियां रावजी महिलां आया। तद रंभा बोली, अबै म्हांरो मुजरो छै, हूं जावूं छूं, म्हांरी बात कानेकाने[1] हुई नै आपसू कोल[2] कीनो थो। रावजी घणा ही नोरा[3] कीना, पिण अलोप[4] हुई नै जांती[5] कहियो, म्हारा बेटारी हूं मदद मांहे छूं, छांनी[6] थकी रहिस्युं। यों कहि अलोप हुई।

अबै वीरमदे पंजू पायक कनै घाव—दाव[7] सीखै। पंजूसू घणो जीव बांध्यो[8], देह दोय नै जीव एक, लोक इण बिध जांणै छै। तिसै वरस १२ मांहे कंवर हूवौ। तिण समै जेसलमेर भाटी रावलजी लाखणसीजी राज करै। तिणां रै मैल बैठां सांवण[9] बोल्यो। तिण जिनावर क्यों कह्यौ, दिन पोहर एक चढतां सवारौं[10] कांनड़दे सोनगरानै बिस देसी। इसो सांभल नै राइकौ[11] एक ताती[12] सांढि चाढि कागल लिख नै जालोरनै दोड़ायो। रावलजी कह्यौ, म्हारा[13], पोहर दिन चढतां मेहो जाजे, कोस सात-दसरो[14] आंतरो छै। सांढियौ[15] चाल्यौ। तिको दिन घड़ी चार अथवा पांच चढता कोस एक माथै आवतां सांढ थाकी। तितरै वीरमदे मैल चढियां सांढियो निजर चढियो नै कह्यौ, कोइक सांढियो ताती सांढ खड़तो

---

१ हर किसी को प्रकट हो गई। २ प्रतिज्ञा, वचन। ३ निहोरा, प्रार्थना। ४ अन्तर्धान। ५ जाती हुई। ६ गुप्त। ७ दाव-पेच। ८ मोह, स्नेह जोड़ा। ६ शकुन-पक्षी। १० कल प्रातः काल। ११ ऊँट का चरवाहा। १२ तेज। १३ सम्बोधन, मेरे प्रिय!। १४ सत्तर कोस। १५ ऊँट का सवार हरकारा।

आवै छै। सबलो[1] कांम दीसै छै। तिसै सांढियो पिण आय पोतो[2] नै आवत-समा[3] पूछियौ, रावजी, दांतण करि नै आरोगिया कै नही आरोगिया। तद पूछणवालै कह्यौ, रावजी अबै अमल करि नै दूध मिश्री आरोगसी। तरै पोलियै[4] मांहे रावजीनै गुदरायौ[5], भाटीराव लाखणसीजीरौ सांढियौ आयो छै, दोढियां कागद हाथ मांहे लीधा ऊभो छै। तरै रावजी मांहे बुलायौ। तरै ऊठी[6] मुजरो करि कागद हाथ दीयौ नै अरज करि नै हाथ जोड़ि नै कह्यौ, दूध मिश्री मांहे विष छै, देख नै आरोगज्यौ। तितरै खवास दूध मिश्री भेला करि ल्यायौ। तिको कांनड़देजीरै आगै चमक[7] हूंतीज नै तरवाला[8] निजर आया। तरै खवासनै कह्यौ, औ दूध मिश्री तूंहीज पीव जा। खवास नै पहलै दिन चोट घालो[9] थी। तिण रीससू खवास बिस घाल्यौ दूध पिवै नहीं। तरै रावजी दूध मिश्री थो तिको कुत्ती नै पायो। कुतरी[10] मूई। तिसै खवासनै गाढ करि पूछियो, साच बोलि, किण कंवर कै रांणी, प्रधांन, मुंहतै, उमराव, दुसमण, जिण दिरायो, तिणरो नांम लै। तरै खवास कह्यौ, अणहूंतो[11] किणरो नांम कहूं। तद खवासरो जनवन्धो[12] (?) पी लियो। ऊठीनै सिरपाव दे नै रावलजीनै घणी मनुवारां[13] करि कागल लिख पाछो मेलीयो नै लारै राव कांनड़देजी, राणकदेजी, कंवर वीरमदेजी मिसलत[14] कीधी, आंपांसूं रावलजी विगर-सनमंध घणो

---

१ जबरदस्त, बड़ा भारी। २ पहुंचा। ३ आते ही। ४ द्वारपाल। ५ मालूम किया। ६ दूत ने। ७ सन्देह, भ्रम। ८ तेल या घी की चिकनाहट। ९ यातना दी थी। १० कुतिया। ११ झूठा, अनहोता। १२ ......(?)। १३ विनय। १४ सलाह।

उपगार कीधो, घणो आसांन[१] कीयौ, तो इणरो बदलो रावलजीनै कांसू दीजै । तरै कांनड़देजी कह्यौ, बाई वीरमतीरो नाळेर द्यां; गढ़पति छै, मोटा सगा छै । आ वात तीनांहीरै दाय बैठी[२] । तरै घोड़ा पांच, सोना रूपासूं नाळेर मढाय, ठावा[३] उमराव व्यास प्रोहित साथे दे जेसलमेर मेल्या । तिके बडी जलूस कीयां पौता । तठै रावलजीनै खबर हुई, सोनिगरांरा नाळेर आया छै । आ वात सुणि रावलजीनै घणो सोच हूवो नै कह्यौ, म्हां तो सोनिगरांसू भलो कीयो थो, पिण मांहिजै[४] गलै अलवदो[५] छोकरीरो नांखियौ । हमैं ठाकुरे किसू क्रियो चाहीजै । तरै उमरावां कह्यौ, सोढीजीनै पूछौ । आगै रावजीरै ऊमर कोटरी सोढी[६] रांणी छै । तिका डील मांहे माती[७] घांणी रै फेर[८] छै, रूप कुढबी[९] छै, पिण रावलजी सोढीरे बस छै । सोढीजी करै ज्युं ज्युं करै छै । तिण दिसां[१०] उमरावां कह्यौ, सोढीजीनै पूछौ । तरै रावलजी कह्यौ, मूवां[११], पूछाँ कि पाछा मेलां तो भूंडा दीसां । आगै तौ माहिजै सोढीजी घणा ही छै । तरै रावलजी उठ दुमना थका[१२] रावलै[१३] मांहि गया । सोढी पूछियो, तरै नाळेररी बात कही । सोढी

---

१ अहसान, कृपा, उपकार । २ पसन्द आई । ३ प्रतिष्ठित । ४ मेरे (जेसलमेरी भाषा में 'जे,' 'जा' सम्बन्धकारक के सयुक्त विभक्ति-चिन्ह की तरह प्रयुक्त होते हैं) । ५ आफत । ६ इन्दुवंशी भाटी क्षत्रियों की एक शाखा 'सोढा' है, जो उमरकोट के रहने वाले थे । ७ मोटी । ८ तेली की घानी की तरह । कुरूपा । १० इसलिए । ११ सम्बोधन, अरे मरे हुओ ! । १२ व्यग्रचित्त होते हुए, दुखी होते हुए । १३ रनिवास में ।

ला र खाय[१] बोली, हुई साठी नै बुध नाठी[२], किसूं पुरखता हुआ[३] छो, रांडोचा[४] नै करिस्यो किस्यूं, खांणै पीवणे पोहचां नहीं, थे रीसावो[५] मती। रावळजी कह्यो, पाछा मेल देस्यां। तरै सोढी कह्यौ, पाछा मेल्यां थांहरो भलो दीसै नहीं, नाळेर झालो, पिण हेक बांह द्यौ[६], ऊथि[७] जावो तरै सोनगरांरो सामेळो आसै[८], जरै थे कहिया, आछो आछो, पिण सोढांरा तोरणरी होड हुवै नहीं। चंवरी वैसो तरै युंहीज कहिया, हथलेवो झालो तरै कहिया, सोनगरीरो हाथ आछो, पिण सोढीरा हाथरी होड हुवै नही। नै फेरा लेनै तुरत अंग-जीम्यां[९] चढि एथ[१०] आया। रावळजी कह्यौ, भलो २ कहि दरीखानै विराज लगन नाळेर झालि सिरपाव दे विदा कीया। अबै रावळजी जांनि करि नै चढिया। वधाईदारां वधाई दीनो। तरै वीरमदेजीनै रावळजीनै घणो कोड[११] छै। तरै आपरा घोड़ा हाथी सिणगार जलूस कर साम्हा आया, मांहो मांहे जुहार हुवा, बांह-पसाव[१२] कर मिलिया। तरै रावळजी अठी उठी देखि बोल्या, सोनगरांरो सांमेळो सखरौ, पिण सोढांरै सामेळा[१३]री होड है नहीं। इतरो सांभळतसमो[१४] वीरमदेरा डीलमें आग लागी।

---

१ क्रोध खाकर। २ 'हुई……नाठी' राज० कहावत =साठ वर्ष ले लेने पर मनुष्य की बुद्धि नष्ट हो जाती है। ३ वृद्ध हो गये। ४ रांड, अभागिन। ५ कुपित मत होवो। ६ एक वचन दो, वादा करो। ७ ऊथि (जैसलमेरी भाषा)=उधर। ८ आवेगा (जै० भाषा)। ९ बिना भोजन किये। १० यहां, इधर। ११ चाव, लालसा। १२ आलिंगन। १३ अगवानी। १४ सुनते ही।

सोढाँ रो नेस[१] छै, तिके दोड़ा छै। भोमिया-भूंव, धरतीरा वासी[२] त्यांरो सांमेलो आछो, तो रावल मांहे परमेसर[३] नही, गधेड़ाकी वूक[४] छै। सुणियौ थौ त्यूंहीज छै। तरै वीरमदेजी आगै बधि गढ आया, तठै रावलजी तोरण पण त्यूंहीज कह्यौ। चंवरी निपट जलूसरी[५] थी, पिण रावलजी देखनें कह्यौ, चंवरी सखरी सखरी, पिण सोढांरी चंवरीरी होड नही हुवै। पछै हथलेवौ[६] दीयौ नै बोल्या, सोनिगरीरो हाथ आछौ आछौ, पिण सोढीजीरै हाथरी होड न है। औ वचन सोनगरी साँभलतसमाँन भस्म हूवै। आगै सोढीजीरी सोभा सुणी हीज थी। तिसै उतावला फेरा लेनै चालवारी तयारी कीवी। तिसै रावलजी सीख माँगी। घणो ही हठ कीनौ, पिण चढिया। तरै कानड़देजी राँणकदेजी वीरमदेजी तीने मिल बात कीनी। ऊपगार ऊपराँ बाई दीनी, पिण रावल मांहे गधेड़ारा लक्षण दीसे छै, बाईरो जमारो[७] डबोयो, पिण एक वार तो बाईनै गढ पोहचावणी। तरै तयारी कर असवार सौ एक साथे दे रथ मांहे बैसाँण साथे सहेल्याँ दे चलाई। राजडियो खवास साथे मेल्यौ पोचावण नै। आगैं कोस ४० गया, तठै तलाव आयो। तद रजपूत अमल करणनै साराँ—फेराँ[८] रा टेवटालण[९] नें ऊतरिया। रथ छोड़ियो। लाँ सोनगरी दासीनै कह्यौ, भारी पाँणीसूं भर ल्याव। तरै दासी भारी भरणनै गई। आगै देखै तो

---

१ नाश। २ मामूली भूमिपाल (जागीरदार), थोड़ी सी जमीन के मालिक। ३ राम, दम। ४ गदहे की अक्ल। ५ शानदार। ६ कर-ग्रहण। ७ जीवन। ८ सैर सपट्टा। ९ टेव (आदत-Nature's Call), टालने (जरूरत पूरी करने के लिए)—शौचादि के लिए।

नीवों सिवालोत[1] सात-वीसी साईनां[2] री साथसूं झूलै[3] छै। तिको केवा[4], चंपेल[5], अरगजारी पांणी मांहे लपटां[6] आवै छै। केसर रा रंगसूं पांणी बदल गयौ, रंग फिर गयो छै। दासी झारी झकोल[7] पांणीसूं भरी नै सोनगरीनूं दीधी। तद सोनगरी पांणी मांहे लीधौ। तद पांणी ऊपरै तेलरा तरवाळा आया। तरै सोनिगरी दासीनै रीस कीधी, तैं हाथ धोय नै झारी भरी नहीं, जा दूजी वार माटीसूं हाथ धोय नै भर ल्याव, आंधी[8], तेल लागो देखै कोई नहीं। तरै दासी कह्यौ, बाईजी, सिरदार कोई साथसूं सांपड़ै[9] छै, घणा सूंधा[10] तेल केसर मांहे हुवा छै। दासी कनै इतरो सुण सोनगरी कह्यौ, तूं पूछि आव कुण साखि, किसो सिरदार छै। छोकरी आयि नै पूछियो। तरै एकण चाकर कह्यौ, साखि राठोड, नींबो सिवालौत, लाखांरो लोड़ाउ[11] वडो झोकाऊ[12], सैंणा रो सेहुरो[13] दुसमणरो साल[14], जातां-मरतांरो साथी[15], लाखां रो लहरी[16]। इतरो सुंण छोकरी जाय पाछो कह्यो। तरै सोनगरी छोकरी वळी

---

१ शिवलाल का वंशज 'सिवलोत'-नींबा नामक। २ एक सौ चालीस (७×२०) समवयस्कों सहित। ३ नहा रहा। ४ केवड़ा। ५ चमेली का इतर, तेल। ६ तीव्र सुगन्धि। ७ पानी से साफ करके, झकझोर कर। ८ सम्बोधन, अरी अन्धी। ९ नहाते हैं। १० सुगन्धित। ११ लाखों के साथ अकेला युद्ध करनेवाला वीर। १२ वड़ा पराक्रमी। १३ अपने मित्रों को शिरोभूषण। १४ दुश्मनों के हृदय का शल्य। १५ जाते मरते हुवों का सहायक, असहायों का सहायक। १६ लाखों का धन दे डालनेवाला त्यागी, मनमौजी।

पाछी मेली, जा पूछि आव, वीरमदे सोनगरारी बैन काँनड़देरी धी[१] नै राव लाखणसीरी परणी[२], वीरमती नाम छै, तिको फेराँ[३] रो दोष लागो छै। जो थाँसूं मोनैं घरमै घालणी[४] आवै तो हूं आवूं। दासी जाय नै कह्यौ। तरै नींबै आरे[५] कीवी। जल बारै आय कपड़ा पहरि हथियार बाँधि घोड़ाँरा ऊगटा[६] षाँचि नै असवार हुवा। दासीनै कह्यौ, रथि जोति वेगा पधारौ, म्हारी आँख्या छाती ऊपराँ राखिस्यूं। तरै दासी आय कह्यो। तरै रथ जोति तलावनै हाली[७]। रजपूत केइक पोढिया छै। केईक टेव टाळण नै गया छै। राजड़ियै पूछियौ, रथ क्यूं जोतरियो। तिसै रथ थौ तिको पॉवडा सै-पाँच परो पोहतो। नींबोजी असवारी लीयाँ साम्हाँ आय मूंढा आगै रथ करि नैं चलाया। तरै रजपूत हथियार बाँधि राजड़ियौ दौड नै पोहतौ। वेढ[८] हुई। राजड़ियौ काँम आयौ। घणा रजपूत काँम आया। केइक लोह[९] पड़िया। नीबोजी सही-जीत होय सोनगरी ले आपरै गाँव आया। आ बात वीरमदेजी सुणी, तद रावळाँनै कह्यौ, गघेड़ौ छै, बाईरो हाथ छवियो[१०] जणे बाईरो जमारो खराब हूवो नै काँम भूंडो[११] कीयो बाई, पिण नींबो म्हाँरो मोटो सगो छो, इण बातरी सगाई[१२] काई राखी नही। हिवै रावळजी नैं खबर गई। तद रावळजी भालो घड़ायौ-"एथ बैठा ऊथ वैरै घाँ"[१३]

---

१ पुत्री। २ विवाहिता। ३ भाँवर। ४ ग्रहवास कराना, पति करके रखना। ५ स्वीकार किया। ६ कमरबंध, कसने, फ़ीते। ७ चली। ८ लडाई। ९ घायल होकर। १० छुआ, स्पर्श किया। ११ बुरा। १२ कान, कायदा, आन। १३ जैसलमेरी भाषा में—यहाँ बैठे वहाँ तक मार करें।

भालो घड़ावतां मास छः लागा। पछै लोहाररी बेटी अरज कीवी, रावजी, भालो तयार हुओ छै। तरै रावजी बोल्या, म्हारी[1], डरो ल्याव ज्यूं नीबलै नै पोय राळां[2]। तरै डावड़ी[3] कह्यो, रावळजी, हेक तो बडो सोच छै। मूं[4] बैरी किसूं। तरै डावड़ी बोली, ऊ[5] मोटियार छै, थे बूढा छो, कदे[6] भालो पकड़ खोस[7] नै पाछो ही चलावै नैं रावळजीरै दै तो हाथ कै ठोड़ घालां[8] तरै रावळजी कह्यो, हिवै हिवै[9], म्हारी, भलो कह्यौ, जावो भाँजि राळै[10] नैं रावळजी कह्यौ, भाई, माँहजी[11] नीबला तूं ले गयो छै, ताँहजी[12] सूरज ले जाइया। इतरो कहि सुख माँहे रहै।

हिवै सोनगरीरै बेटा दोय हुवा। कागद वीरमदेजीरा आवै। इम वरस दस हुवा। तठै दूजी बहिन वीरमदेजीरै छै; तिणरो साहो थापियो। दहायां[13] नै नाळेर मेल्या। तरै प्रोहित मेल वीरमतीनै बुलाई। तिका जलूस करि नै आई। पिता माता भाई भोजायाँ सूं मिली। घणी खुस्याली हुई। दिन २/३ बीतां भाई वीरमदेस्यूं बाई कह्यौ, थाँरा बेहनेई[14] नै बुलावौ तो भली बात छै। मोनै गिणो तो म्हारी एक अरज छै। मोनै काँचळी दीनी, हूं जाणस्यूं अमर-काँचळी[15] भाई दीधी।

---

१ सम्बोधन, मेरी ' '। २ पिरो डालें, बींध डालें। ३ लड़की। ४ मेरा। ५ वह। ६ यदि, कदाचित्। ७ छीनकर। ८ हाथ' ' 'घालां (मुहा० =हाथ किस जगह डालें, किसे मुह दिखावें। ९ ठीक, ठीक। १० तोड़ डालो। ११ मेरी स्त्री। १२ तेरी। १३ क्षत्रियों की एक शाखा। १४ बहिन का पति, बहनोई। १५ मेरे पति को अभय देने को मैं भाई की ओर से 'कांचळी' का दान समझूंगी, भाई बहिन को जो पोशाक देता है उसे 'कांचळी' कहते हैं— वास्तव में 'कांचळी,' कंचुकी को कहते हैं, जो स्त्रियाँ वक्ष पर पहनती हैं।

थाँहरै नै उणाँरै मन खतरौ भाजै[1] । वीरमदे रावजीनै पूछि नै वात आरे कीधी । कागद लिख नीवाँजीनें तेड़णरौ नैंतो मेलियौ। तिको कागद नींवाजीनैं दीधौ । घणॅू राजी हुवा। आदमियाँनै घणो सनमाँन दीधो । दिन २/३ राख नै कह्यौ, मोनें चाकर सेर वाजरी रौ रजपूत गिण्यौ। पिण म्हारी निसाँ-खातर[2] जालोर जाय सोनिगराँ तली वैसण[3] री न वैसै[4] छै, नैं पंजूपायक[5] मो कनै आय ले जावै, तो मुजरौ करूं । अँ वचन आदमियाँ आयनै कह्या। तरै वीरमदेजी पंजूपायकनै कह्यो, थे सिधाय नै नींवा सिवालोतनै तेड़ ल्यावो । तरै पंजू कह्यो, थे देसोत राजवी छो, काई वाँकी चूकी[6] मनमें होय तो मनै मती मेल्यौ, आयाँसु ऊंची-नींची करस्यौ[7] तो मोनैं चाकरीसूं गमास्यौ । तरै वीरमदेजी वाँह वोल दे[8] पंजूनै मेलियो । तिको समाज सूं नींवाजी कनै आय मिलियो । नीबैजी घणो प्यार आदर कीधौ। पंजूनैं सर्व वात कहि नै वांह देनै[9] नींबाजीनै जालोर ल्याया। कान्हड़देजी रांणकदेजीस्यूं जुहार हुवो । घणा प्यारसूं मिलिया, डेरो दिरायौ, मोदी बतायौ[10] व्याह हुवो, गोठ जीम्या ।

एकै दिन राजड़ियारो वेटो वीजड़ियौ वीरमदेजीरी खवासी करै छै। तिण आँख भरी, चोसरा[11] छूटा। वीरमदेजी पूछियौ,

---

१ शंका मिटे । २ विश्वास । ३ हेठा देखने की, आश्रित की तरह बैठकर अपमानित होने की । ४ नहीं जॅचती है । ५ नौकर । ६ मोटा बैर, टेढा कपटभाव । ७ बुरा भला कहोगे । ८ प्रतिज्ञाबद्ध होकर । ९ अभय देकर । १० खांन पांन के सामान का स्थल नियत किया । ११ अश्रुधारा ।

बीजड़िया क्यूं, किण तोनैं इसा दुख दीधो। तद बीजड़िये कह्यौ, राज माथै धणी, मोनैं दुख दै कुण, पिण नींबो म्हारा बाप रौ मारणहारौ, गढां कोटां मांहि वडा वडा सगां मांहे धणीयांरो हासा-रो-करावण-हारौ[१], वळै गढ मांहे खंखारा[२] करै छै नै पोढै छै, तिणरो दुख आयो। वीरमदेजी कह्यौ, म्हे तो पंजू नै बांह बोल दीधा, सूंस[३] कीधा, तिको कुं ही कहणी नावै नै थारै बापरौ मारणहार छै, तोसूं मरै तो मारि राखि। तरै बीजड़िये कह्यौ, धणियां[४] रा माथै हाथ चाहीजै। गोठ करि मोनै हुकम करौ तौ मारि राखिस्युं। वीरमदेजी कह्यौ, सखरी कही। परुसगारै[५] री वेळां म्हे तोनै कहां, बींजड़िया, पुरसगारो करि। तरै बीरमदेरा कड़ियां[६] की तरवार कनै राखी थी। तिका अजांण[७] मैं वाही। तिकौ नींबाजीरो माथौ अळगौ जाय पड़ियौ नै बीजड़ियौ थांभारै उंलै[८] आय गयौ। तदि नींबैजी आपरी तरवार माथै पड़ियै पछै आडी वाही, तिको थांभारा नै बीजड़ियारा दोय वटका[९] हुआ। तिण समीयै रो दूहो—

वही वही तै वाहि नर थांभो नीम्कौड़ियौ
नीवड़ा तणै नेठाहि मरियै बीजड़िय मुणास[१०] ॥१॥

---

१ हँसी (अपमान) कराने वाला। २ गर्वसूचक ध्वनि। ३ शपथ। ४ स्वामियों का। ५ भोजन परोसना। ६ कमर की। ७ अनजान में, अचानक। ८ ओट में, ओल्हे में। ९ टुकड़े। १० तलवार तो उसी बार चली (बही) थी जब (उसने) आदमी (बीजड़िया) समेत थंभ को काट डाला था। पुरषार्थी नींबा ने मारे जाने पर भी बीजड़िये को मार डाला।

पैला वीरमदेजी नीबाजीरा साथ, उमरावांरा हथियार सिकली-गररै दीधा था, तठै गुल[1] रौ बाढ दिरायौ थौ। कांम पड़ियां एकै सूंही अवसांण[2] सझियो नहीं। रजपूत था तिकां सगलां सत करै त्युं कीनौ। हाथीदांतांरी वाहि करि करि बाथां आय आय नै नींबाजी कनै आय पड़िया। वीरमती आपरा बेटानूं लेनै नीसरी, तिका आपरै गांव जाय बैठी।

औ दगौ हुवौ, पंजू पायक सुणियौ। तरां मूंछां दाढी ऊपरि हाथ फेरि रीसायनैं नीसरियौ। तिको अलावदी पातिसाही करै तठै गयौ। पातिसाहसूं मिलियो। घाव-डाव[3], फुलतारो खेल[4] दिखाय घणो पातिसाहनै रीझायो। एकै दिन पातिसाह फुरमायो, पंजू, तो जिसो थारी बरोबर खेलै इसो पातिसाहि मांहे दूजो कोई नहीं। तरै पंजू कह्यौ, एक जालोर कानड़दे सोनगरारो बेटो वीरमदे छै, तिको मोसूं कुंहीक[5] सखरो छै। तद पातिसाह कानड़दे ऊपरां फुरमान मेल्या। तिण मांहे लिखियो, तीने ही सिरदार हजूर आवज्यो, नहीतर हमकूं फेरा दिरावोगे[6]। औ फुरमांन वाच घणौ सोच हूवौ। जांण्यौ, ऐ पंजूरा चाला[7] छै। तरै तीने ही आलोच्यौ[8], जो बैस रहीजै तो दिलीरा धणींसूं पोंच आवां[9] नहीं। नै हजूर गयां काई बात झूठी साची रफै दफै करिस्यां[10]। यों जांण घोड़ा हजार एक री गांठ[11] करि

---

१ धार। २ औसान, मौके का काम। ३ दाव पेच। ४ फुरती का कौशल। ५ कुछ कुछ। ६ इनकारी करोगे, स्वयं आने की तकलीफ़ दोगे। ७ कपटमय व्यवहार। ८ सोचा। ९ नहीं पहुंच पाते, बराबरी नहीं कर सकते। १० रफा दफा करेंगे, तय करेंगे। ११ समूह, समारोह।

सखरै मोहरत सखरां सांवणां चढिया । तिके कितरेक दिनांनै दिली पोहता । पातिसाहजीसै मालुम कराई । तरै पातिसाहजी आपरा खासा तनवगसी[१] अमीर उमराव मेल्ह दरवार अंब-खास मांहे ल्याया । तीने सिरदारे मुजरो कीयौ । पातिसाहजी घणो सनमान दीयौ । सिरपाव दीधा, रौजीनौ[२] हजार तीन रुपीया कर दीना । सिरपाव, मोतियांरी माला, घोड़ा देनै डेरै मेल्या ।

हिवै एकै दिन पातिसाहजी पंजू पायकनें नै वीरमदेजीनै खेलणरो हुकम दीयौ । तिको खेलतां खेलतां पंजूरै मनमै आई वीरमदेनै मारूं । जठै वीरमदे खेलणने दरवाररी तयारी कीधी । जरै अपछरा गुपत आय कह्यौ, पंजूरै पगरा अंगूठा मांहे पाछणौं[३] छै, जावतो राखे, सावधान थको रहे, हूं थारा डाव[४] पंजूरै लगावस्यूं । आ वात सुणि वीरमदे आपरा अंगूठारै नीचै पाछिणो बांधि रेतीमै आया । पातिसाहजी झरोखै बैठा देखै छै । उमराव पाखती[५] रेती मांहे खड़ा छै । कान्हड़देजी रांणकदेजी परमेश्वरजीनै समरै छै । तिसै दोनूं खेलतां खेलतां वीरमदे इसौ डाव खेल्यो तिको उछलतौ साहमै कालजै पंजूरै कालजै दी । तिको पेट फाड़ि आंत, ऊझ[६], फेफरी[७] नीकल ढेर हुवा । धरती पड़ियौ । पातिसाहजी क्युं मसलायौ[८], दिण खेल मांहे धाव डाव मोटीयारां[९] री फुरती, तिणसूं क्युं कह्यौ नही । तरै वीरमदेजीनै सिरपाव दे डेरामें विदा कीया ।

---

१ अंगरक्षक । २ नित्य का वेतन । ३ उस्तरा, छुरा । ४ दात्र, पेंच ५ सभी, चारों ओर । ६ ओझरी, पेट की अंतड़ियाँ । ७ फुफ्फुड़े की नाड़ियाँ । ८ उदास हुवा । ९ मर्दों का ।

एकै दिन वीरमदेजीरै पहिरण सारू पगांरो मोजड़ी[1] करावण सारू मोचीनै हुकम कीयो । तरै मोची लाल, मोती, कलावतू, वादलो दे खवासनै साथे दीधो । मोची दुकान ऊपरि आयो । कनै खवास बैठो छै । मोची परवाना-माफक मोजड़ी करै छै । मोती, लाल-पटा[2], पना लगाया छै । तिसै पातिसाहजीरी बेटी साह बेगम, तिणरी दासी मोची कनै मोजड़ी करावणनै आई । आगै मोजड़ी करतो देखि पूछियो, आ किणनै मोजड़ी हुवै छै । मोची कह्यो, जालोरको धणी कांनड़दे सोनिगरो, तिणरो कंवर वीरमदे छै, तिणरै पगांरै सारू मोजड़ी वणै छै । दासी मोजड़ी देखि देखि हैरान हुई । तद दासी कह्यो, देखां, एक मोजड़ी दे ज्यूं बेगम साहिब नै दिखाऊं । मोची कह्यो, छांनै-सै ले पधारो । तद दासी मोजड़ी लेनै मांहि गई । कह्यो, बेगम साहिब आप दीनु[3] पातिसाहां के फरजन[4] हो, तिको निपट सुचूंपसूं[5] रूंसदार[6] मोजड़ी पगां पैहरो हो, पिण एक रंघड़[7] का पगांरी मोजड़ी देखो । बेगम मोजड़ीरा पटा देखि कह्यो, इणको पैहरणवालो न देख्यो । दासी कहै, न देख्यो ? तद बेगम कह्यो, मोची नैं पूछि डेरो देखि । कह्यो, सिरदारांरो नांम, सबी निजरां देखि आवजे । पछै पातिसाहकै मुजरै आवै, तद हमकू दिखाए । ऐ वातां करि दासी पाछी जाय मोचीनै मोजड़ी दीधी नैं सिरदाररो डेरो देखि आई । सिरदाररी सबी, देही री मरोड़[8], आख्यां रो पांणी,

---

१ जूती । २ लाल रंगम । ३ दीन-दुनिया के । ४ फर्जंद, सन्तान । ५ बड़ी ही सफाई-चतुराई के साथ । ६ शानदार, रुसकदार । ७ राजपूत । ८ अकड़ ।

मछर[1] देखि देखि हैरांन हुई। दासी पाछी आयनै कह्यो, बेगम साहिब, नर-समंद[2] मुरधर[3] रा भलां ही कहावै, जठै वीरमदे सरीखा जवान नीपजै, देख्यांहोज बणि आवै । और दूजो कोई पातिस्याही मांहे होय तो कहूं । इतरो सुणि बेगमरौ जीव बांध्यौ[4], नेह विणदीठां जाग्यो । मन मांहे देखणरी घणी ऊपनी[5] । तिसै बीजै दिन दरबार कान्हड़दे, रांणकदेजी, कॅवर वीरमदे बड़ी जलूसस्ं पातिसाहजीरी हजूर आवै छै। तठै दासी बेगमनै झरोखै की झांखो[6] मांहे वीरमदे जीनूं दिखाया । वेगम तो देखत-समान भरतार धारथो। जीव तलवलाटा[7] लैणा मांडिया। वीरमदे-बाहिरी[8] घणी दोहरी[9] छै। तिको पैलांतर[10] रौ नेह वाचा-बंधियौ[11] छै। तिणरो संबंध कहै छै—

कासी वांणारसी मांहे एक साहूकार कोड़ीधज[12] बसै। तिणरै पुत्र एक। तिको मोटो हुवो, ठावी जायगा परणायौ । जुवांन हुवो । एकै दिन आपरी सौंणहर[13] मांहे सांपड़ै[14] छै नै आपरो अंतेवर[15] हजूर चलाकी[16] कर संपड़ावै छै। तिसै झंखेरो[17] आयो। तरै अस्त्री दोड़ि महिला मांहे पैठी नै साहूकाररा बेटारो डील सारो धूल मांहे लपेट गयो। तरै साहूकार मन मांहे जांण्यो, घर मांहे माता पिता,

---

१ गर्व, वैभव, गौरव । २ नर-समुद्र, समुद्र के समान गंभीर पुरुष । ३ मरुधरा, मारवाड़ । ४ चित्त आकर्षित किया । ५ लालसा हुई । ६ छिद्रों, झाँकी, झांकने का मार्ग। ७ अकुलाने लगा, तलमलाने लगा । ८ वीरमदेव के बिना । ९ दुःखिता । १० पूर्वजन्म का। ११ प्रतिज्ञावद्ध । १२ करोड़पति। १३ स्वपन गृह, शयनागार । १४ स्नान करता । १५ स्त्री । १६ कुशलता सहित । १७ आंधी का झोंका ।

जमारो[1] सखरो[2] लाधो, पिण अस्त्री लाधी नहीं। तरै पांणीसूं सांपड़ि रीस मांहे उठि कासी-करवत[3] छै, जठै गयो। करवत लेतां कह्यो, ओ हीज घर, माता पिता लाभूं नैं म्हारा आधा अंगरी अस्त्री होज्यो नै आधा अंगरो हूँ होज्यो। इतरो कहि कासी-करोत लीधो। पाछो उण हीज साहूकाररै अवतार लीधो नै डावा अंगरी मोटा साहूकाररै पुत्री ऊपनी। मोटा हुवा, परणिया। संसार-सुख भोगवै छै। एक दिन आपरी आगली सुणैर[4] मांहे छै, पोढै तठै संपाड़ो करै छै। अस्त्री हजूर पांच संपड़ावै छै नै आगला भवरी[5] अस्त्री झरोखै अहिवात[6] मांहे बैठी छै। तिका सांपड़तो देवरनै देखै छै नैं ओ साहूकार बैठी जांणैं छै। तिसै आँधीरो झंखेरो अड़वाय[7] आयो। जरै अस्त्री आपरा कपडासू साहूकारनैं लपेट लीयौ, रज कपड़ारै लागी, पिण साहूकाररै रज लागण दीधी नहीं। झंखेरो टलियो। तरै साहूकार अठी उठी देखि हसियो। तरै साहणी[8] पूछियो, कंवरजी साहिब, आप हसिया तिणरो विबरो[9] फुरमाईजै। तरै साह कह्यो, आ थारै जेठाणी, तिका पैलै भवरी अस्त्री छै। आज सांपड़तां झंखेरो आयो थो, ज्यूं आयौ। जरै आप दौड़ि सालि[10]

---

१ जीवन। २ उत्तम। ३ काशी में विश्वनाथ के मन्दिर में एक गुप्त, जमीन के नीचे स्थान था, जिसमें पातालेश्वर महादेव के सामने भक्त लोग आत्म-बलिदान कर मोक्ष अथवा अपना मनोरथ-लाभ करते थे। ४ शयनागार। ५ पूर्वजन्म की। ६ विधवापने में। ७ वातूल, वगूला, हवा का चक्राकार तेज झोंका। ८ साह की स्त्री। ९ ब्यौरा। १० बैठने का कमरा।

में गई, नै हूं रजीसूं भराणो[१]। तरै मोनै रीस आई। घर माता पिता लाध्या, पिण वैर[२] म्हारा जतन करै तिसै लाधी नही। तरै खरली ले[३] रीस मांहे ऊठि करोत लीधो। जठै आधा अंगरी थे अस्त्री हुवा नै आधा अंगरो हूं हुवो। ऐ वातां झरोखै बैठी सुणी। तरै साहणीनै रीस चढी। झरोखासूं उतर पाधरी करिवत छै, तठै गई। करोत लेती कह्यौ, म्हारै भरतार ओही साहूकार होज्यो। इसो व्रत ले नै करोत लीधो। दइवरै जोग पग हेठै गायरो हाड आयो। तिणरा फरस[४] सूं अलावदीन पातिसाहरै बेटी हुई। लारै[५] साहरै बेटै सुणी, साहणी थारै नांम धारा-करोत[६] लीधो। तरै इण साहूकार बीजी बेळा वळे करोत लीधो। लेतां कह्यौ, आगली अस्त्री सूं वाड़ि कांटो मती देज्यो[७] नै मोटा राजवीरै देसोतरै[८] जनम होज्यो। करोत ले नै देह त्यागी। तिको जालोर कांनड़देरै घरै वीरमदे कँवर हूवो। तिणसूं पैला भवरी नीयांणासूं[९] वेगमरो नेह लागो।

हिवै अठै वेगम पातिसाहसूं अरज कीधी, में वीरमदे सोनिगरानै कबूल कीधो, मेरा व्याह नका[१०] करो। मेरा खावंद सिर-पोस[११] जालोर का धणी है। पातिसाह कह्यौ, वेगम, ऊ तो हिंदू है,

---

१ भर गया। २ स्त्री, पति। ३ जल्दी से स्नान करने को राजस्थानी में "खरली लेणो" कहते हैं। ४ स्पर्श। ५ पीछे से। ६ काशी-करौत का कठिन व्रत। ७ वाडि कांटो.........दीज्यो (मुहा० —किसी प्रकार का सम्बन्ध न देना। ८ देशपति, राजा के। ९ धारणा, लालसा से। १० निकाह, मुसलमानी रीति से शादी। ११ शरोभूषण।

मेरी तरफसूं गाढ भांति भांतिसूं करिसू, पिण मेलो[१] तो खुदाय के हाथ है। ऐ वातां करि पातिसाहजी अंब-खास तखत विराजिया। खांन सुलतान दरीखांनै मिलिया। कांनड़देजी पिण आया। जरै पातिसाहजी रावजीनै घणो आदरसू सगाविध[२] सूं वतलावण कीधी नै कह्यौ, रावजी, हमारी लड़की तमारा लड़काकुं दीधी, सलांम करौ। हम तुम समधो का नाता है। हमारै तुम वडे रवेस[३] हौ। रावजी कह्यौ, पातिसाह दीन-दुनीरा छो, हूं पाधरियौ[४] घर रौ धणी रजपूत छूं, पातिसांहा सगावल[५] करो, रोम सूंम[६] विलायत रा धणी छै। हूं तो बंदगी करूं छूं। पातिसाहजी घणो हठ कीनो। जरै कह्यौ, मोटीयारनै बूझू; उणरी रजावंध[७] री बात छै। तरै हाथी, घोड़ो, मोतियांरी माला, खंजर देनै विदा कीया, नै कह्यौ, सुबे कॅवर कुं लेनै वेगे आइयौ। कांनड़देजी आय नै कंवरनै सगली हकीकत कही। तरै कंवर कह्यौ, रावजी, जो कबूलां नहीं तो तुरकड़ो अठै ही मारै। तिणसू प्रभाते हूं साथे चालस्यू नै हूं वातां करलेसू। प्रभात हुवां कांनड़देजी, रांणकदेजी वीरमदेजी तीने वडी पोसाख कर हजूर आया। मुजरो कीयो। तद पातिसाहजी वीरमदेजीनै फुरमायो, कॅवरजी, हम तुमारै तांई हमारी लड़की साह-वेगम दीधी, कुरनस[८] करो। वीरमदेजी सिलांम करि कह्यौ, हजरत, म्हे घररा

---

१ मिलाप। २ सगापन के ढंग से। ३ प्रिय सम्बन्धी, माननीय आत्मीय जन। ४ सीधा-सादा। ५ सगपन, सम्बन्ध। ६ रोम सूंम'—प्राचीन काल में भारतवर्ष से बाहर के राष्ट्रों के लिए साधारणतः प्रयुक्त होता था। ७ रजामंदी, आज्ञा। ८ स्वीकारसूचक अभिवादन, कृतज्ञता-प्रकाश।

धणी रजपूत जमीदार भोमियां[1] छां, पातिसाहरा पूंगड़ा[2] म्हारै घर लायक नहीं, नै पातिसाहां हमकूं दीवी तो कबूल कीवी, पिण परणस्यां म्हांरी हिंदूरी राह[3]। तदि पातिसाह कह्यौ, तुमारी राह कैसी? तद कंवर कह्यौ, वरस २/३ वांनै जीमैंगे[4]। पीछै जांन[5] वणाय, तोरण बांदि, चॅवरी बंधाय परणैंगे। दिल्लीरा धणीरै घरे परणां जिसो सांमो[6] खजांनो म्हां कनै न छै। तिणसूं नाकारा[7] री अरज करां छां। पातिसाह कह्यौ, लाख १२ रुपीया खजांनासं ले जावो, नै तीन बरसरी सीख दीवी। वेगे तुमारी राहमें आइयो। सिरपाव दीधो। रुपीया खजांनासूं कढाय डेरे मेल्या। अवै तीनां मिसलत[8] कीधी। देशमें पौच गढ सभ्भो तो इयांरो मुँहडो तोड़ां। आ वात करि चालणरी तयारी कीधी। तरै साह-वेगम पातिसाहसूं अरज कीधी कि रैवले-जहां, ऐ हिंदू है दगादार[9], जाणां[10] आवै नावै, तिसै इणका चचा (?) राणकदे कुं ऊवाळ[11] मांहे राखो। पातिसाह कह्यौ, खूब कही। अवै

---

१ भूमिपाल, जागीरदार। २ प्रतिष्ठित संतान। ३ रीति, रस्मपूर्वक ५ व्याह होने के कुछ दिन पहले वर अपने कुटुम्बी और प्रियजनों के यहाँ भोजनार्थ निमन्त्रित किया जाता है, इसे "बांन जीमणो" कहते हैं। वीरमदे बादशाहों का दामाद है, अतएव कुछ दिन नहीं, बल्कि कुछ वर्ष तक, बादशाह के धन पर 'बांन' जीमेगा। ५ बरात। ६ सामान। ७ नांही। ८ सलाह। ९ धोखेबाज। १० न जाने। ११ बदले में—वैरी के किसी आत्मीय जन को किसी शर्त पर अधिकार में रखना और शर्त पूरी हो जाने पर छोड़ देना—इसे 'उवाळ' (Ransom) कहते हैं।

कान्हडदेजो सीख मांगणनूं आया। तरै पातिसाहजी फुरमायौ, रावजी, एक तुम्हारा छोटा भाई राणगदे हमारै पास राख जावौ, ज्यूं हमारै निसा-खातर[१] रहै। कान्हड़देजी आरे कीधी। तरै रांणकदेजीरै असवारीरो घोड़ो झींथड़ो देवांसी[२] छै, तिको घणो चलाक छै। एक आसो चारण रांगणदेजीरै। तिणसूं घणो जीव[३]। तिणनै राखियौ। एक चाकरीनै खवास, तीन आदमी नै तीन घोड़ा राखिनै जालोरनै चाल्या। तरै राणगदेजी कह्यौ, गढ वेगौ करावज्यौ। कांनड़देजीरै सोनांरो पोरसो[४] तो आगै हीज छै, पिण दिलीरा धणीरी तपस्या करड़ी[५]। तिणसूं कुही कहणी नावै थी। इण वात ऊपरां जीव आसंग[६] पृथ्वी मांहे नाम राखणनै इतरो कांम कीधौ। गढ कराय वेगो समाचार देज्यो। अठारो चढियो उठै हीज पागड़ो छोडस्यूं। इतरी वात कह राइ कूच कीधो। तिके मजलां-रा-मजलां जालोर आया। सखरौ[७] मुहरत जोय गढरी नींव दिराई, पिण गढ करावणरो उतावलो घणौ गाढ मांडियौ। रुपीयो पइसा-जू जांणै नहीं। पछै पातिसाहजी तगै मुगल, तिणनै कह्यौ, राणकदे सोनिगरानूं म्हारी हवेली मांहे राखो। इणका जावता तुमारै हवालै है। तगै कबूल करी। राणकदे पइसा एक भर अमल गलियो पीवै, नै अमल पइसा एक भर आसौ चारण करै। नैं रांणक देजी अमल करि कटारी बांधि झींथड़ा ऊपरि असवारि होई नै खुरी

---

१ विश्वास। २ देववशी, दिव्य। ३ प्रेम, मोह। ४ प्रतिष्ठायुक्त सुवर्ण, खजाना इत्यादि (?)। ५ भाग्य अधिक प्रबल है, पूर्व जन्म के कर्म अधिक प्रबल हैं। ६ हिम्मत करके। ७ शुभ।

करावै[1]। तद अमल ऊगै[2]। तिको तगो देखै। तगै पूछियो, रांणकदेजी अमलकी तुम्हारै या क्या तरै है। तरै राणगदेजी कह्यौ, अमल नै जिण सभाव घातै तिण हीज ढालै[3] ऊगै, जिको मोंथड़ारी खुरी विना मीयांजी, अमल ऊगै नही। अबै दिन ५/७ में मुजरै जाय। पातिसाहजी बहुत प्यार करै। समाचार वार वार पूछै। मास २/३ नै पातिसाह पूछियो, रावजी नै कँवरजी पौंता[4] की कुसल खेम के कागद आए। रांणगदेजी कह्यौ, चाल्यां पछै रावजी पोतांरो समाचार आयो, पण वीरमदे दोड़ गयो थो, तिणरो सहिर पोतो नहीं। तिणरो समाचार नायो छै। तिणरी फिकर घणी छै। आदमी च्यारे तरफनैं दोड़िया छै। ऐ समाचार छै। वलै समाचार आसी तद मालुम करिस्युं। मास १/२ नैं वलै पातिसाह पूछियो। तरै रांणकदेजो कह्यौ, अजे स काई खबर नाई छै। तिणरो म्हांनै घणो सोच हुवै छै। दीसै पातिसाहसूं मूंढामूंढ[5] नटणी[6] नायौ। तिकौ चाल्यां पछै कठै ही गयौ, सो परमेसरजी जांणै, हजरत, बहुत फिकर है। तद पातिसाहजी कह्यौ, या तौ बुरी हुई, खुदाइ भली करैंगे। पातिसाह मांहे वेगमनै कही। तद वेगम कह्यौ, हिंदू दगैदार है, झूठ कहै है। जहांपना, इनकी जावता रखियौ, हिंदू नाठ[7] जायगा। पछै पातिसाहजी गवेसौ[8] छोडियौ नै न छोडियो पिण छै।

---

१ घोड़े को फेरते थे। २ अफीम का नशा चढ़े। ३ ढंग से। ४ पहुँचने की। ५ मुँह पर, प्रत्यक्ष में। ६ नांही, निषेध करना। ७ भाग जायगा। ८ पूछताछ, गवेषणा।

तिसैं बलखरै पातिसाह भैंसो एक मातो, जिणरा सींग थेट वांसां तांई[1] आया, वांसो सगलो ढक गयो छै, तिण साथे आदमी ठावा इका[2] दे दिल्ली मेलिया छै नै कहायो छै, इणनै जभै[3] मत करज्यो नै इणनै झटकासूं मारि नै हमारा चाकरानै सीख देज्यो। देखां, तुमारै सिपाई कैसे है। पातिसाही मांहे इसो समाचार लिख मेलियो। तिके भैंसो लीयां दिल्ली आया। पातिसाहांसूं मिलिया, हकीकत कही। कागद दीधा। पातिसाहनै भैंसो दिखायौ। तद पातिसाह भला भला सिपाई इका बहादर था, त्यांनै बुलाय बुलाय नै तरवारियां बहावै, तिके तरवाररा वटका[4] २/४ ह्वै, पिण सींगरी छोंती[5] ही उतरै नही। इणरो पातिसाहनै घणो सोच हूवौ। आदमी आया छै, त्यांरी जाबता घणी करै। दिलासा घणी करावै। भैंसो रातबां खायै, तिणरो किणहीसूं सींगरी छोती ही करणी नावै। तरवारियां खुरासांणी थी, तिके सगली भागी[6], सिपाई वलि करि करि हार्‍या। यों वरस २/३ तांई रह्या। पातिसाह कनै सीख मांगी। तरै पातिसाह बेदल[7] थकै घणी खुसामद कर सिरपाव खरची देनै विदा कीया। तिके चालता चालता जालोर आया। तिसैं गढ पिण तयार हुवो। क्यूं कांगुरा ह्वैणा रह्या था। तठै वीरमदेजी असवार होय वाग जायै छै। विच माहे जमरांणा[8] रौ वाहण[9] होय, तिसौ भैंसौ मातो हाथीरो सो कांधो, सींग जाडा[10], वौड़ा[11] लांबा, वांसौ[12] सगलौ

---

१ पिछाड़ी तक, पीठ तक। २ विश्वासी, ताकतवर पहलवान। ३ जिवह करना। ४ टुकड़े। ५ छिलका। ६ टूटगई। ७ बेमन, दुःखी। ८ यमराज। ९ वाहन, सवारी। १० मोटे, पुष्ट। ११ बहुत, बहुल। १२ पीछे का भाग, पीठ।

ढक गयो। देखि कँवर वीरमदे ऊभौ रह्यौ नैं पूछियो, दुरत[1] भैंसो कठै ले जावो छो। तरै मीयां कह्यौ, वलखरै पातिसाह दिल्लीरा पातिसाह कनै मेलियो थो, जभै करौ मती। झटकासूं माथो वाढि हमारै तांई सीख दिराई थी। तिको वरस तीन रहे, पिण पातिसाही मांहि कोई सिपाई नहीं। दिली का पटैंल[2] है, जमींपट लें भे[3] खायै है। इतरी वात सुंणि वीरमदेनै रीस ऊपनी। तिको पाखती भैंसारै पसवाड़[4] आय चरतालै, कड़ियांसूं तरवार वाही, तिको सींग नै माथो वाढि दोय वटका कर नांख्या। मीयां देखता हीज रह्या। वाह वाह सगळां कह्यौ। कँवर तो पाछा गढ सिधाया नै मीयां तो पाछा दिल्ली गया। जाय पातिसाहजीनै माथो, सींगांरा वटका दिखाया नै कह्यौ, ऐसा सिपाई हजूर राखीजै। जालोर कांनड़दे का कँवर वीरमदे नां कुछ बल कीया नां तरवार तोली, कँवरानै लोह करै त्युं कीधौ, पातिसाहांरो बोलबाला हूवा। इतरो कहि मीयां सीख मांगि वलखनै गया। इण भैंसारा मुजरासूं पातिसाहजी घणा राजो हूवा। वीरमदेरी खबर पाई। तरै पातिसाहजी इण मुजरांसूं रांणकदेनै क्युं ही कह्यौ नही। तरै सोनैरो छड़ीदार मेल नै राणकदेनै बुलायौ। रावजी, तुम्ह कह्यौ, कँवररी खबर नही, सो तो हमारी पातिसाहीका कँवर बोलबाला[5] कीया। तिणसूं तुम ऐसा दगा कीया, झूठ हजूर कह्यौ, तिणको गुन्हौ माफ वगसियो।

---

१ बेसमय, बेऋतु अथवा दुरंत, भद्दी शकल वाला। २ स्वामी। ३ अर्थ अस्पष्ट है; संसर्ग से अर्थ लिया जा सकता है, मुफ्त ही जमीन का मालिक बना बैठा है। ४ एक बाजू की ओर। ५ यशप्रशस्ति।

पिण, अब कँवर सिताब हजूर आवै, त्यू करो । राणकदेजी कह्यो, हजरत, मोनें अजेस[१] ठीक खबर नहीं छै । पातिसाह फुरमायौ, तो अबै ताकीद करि बुलावूं छुं । सीख माँगि तगारै भेळो डेरो छै तठै आया । इण भैसारै लोह करणैसूं रांणगदे घणो विराजी हूवो । भूठी साची वात कहि भूलाई[२] थी । पाछासूं पातिसाह तगा मुगलनै कह्यौ, हिंदू हमारी निजर दगादार-सा आवता है नै हरा[३] रह्या तो चढि चालतौ रहैगो । तिणसै घणो जावतो राखज्यो । वळै सोनारी बेड़ी दीधी, आ राणगदेरै पगां माहे घालिज्यो । चोकी पोहरै[४] घणी जावता राखज्यो । इसो हुकम लेनै तगो हवेली आयौ । तिसै पातिसाह ओठी[५] आदमी जालौर चासभास[६] लैणनै मेल्यो थो, तिकोई आय पोतो । आदमी कह्यौ, गढ सम्फियौ, उठै तो वेढरी[७] त्यारी छै । बारै बरस तांई धांन, घृत, तेल, गुळ, खांड, अमल, भांग, तिजारौ, किरांणौ[८] कपडौ, मूंग, धणो[९], दारू, सीसो लोहरो सांमान कीयो छै ॥ दहीसूं रुईरा फूभा[१०] लपेट बावड़ी भरै छै । इसी वातां बेगमसूं कही । तरै बेगम आदमी पातिसाहरी हजूर मेलियो नै अरज थी ज्यूं कही । ऐ समाचार तगानै दे मेल्या, घणो जावतो करज्यो । अबै सोनारा थाळ मांहे सोनारी बेड़ी तगौ घालि ल्यायौ । तिण वेळां रांणगदेजीरै अमल करणरी वेळा छै । तठै तगै कह्यौ, रावजी, पातिसाहरो हुकम छै, बेडो पगां मांहे राखो । तठै आसौ चारण हसनै कहै—

---

१ अभी तक तो । २ भुलावा दिया था । ३ बेफ़िक्र । ४ पहरे पर । ५ जासूस, सदेशवाहक । ६ ख़बर । ७ युद्ध की । ८ फुटकर चीजे । ९ धनिया । १० रूई के पहल (घावों की मरहम पट्टी करने के लिए ।

दूहा

रणका रुणझुणकेह, राय-आंगण रमियो नहीं ।
(तौ) पहिरस केम पगेह, वड़नेवरी वणीरउत ।[१]

ओ दूहो सांभलि[२] राणकदे कह्यौ, मिरजाजी, अमल करूं, पछै हुकम प्रमांण छै । तणै कह्यौ, खूब कड़वा आरोग ल्यो । तरै अमल करयौ, कटारी बांधि नै भींथड़ै असवार हूवा । तरै तणै कह्यौ, हिंदू अजब गिवांर है, वरजतां मांहे घोड़ै असवार हुवै छै । तठै तणारो वचन सांभलि आसो कहै—

दूहो

तगा तगाई मति करे बोले मुंह संभालि ।
नाहर नै रजपूतनै रेकारै ही गाल़ ॥१[३]
तंगो न जांणै तोल, मूरख मंछरीकां तणो ।
वायक सुणतहु बोल, मारै कं आपै मरै ॥२[४]

---

१ हे राणकदे, ये बेड़ियां रुनझुन करके झनक रही हैं । तू तो अभी राजदरबार में खेला ही नहीं (अपना पराक्रम दिखाया ही नहीं) । तो हे बनबीर के सुत, क्या अब इन बेड़ियों को पहन कर बंदी की तरह दरबार में जायगा ? । २ अरे तगा, तू धृष्ठता मत कर, मुख में से सँभाल कर बचन बोल । शेर और राजपूत को अरे, या रे कहने से गाली लगती है । ३ मूर्ख तगा पौरुष पूर्ण (मछरीकां) पुरुषों का तोल (मूल्य) नहीं जानता । ये लोग ओछे वचन सुनते ही या तो शत्रु को ही मार देते हैं, या स्वयं मर जाते हैं ।

इतरौ सुणतसमौ राणकदे कटारी काढ तगारी छाती मांहे जड़ी, कै[1] भर भाद्रवारी कड़क नै वीजली पड़ी । तिके तीन कटारी जड़ि हेठो धरती भेलो कीयो। तरै आसा नै खवासनै रांणगदे कह्यौ,थे थांहरै पापे पुण्ये होज्यो[2] । म्हेतो थेट[3] जालोर गयां पागड़ो छोडिस्यां नै थे डावा-जीमणा[4] होयनै वेगा पधारिज्यो। इतरो कह्यां आसो नै खवास सैर मांहे रमता रह्या[5] नै राणकदे चलाया । तिसै हवेली मांहे कूक पड़ी। सैहर हलचलै चढियो। तठै--

दूहो

सुध पूछै सुरतांण ओ केहो कोलाहल कटक ।
कै रीसवियो रांण कै मैंगल थांभ मरोड़ियो ॥[6]

जरै अरजवेगी जाय हजूर वाको दीयो[7], सोनिगरो रांणगदे मिरजा तगानै मारि भागो। पातिसाहजी कह्यौ, हम जांण्यौहीज थौ। भलां, खूब सिताब[8] बगसीनै हुकम दीयो, वरजरूर जब्बर अमीर उमरावांरी वाबीसी विदा करौ नै सिताब भेर करनाल[9] कूच की करावौ । मीर मजल डोरी दे[10] विदा कीया । मजल चोकै तुरत

---

१ मानो, कि। २ पापे ·····होज्यो (मुहा०,=अपनी आप सँभालना। ३ सीधे, ठेठ। ४ दांये बांये, लुक छिपकर। ५ अन्तर्धान हो गये। ५ दिल्ली का सुलतान खबर पूछता है कि कटक में यह कैसा कोलाहल है । क्या राणा कुपित हुआ ? अथवा मदोन्मत्त हाथी खम्भे से छूटा है ? ७ खबर दी। ८ जल्दी। ६ तोप की आवाज (कोई विशेष सार्वजनिक सूचना देने के लिए)। १० अभय देकर, सेना देकर।

बावीसी[1] विदा चढियां घोड़ां करि आपरा डेरा खड़ा कराया नैं बावीसीनै कह्यौ, हम तुमारै पीठ लगे आवतै है।

अबै रांणगदे दिन घड़ी चार चढियां दिल्ली थी चढियो थो, तिको राति घड़ी चार पाछली थकां रोहीठ गांवसूं उरै[2] कोस चार एक गांव पाखती नीसरै छै। तठै डोकरी[3] एक गोबर वीणै छै। तिणनैं राणगदे पूछियौ, डोकरी, औ किण प्रगनारो गांव छै। तरै डोकरी कह्यौ प्रगनो सोझतरो छै, तरै जांणियो जालोर तो नैड़ी कीधी। वलै पूछियो, डोकरी, काई नवी वात सुणी। तरै डोकरी कह्यौ, बेटा, घणी वेळा हुई वात सुणियांनै। रांणकदे कह्यो, कठारी वात सुणी। डोकरी कह्यौ, रांणकदे सोनिगरो तगा मुगलनै मारि भागो नै वांसै[4] बावीसी विदा हुई छै नै तिणरै पूठै पातिसाह आप छै। इसी वात सांभलि राणगदे तांमस[5] खाय कह्यौ, फोट[6] झोंथड़ा, तो पहिली वात आई। तठै घोड़ो देवंसी, तिको फिटकारो सुणतसमो धूजणो[7] खाय हीयौ फूट हेठो[8] पड़ियो। रांणगदे ऊतर अळगो हुवो। सोच करण लागो, चढीजै किण ऊपरां। तरै डोकरी कह्यो, बेटा रांणकदे, तैं फिटकारौ क्यूं दीयो, म्हे तो सीकोतरी[9] छां। जरै तैं तगानै मारयौ, तरै हूं उठै हीज थी। इसा घोड़ा फिटकारै गमीजै[10] नहीं। तरै रांणकदे कह्यौ, माता, अबै थेट आज दिन ऊगतां पहली जालोर पौहतो जोईजै। तरै सीकोतर सांवली[11] हुई नै कह्यौ, म्हारी पूठि ऊपरि चढो। तरै रांणगदे पूठि

---

१ वाईसी (२०,००० सख्यक सेना), सेना। २ इधर। ३ वृद्ध स्त्री। ४ पीछे से। ५ क्रोध। ६ फिटकार। ७ कम्प। ८ नीचे। ९ शाकिनी, तांत्रिक स्त्री। १० खोये जाते। ११ श्यामा चिड़िया।

ऊपरां बठो नै सोकोतर उड़ी, तिका राति घड़ी दोय पाछली थकां गढ मांहे मेल्यो। सीकोतर पाछी आई। तरा पछै भींथड़ारौ थड़ौ[1] करायौ। भींथड़ारै नांवै गांव बसायो। तिको कूवाजीरो भींथड़ो कहीजै छै। कांन्हड़देजीनूं मुजरो कीयौ। वीरमदेजीरो मुजरो लीयो। दिल्लीरी सगली मांड नै[2] बात कही। तठै गढरो घणो गाढ जाबतो कीयो। तठै रजपूतांनै बारा बरसांरो रोजगार चुकाय दीयो। कडा, मोती, सिरपाव, घोड़ा, बधारो[3] दीयो नै कह्यौ, रावतां, गढ थांरी भुजा ऊपरै छै, गढ थांहरै खोलै[4] छै, गढ फूटरो[5] दीसै, सोनिगरांनै पाणी चढै[6], त्यूं करिज्यो। रजपूत बोल्या, महारावजीरो लूंण ऊजलो करिस्यां[7]।

अबै पातिसाहजी घोड़ो लाख दोय लीयो नै गढरो घणो गाढ सुणियो। जरै बडी बडी नाल सौ जूंट-जूटे[8], तिसी सईकड़ांबंध[9] लीनी। जिके दोय मण तीन मणरो गोलो खाय। हाथी पूठै टल्ला देतरै[10] खिसै। तिसै नालां लीधी। और नालारो किसो किसी गिणत छै। अगन बरसै। इसी भाँति फोजरो चकारो[11] लीयां गढ लागा। साह बेगम रो चकडोल साथै छै। कोस दोयरै आंतरै डेरा दिया। वेढ हुवै, पिण गढरो जोम[12] दिन दिन चढतो दीसै। इसी भांति वरस बारह हुवा। गढ भिलै[13] नहीं। गढ माहे सांमो[14] खूटो। तरै वीरमदेरी कूतरी[15]

---

१ स्मारक गृह। २ ब्यौरेवार। ३ वृद्धि। ४ पुत्र करके ग्रहण करना। ५ सुन्दर। ६ यशवृद्धि हो। ७ लूंण ''करिस्यां (मुहा०—स्वामि-भक्ति का प्राणपण से प्रमाण देंगे। ८ झुंड की झुंड इकट्ठी हुई। ९ सैकड़ों ही। १० हाथियों द्वारा पीछे से खींचने पर खिंचैं। ११ चक्र, मंडल। १२ ओज। १३ टूटे, विजित हो। १४ सामान, रसद। १५ कुतिया।

ब्याई थी, तिकारो दूध ले नै खीर कराई। तिके पातलांरै खीर लगाय नै लसकर दिसी नाखी। तिके ज्यूंरीज्यूं पातलां पातसाहरी हजूर ले दिखाई। जरै पातिसाहजी उमरावांसूं मिसलत कीधी नै कह्यौ, जिण गढ मांहे अजेस खीर खाईजै छै, तिण गढरो भिलणरो[१] किसो भरोसो। तिणसूं बारै बरसरो जोग, बारां बरसां री तपस्या, ज्यूं बारा बरसरी वेढ फते होय तो भलां, नहीं तौ ही भलां। तिणसूं पाछा दिल्लीनै चालो। इसो मचकूर[२] करि पाछा डेरा चलाया। कूंच री अवाज हूई। करनाल कराई। मोरचा उठाया। बेगम साथे ले पाछो कूच कीयो। तिके खंडप-भवराणी[३] आय डेरा दीया। तठै लारै कान्हड़देजी रांणगदेजी वीरमदेजी गढरी पोलि खोली। बारै बरसां गढरोहो[४] टलियो। सैदाना[५] वाजै छै। चारण भाट जाचक गीत-गुण ले नै मिलै छै। विरद दीजै छै। गोठरा हुकम हुवै छै। तिके रसोड़ा-दार गोठ बणावै छै। दारू रो पैणगो[६] हुवै छै।

तिण समै आगै बरस पैली दहिया दोय रजपूतां माहे मोटो खून[७] पड़ियो। जरै दोन्यां ही नैं सूली दिराया था। तिके सूक खेलरा[८] हुइ गया छै। तिको आयरो[९] सबलो वागो। तिणसूं बेऊं जणां दहियांरो मूंढो भेलो हूवो। तिके वीरमदेरै निजर चढिया। तरै वीरमदेजी दारू री मतवाल मांहे कहणरी सुध न छै। तिण वेलां वीरमदेजीरै बहिनेवो

१ जीते जाने का, गढ के गिरने (हाथ आने) का। २ निश्चय। ३ सभवतः रणथम्भोर का क़िला (?) ४ गढ़ का शत्रु द्वारा अवरोध। ५ धौंसा। ६ शराब की गोष्ठी। ७ कसूर, अपराध। ८ सूखा हुआ कंकाल। ९ हवा।

दहियो छै तिको बैठो छै। तिणसूं मसकरी माथै कह्यौ, आजरा दहिया मतो भूंडौ[1] करता दीसै छै, गढ मिलावै ला । जरै दहियै बहनेवी कह्यौ, मड़ांनै[2] किसा बोल वचन कहो छो । तिको वाचा-बंधी[3] कासी-करोत लीधी थी, तिको चूकै नही। भवस्य माथै वीरमदे कह्यौ, मूवांरा थे जीवता भाई छो, मदत करो नै भायांरो बैर ल्यो। पातिसाहसूं मिलि नै गढ मिलावो। तद दहियै कह्यौ, बडा सिरदार, नर निंदवीजै नहीं। नरांरी अणमापी राशि[4] छै, चाहै ज्यूं करै नै म्हे तो थांहरी भली चितवां छां । पिण, मोटा बोल तो श्रीनारायण छाजै[5] । मूंढै तो इसी कहै, पिण मन मांहे जाणै छै, कदि सीख मांगि पातिसाहजीसूं मिलूं। तिसै दारूरा प्याला फिरिया। सगलांनै प्याला दे दे चाक[6] कीया। गोठ जीमिया। राति आधी गयां सीख हुई। बीजै दिन दहियै कह्यौ, बारै बरस टावरांसूं बिछोहै रह्या । अबै फते हुई, तुरक पाछो गयो। हुकम हुवै तो घरे जावां। तरै वीरमदे मोती कड़ा सिरपाव दे घोड़ो देनै घरांनै बिदा कीया। तिके असवार हुइ पाधरो खंडप-भवरांणी आयो । आगै पातिसाहजीरै कूचरी भेर हुई छै। तठै दहियो दोढी जाय अरजवेगी[7]नं घणो राजी करि मांहि कहायो, जालोरसूं रजपूत जात दहियो वीरमदेरो बैनोई वीरमदेसूं विराजो थको गढरा लैणरी अरज करण आयो छै, हुकम हुवै सो करां। तरै पातिसाहजी हजूर हाथ बंधाय बोलाया। पगे लागा। हाथ खुलाया

---

१ बुरा विचार, घात का विचार। २ मरे हुओं को, मुरदों को। ३ प्रतिज्ञाबद्ध, वचनबद्ध। ४ पुरुषार्थ। ५ शोभा देता है। ६ छका दिया। ७ अर्ज़ करनेवाले सेवक को।

बहू, दोढी जोगेसर पांणी मांगै छै, पिण जांणै म्हारा भींवड़ारो साद छै। उवारी जाऊं[1] जोगो थारी बांणी ऊपरा! इतरै भींवै जांण्यौ माता साद ऊळख्यो। तरै भींवो पोळि में पाछो मांचै जाइ बैठो। तिसै जळसु' लोटो भरि दोढी ल्याई। देषै तो जोगीसर तो नहीं। तरै कह्यौ, बहूजी साहिब, जोगेसर तो तिसियो हीज पोळि मांहे गयो। तरै माता षडाऊ पगां मांहे घालि हाथ मांहि आसो लेनै छाकरीरै हाथ लोटो देनै' पोळि आई। तिसै भींवारी नै मातारी निजर मिली नै माता ओळख्यो। तरै डोकरी आंष्यां गळगळी[2] करिनै गळ भूं'बी नै[3] कह्यौ, धन दिन आजरो, घणां दिनांरो बीछड़ियो पुत्र मिल्यौ। अठीनै भींवै ही आंषि भरी। तिसै देवै आरोगनै असास कीधो थो, तिको हाको सुणि बारै आयो। रजपूत पिण सारा भेळा हुवा, सगळां ऊळख्यौ। तारां भींवै पाछली बात हुई थी त्युं कहीं। तरै देवै कह्यौ, भाईजी, ओ राज, घोड़ा, गांव, रजपूत रावळा छै। तरै भींवो माता भाईरै हठसूं रह्यौ। दरसण उतारण[4]रो हठ घणो ही कीन्हो, पिण दरसण राख्यौ। बामो पैरै, पाघ बांधै, मुद्रा लपेटी राखै, रजपूतांनैं घोड़ा, ऊंट बगसीस करै, नै मांहे तो कोइ जायै नहीं, बारै हीज रहास[5] करायनै रह्यो। तरै देवै कह्यौ, रावळी रजपूतांणी राखो तो तिका छै, नहीं तो और सगांरै व्याह करौ। तरै भींवै कह्यौ, जांणीजसी[6]। सुष मांहे रहै छै।

हिवै पाटणथी कोस ४० ऊपरै कागळो बलोच रहै। तिको वड़ो झोकाई[7], गांव ४० रो धणी। तिणरै बेटी एक, पिडसंधी। तिका बरस

---

१ बलिहारी जाऊँ। २ अश्रु युक्त। ३ लिपट गई। ४ योगी का बाना तजने के लिए। ५ रहवास, मकान। ६ देखी जायगी। ७ शूरवीर।

११ मांहे हुई। तरै आटै भीलसूं सगाई कीवी। तिसै कागड़ै वलोचरो डील वेचाक[1] हूवौ। तरै कागड़ै कह्यौ, तुस्सांडे[2] जीवनै चैन रख, अस्सांडा लेख है त्युं हैगा। कागड़ै कह्यौ, तुस्सानै अल्ला जांणै, पै एक वात अक्खूं[3] सो सुणो। सिकारपुर में पठाणांदी घोड़ियां लैण नैं दोय तीन वेला भूका[4] दिया, तहां अस्सांडा दांत पट्टा किया, हथ पगां पड़ अन्त आया। सो पुत्र नहीं, पुत्र होय तो सिकारपुर पठांणां दी घोड़ी ल्यावै। इसो सुण पिउसंधी वोली, मैंडा वोल सचा जांणे, तुस्सांडी पुत्री हूं तो घोड़ी ल्याऊं। ओ वचन सुणि कागड़ै कह्यौ, तो पंजा[5] दे। तद पिउसंधी आघो हाथ करि कोल कियो। कागड़ै देह छोडी। तरै पिउसंधी कफन दैनै चालीसो कीनो।

अठै पिउसंधी कागड़ैरी असवारीरो घोड़ो, तिण ऊपर घोडांरी असवारी सीखै। वरस एक मांहे घोड़ो सारियौ[6] नै पकी असवार हुई। तरां पछै पठांणांरै वेटां साथै तीरंदाजी सीखै। षाकंदाज[7] मांहे हाथरी साचौट[8] सफाई सीखै, सो कागड़ो तीर सूं पांचसै पांवडा[9] रै आंतरै आदमी जिनावर उठाय लेतौ नै पिउसंधी हजार पांवडां ऊपर चोट करै, तिका जांणीजै पांवडा दससूं कीधी। इसी भांति वरस पांच सीखतां लागा। माथै केसां रो भूलो[10] रहै नै ऊपरां लपेटो वांधै। वागो, चिलकता[11] वगतर पैरै।

---

१ असमर्थ। २ तुस्सांडे, अस्सांडे, दी, अक्खूँ, ये सिंधी, पंजाबी के शब्द हैं-भाषा की यथार्थता दिखाने के लिये प्रयुक्त हुए हैं। तुस्सांडे=तेरे। ३ कहूँ। ४ आक्रमण, ढाका। ५ ताली देकर वचन दे। ६ तैयार किया। ७ .....(?)। ८ सचाई। ९ कदम। १० जटाजूट। ११ चमकते हुए।

लोही मार्यौ[1]। तरै अवै बरस सोलै मांहि हुई। तरा पछै सिकारपुर री घोड़्यां लेणनै चाली। तरै तरगस तीन भूथड़[2] लीना, कवांण तीन्न अढारटंकी[3] लीवी, तरवार दोय, कटारो एक, सिलहै साबत[4] होय घोड़ै पाखर[5] लगाय सिकारपुर सांम्हां मांड्या। तिका दिन ५/६ नैं सिकारपुरसुं उरै कोस पांच तलाई छै, तठै घोड़ांनै भेल्यौ छै।

अबै भींवै ऊढाणी एकै दिन रजपूतांनै कह्यौ, मिनष जमारै आय कोई प्रिथमी मांहि नांम न कीधो तो यूंही ज आया। तरै रजपूतां कह्यौ छै—

दूहो

नह खाधा नह मांणिया[6], लछ[7] दे सुजस न लिद्ध।
मांनहै[8] त्यां मानव्यां, केहा कारज किद्ध॥

तरै रजपूतां कह्यौ, म्हांरो मन यूं कहै छै, एकरसूं सिकारपुर पठांणांरी घोड़ी पांचसै सातसै ऊठरै[9] छै, तिके ल्यां, कुसलै घरे आवां, प्रिथमी प्रमांण नांव रहै। रजपूतां कह्यौ, वाह वाह, निपट मोटी विचारी, सांवण सषरा लेनै पधारो नै श्री माताजी करै तो पठांणांनै भूंडा[10] दिषाय नै घोड़ियां ल्यावां नै खुरी करां। तरै सारां आ बात ठहराई। तरै भींवै असवारी मांहिसुं चुण-चुण कालरा चरषा[11]

---

१ लोही मारया (मुहा० =किशोरावस्था की उमगों का दमन किया, अथवा सहनशील होगई। २ भाथड़े। ३ अट्ठारह टंक भारवाली। ४ कवच (सिलह) से सुसज्जित होकर। ५ घोड़े का कवच। ६ सुख भोगा। ७ लक्ष्मी। ८ मानव जीवन में, मानखे में। ९ निकलती हैं। १० नीचा दिखा कर। ११ काल के समान बली।

असवार हूवा। जिके ३०० टालिमा चढिया। सावण निपट सपरा हुवा। तिको दिन सात मांहे कोस पांच सिकारपुर उरै घोड़ा भेलिया। जठे राति पड़ी। जरै भींवै एक आपरो जासूस सिकारपुर घोड़ियारै हेरै[1] मेलियो। राते तो घोड़ां रजपूतांनैं वल रातब हुई नहीं। तठै दिन ऊगै पोहर भींवाजी टेवटा[2] लेवणनै गया। तठै उजलाई[3] करण नै जल सोझै। तिकै तलाई दो तीन सोझी[4], पिण खाली लाधी। तिसैं एक सांमी[5] नाडी[6], तिण मांहे धूवो उठतो दीठो। तरै भींवै जांण्यौ कोईक आदमी छै, तठै जल होसी। यू जांण नाडी मांहे आयो। आगै देखै तो मोटा लाकड़ा हुवाया[7] छै नै जिनावर एक मोटो त्रिणसायो[8] छै, तिको सेक-सेक नै पठांण खावै छै नै घोड़ां नै पिण खवाड़ै छै। इसी देष भींवै कह्यौ, क्यू पांणी छै तो कहो, ज्युं उजलाई करां। तरै कह्यौ, म्हारा घोड़ारै हांतै वादलो[9] जलसूं भरियौ छै, सो ल्यौ। तरै जोड़ी[10] मांहे जल लीधो, उजलाई करनै पाछो आयो, रांम रांम कियो। तरै पठांण कह्यौ, आवो भाईजी रांम रांम, हींदू हो तिणसें मनवार[11] करणी नावै। तरै भींवै कह्यो, भाईजी, राज अठै ही रहौ छो कै ओर कठे ही। तरै कह्यो, हूं पठांण छूं, कागड़ा बलोच को वेटो छूं, तुम कौण हो। तरै भींवै कह्यौ, हूं पाटण ऊढा भाटीरो वेटो, भींवो म्हारो नांम छै। आंपे तो गड़ासंधरा रहणवाला छां। आप अठै कुं पधारिया छो। तरै पिउसंधी कह्यो, भाईजी, सिकारपुर

---

१ खोज में। २ शौचादि के निमित्त। ३ स्नान। ४ खोजी। ५ सामने। ६ तलैया। ७ जलाया है। ८ नष्ट किया, मारा। ९ जल की झारी। १० पानी इकट्ठा हुआ स्थल, डाबर। ११ मनुहार।

की घोड़ी लैण कूं आयो छूं। तरै कह्यौ भींवैजी, म्हे पिण इण हीज कांमनै आया छां। असवार सै-तीन (३००) छै, थांसूं नैड़ा हीज छै। पिण रावलै[1] लारै साथ कितरो एक छै। तरै पिड़संधी कह्यौ—

दूहो

कंता फिरज्यो[2] एकला, किसा बिडांणां[3] साथि।

थारा साथी तीन जण, हियो कटारि हाथि॥

या वात है। आंपे भेला ही घोड़्यां ल्यां, पछै थांरी पातर[4] ह्वे तो घोड़ी टोलज्यो;[5] थांहरी पातर आवै तो वाहर पालज्यो,[6] साथ बहुतेरा है। तरै भींवैनै घणो प्यार करि आपरै साथ में ल्याया। जिसै जासूस आयनै कह्यौ, प्रभात हुवां आपणा दिसीनै घोड़ियां ऊछरसी। तरै मचकूर[7] कीयो, बल[8] रातब करणी छः, सो सांम्हो गाँव कोस ऊपर छः, तठै चालौ, निभरमा[9] पिण रहां। तरै गाँव गया। बल रातब कीधी। दिन ऊगै घोड़ी पाँचसै बछेरां-सूधी ऊछरी। तिके ताता[10] करि पासरणो[11] करिनै घोड़ियां भींवै नै पिड़संधी लीधी नै पासरणा करि देसनै चलाया। तिसै घोड़ियांरै साहणी कह्यौ, रे धाड़व्यां, कालरा पाच्या आया, घोड़ी टोलो छो। इसो कहि किरली[12] कीधी। घोड़ियां धाड़ो झूबियो[13]। तिसै पठांण सातसै इक्का बाहादर

---

१ आपके। २ घूमना, विचरण करना, रहना। ३ दूसरों के। ४ विश्वास, पसद। ५ घेर चलना। ६ आक्रमण का सामना करना। ७ निश्चय किया। ८ बलि, भोजन। ९ निश्चिन्त, निस्संक। १० घोड़े तेज करके। ११ (प्रसरण)-चलकर, धावा करके। १२ चीत्कार। १३ धावा हुवा।

सिलह साबत कीयां बैठा था, तिके घणां-सा तुरत हीज हजारी षंधारियां[१] माथे चढिया नै वांसै[२] मार फीटा कीया। तठै बलोच कह्यौ, भाई भींवा, बाहर पालो कै घोड़ी टोलो। तरै भींवैजी कह्यौ, थां इकेलांसूं टोलणी आसी नहीं, तिणसूं राज वाहिर पालो नै वेगा पधारीज्यो। इसो कहि घोड़ी टोली। तरै पिउसंधी कह्यौ, धीमा धीमा सुसते-सुसते चाल्यां जाज्यौ। तिसै वाहरू[३] देठाले, हुवा[४]। तरै पिउसंधी कह्यौ, पांवडा इग्यारैसैरै आंतरै खड़ा रहिज्यो नै ठाढा पांणीसूं जांण-मतै[५] है तिको आघो वध[६] नै आवज्यो। इतरो डीलरो फुरत देषनै वचन सुणनै धीमा पड़िया नै कह्यौ, रे तूं तो इकेलो दीसै छै, तिसका पाप कैसे लेवां। सारो साथ हुवै तो मुकालवा करां। तरै पिउसंधी कह्यौ, हजारां लाषां घोड़ा हुवै तो डरूं, इतरा तो थे म्हारी चार छो। इतरो कहि पांवडा सातसै आठसै ऊपर एक बांवल[७] रो सूको बूंठ छै, तिको ऊभो दीठो, तिणरै लेसरी पिउसंधी दीधी, सो पंपारा बारै रहया, नै कह्यौ, तुम इसको लगावो। तरै पठांण लेस चलाई, तिका पांवडा च्यारसै मूधी पोहती। तरै पठांणांरो सारो साथ चमकियो नै कह्यौ, भेटण-जोगो पठांण नहीं, जांणे द्यौ। तरै क्यां हीक कह्यौ, इतनां हीज देखके कैसी भांत जांणि दैंगे। इतरो पिउसंधी सांभलि नै कह्यौ, अब खबरदार हुवो, ग्यो मेरा तीर आवता है। तिण तीरसूं पठांण १०/२० वींध्या नै मुदी पाड़ियो[८]।

---

१ कंदहारी घोड़े। २ पीछे। ३ बचाव करने वाले। ४ दिखलाई दिये, मुठभेड़ हुई। ५ ठाढा पाणीसूं जांण मतै (मुहा० = ठंढे पानी मरना हो, बेमौत मरना हो तो। ६ आगे बढ़ कर। ७ बबूल का वृक्ष। ८ गिराया।

इसा तीर वेला ५/७ वाह्या, पठांणां सौ-दौढ़रो साथरो[१] हुवो। घोड़ियांरो सोच भूलि गया। सगलांनै जीवरो सोच हूवौ, नै पठांण तीर बावें तिको थेट[२] तांई पौंचे नहीं। तरै एकै कह्यौ,खांजी, सिधारो। तरै पिउसंधी दुवा-सिलांम करि राह वुही नै तिके आगला साथसूं जाय पोहच नै कह्यौ, घोड़ा जलद ताता खड़ो मती, पाछली फिकर बीजी वार घोड़ियां लेवो लद करज्यो। इण भांति बातां करता दिन दोय नै रात्रि दोय मारग चाल्या। तठै पाटणसूं कोस तीन ऊपरां मारग दोय फाटै। पिउसंधी घोड़ो ठांभ नै कह्यौ, भाई भींवा, अब औ मारग तुम्हारा है नै औ मारग हमारा है, घोड़ियां बांटि ल्यो। तरै एकं रजपूत कह्यो, घोड़ी मूंडका[३] माफक बांटो। तरै ऊ वचन सांभल पिउसंधी कह्यौ,कुट्टण[४] मूंडका क्या, आधी हमारी है,आधी तुमारी है। तठै क्यू चड़भड्यो[५] रजपूतांरो साथ।तरै भींवैजी कह्यौ,आपरी खातर आवै त्युं करौ। तरै पिउसंधी आधोआध कीधी। तरै घोड़ो एक सांड थो, तिको वधतो रह्यौ। तरै वलै एकै रजपूत कह्यौ, ओ सांड आपणै घोड़ियां नै राषां। तरै पिउसंधी रीस करि कमचीरी[६] घोड़ारी कमर मांहे दीधी, तिको दोय तषता हुवा। तरै पींडां दोय आपरी असवारी रा घोडारी पताकां लगाई, रीस मांहे चाल्यो। तरै भींवै कह्यौ, साथ नै थे अठे वल[७] करौ। गांवसूं जाजम, चांदणीं मंगाय नै विछायत करावज्यो, खेजड़ा[८] री छाया छै, तठै गोठरी तारी करिज्यो।

---

१ खातमा, काम तमाम हुआ। २ ठेठ, पूरी दूरी तक। ३ प्रति मनुष्य एक। ४ कुट्टिनी, एक प्रकार की गाली (क्रोधके आवेश में)। ५ कुपित हुए। ६ कोड़े की। ७ भोजन करो। ८ शमीवृक्ष।

घोड़ियां-घोड़ा जुलगा[1] मांहे दांवणा देनै छोडज्यो। भींवैजी कह्यौ, म्हे, पठांण रीसांणो जाय छै, तिको इसांनै बांह-वेली[2] राखीजै, किण हेक वेला आडो आवै, तिणसूं अठै पाछो ल्याय, गोठ जीमायनै सीख देस्यां, गाढो रजावंध[3] करि हसि हसायनै सीख द्यां नै सीख करां। इसो कहि आप पाळो[4] हीज दोड़ियो। आगै पिउसंधी कोस एक पोहती। तठै वावड़ी एक जळसूं भरी दीठी। तरै अठी-उठी आगो पाछो दीठो। देखनै मारगरी गिरमीसूं डील वेहोस होइ रह्यो थौ। तरै मन में ऊपनी, संपाड़ो[5] करूं। तरै घोड़ासूं उतरि घोड़ी जळगा मांहे चरती कीधो, आप वावड़ी मांहे ऊतरी, सिलह खोल नगन होय नै पांणी मांहि सांपड़ै छै। तिसै भींवो आय पोहतो। भींवै मन मांहे जांण्यौ, वावड़ी मांहे किसूं करै छै। यों जांण वरंडो[6] रा छेकड़ा[7] मांहे जोवै। तठै देखै तो अस्त्री छै। देख नै माथो धूणै छै। नै जांण्यो परमेश्वररा घर-मांहे घणी रीध[8] छै, नै आ जो म्हारै वैर[9] होय नै इणरै पेटरो कोई नग नीपजै तो हूं पृथ्वी माहे अमर होवूं। पिण हिवारू[10] बतळाऊं[11] तो माथो वाढै। तरै पाछो पांवडा ५० जाय नै पंपारा करतो आवै छै। तिसै पिउसंधी कपड़ा सिलह पहर हथियार लगाय वायर आयी। तिसै भींवैजी रांम रांम कहि नै कह्यौ, म्हां चाकर ऊपरै इतरी इतराजी[12] फुरमाई, हूं तो निपट

---

१ जलाशय के पास का वीहड़। २ (मुहा०) भुजा का सहायक। ३ खूब रजामद, प्रसन्न। ४ पैदल। ५ स्नान। ६ छोटी सी दीवार। ७ छिद्र। ८ ऋद्धि। ९ पत्नी। १० अभी। ११ बात करूँ। १२ ऐतराज, नाराजगी।

ऊंडो, साघणो[१] जमारीक[२] भेला रहणरो प्यार करण-मतूं छूं, मोनै चाकर करौ। यौं कहतौ जायै नै सांमौ तीखा भर लोयणां मुलकतौ[३] चोघै[४]। मूंढारै वचनांरो और हीज तरै नै पगां मांहे पाघ उतार नै मेली नै हाथ जोड़ नै कह्यौ, कै तो माथो वाढि राल़ो[५] कै मोनै चाकर करौ। तरै पिउसंधी कह्यो, भींवाजी, साच कहौ, थे आगे बावड़ी आया छा के नाया छा। तरै भींवै आपरी तरवार काढि नै मेली नं कह्यौ, आप सरवजांण छो। तरै पिउसंधी कह्यौ, तैं मोनैं छल़ी, पिण हूं तूरकणी छूं नै आंटा भीलरी मांग[६] छूं। इणरो जाब[७] कासूं छै। तरै भींवै कह्यौ, मैं सरब कबूल्यौं। तरै पिउसंधी पिण भींवाजोनैं आरै कीधो[८]। तरै घोड़ै चढ़ि घोड़ियां टोल़ नैं साथे हुई। तठै चाकर एक भींवै माता कनै मेल्यौ नै कहायौ, गोधूल़-क्यांरो[९] साहौ छै, वींदणी ले आयो छूं, बरी[१०] चूडारी गैहणांरी तयारी कीज्यौ, चंवरी मंडाज्यो। आ बात माता सांभल़ राजी हुई। घर माहे सारो सरजांम थो। तरै बाग मांहे ढोल नगारा वाजा ल्याय चंवरी बांधी। तिसै भींवै गोठ जीम नै असवार होय पिउसंधीनै राजलोक[११] में मेली, आपो परकास्यौ[१२]। तरै खीरो रूप वणायो, मैंहदी दीधी, पीठी कीधी, पेहटियो[१३] विनायक थाप्यौ,

---

१ सघन, गाढा। २ जन्मस्थायी। ३ मुसकराता हुआ। ४ देखता है, घूरता है। ५ काट डालो। ६ सगाई की हुई कन्या। ७ जवाब, उत्तर। ८ स्वीकार किया। ९ गोधूलि वेला में। १० स्त्री का दातव्य धन, वर की ओर से दिया हुआ स्त्री का वस्त्राभूषण। ११ राजमहलों में। १२ आपो परकास्यौ=निजत्व प्रकाशित किया। १३ गणेशजी का नाम विशेष।

गोधूलक्यांरा फेरा लीधा, सेहरा बधावा गाया। तठै महल एक नवो वणायो। तिण दोळा[1] कोट सात कराया। सात खंदक दिराई। पाषती रजपूत सौ-दोढसै, दोयसै वैसे। पोळांरो जाब्तो निपट घणो राखै। तिकै तंबाखूरी ठरड़ां[2] लागी रहै, गळां-बातां करै, बंदूखांरी आवाजां करै। तिको आंटा भीलरो घणो बीह[3] राखै।

तिसै बरस दोयनै बेटो एक हूवो। तिणरो नाम जषड़ो दीधो। पछै बरस एकनैं आशा रही[4]। तिको मुपड़ो पेट मांहे छै। तिसै भाद्रवैरी अंधारी रात, मेह बरसनैं रह्यौ छै, दादरा डरराट[5] करै छै, मोरिया झिंगोर खायनैं रह्या छै, बीजळी सिहर-सिलाव[6] करनैं रही छै, परनाल्यांरा पड़ताळ[7] वाजि नै रह्या छै। तठै पोहराइत[8] था, तिके आप आपरै पापती कोटसूं बैठा छै। तिण समीयै आंटो भील आयो। आगै ५/७ वेळा आयो थो, पिण जोर लागो नहीं, तिको आयो कोट सात कूदि नै मैल चढियो। परनाळांरा पड़सादां[9] थी पड़कारी निंघे पड़ी नहीं। तिण वेळा भींवो रातिरा श्रमसूं दारूरा जोससू भर नींद मांहे सूतो छै नै पिडसंधी आंटारा भोसूं जागै छै। दीवो तो गुल करि दीधो। इणनै आयो जाणि नै पिडसंधी तरवार झगड़ा वलोचरी कड़ियां[10] री छै, तिका भींतसू पड़ी कीधी छै। तिसै आंटै झरोपे चढि मूंढो काढियो। तरै वीजळीरा चमकासू पिडसंधी दीठो, जांणियो उळगाणोजी[11] पधारिया। तिसै सूती हळवै से ऊठी

---

१ चारां ओर। २ टाठ। ३ डर। ४ (मुहा०, गर्भाधान हुआ। ५ मेंढकका डुरडुर् शब्द। ६ चमक दमक कर। ७ शब्द। ८ पहरेदार। ९ घोर शब्द। १० कटि की। ११ विरही परदेशी प्रिय।

नैं तरवार काढी नैं उबाह्यां[1] ऊभी । तितरै आंटो हेठे आंगणै[2] आयो नैं जांण्यौ सूता छै, तिको वीजलीरा चमकासूं दोनां ही नें बाढसूं । तिसै वीजली चमकी नै पिउसंधी तरवार चलाई, तिको कांड़यां मांहे वूही[3] । दोइ टूक हुवा नै हेठो पड़ियो । लोहीरो चीपलो[4] हूवो । तरै पिउसंधी तरवार दलै[5] करि भींवारै पाषती पोढि रही । घड़ी दोय नैं भींवो नाड़ो[6]-छोडणनैं जाग्यो । तिको ढोलियासुं पग नीचो दीयो । तरै पगां मांहे कीच लागो । भींवै जांण्यौ, कठै ही परनाल छिटकी कै छात फाटी । तरै भींवो कहै—

दूहो

'राति अंधारी चीषलो'

तरै पिउसंधी बोली—

"आंटो वीषरियो ।"

"मै पिउसंधी भटकियो, सु ऊढो ऊवरियो[7] ।"

वलै पाछली बात पिउसंधी कही, तरै सगली बात जांणी । आंटै रै भाई सात छः । त्यां मांहे एक तो रहियो, नै वीजो अकाई निपट टणको[8] छः । त्यांसूं दोय बेर ठैहरया ।

अबै पिउसंधीरै बीजो बेटो हूवो । तिणरो नांम झुपड़ो दीधो । नै पहली वरस दोयरो जपड़ो हुवो थो । तरै गुजरात पाषती झाला-

१ (उत्+बाहु) हाथ उठाकर तलवार को तौले हुए खड़ी । २ आंगन में । ३ चली, प्रहार किया । ४ कीचड़ । ५ दलै करि (सुहा०=तलवार को कोषगत करके । ६ पिशाब करने को । ७ बचगया । ८ पराक्रमी ।

वाड़ छः । तठे षड़रो[१] दुख हूवो, नै पाटण-समीयो[२] अवल चरणोई[३] घणी हूई । तरै झाला उठै आया था । तिको हठी झालारो बेटी मास ६ माहे थी । तिका जपड़ानैं परणाई । व्याह थाली मांहे कीधो । पछे मास ६ रहि झाला देस गया पाछा । तरां पछै बरस १०/११ मांहे जषड़ो हूवो । तिको गांवरै बारै साईनां[४] रै साथै रेती मांहे रमै छः । गाँवसूं अधकोसेक माथै रमै छः । तिसे गोवालियो एक दोड़ियो आवे छः । तरै जपड़ै कह्यो, दोडियो इकसासिया[५] कुं जायै छः । तरै कह्यौ, दरबार वाहर घालण[६] नें जाऊं छूं, नाहर बहिड़[७] एक मोटी मारिनै खायै छः । तरै जषड़ै कह्यो, रे मोनें बताय । तेरे कह्यौ, म्हारी पाधर[८] नैड़ो हीज छः । तरै जषडौ टाबरांनें छोडि तरवार लेनै दोड़ियो, तिको नाहर भषतां ऊपर गयौ नै कह्यो, फिट[९] काली ढांढी[१०] रा खांगहार, पसुवांनैं ही मार जांण्यो छः । तरै नाहर कराछ[११] ले नै जषड़ा ऊपर आयो। तिसै जपड़ै नाहरनै मार लीयो । तरै टाबरां कनां सूं बेऊं[१२] तपता नाहररा घींसाइ[१३] दरबार आण राल्या। तरै भींवै जी कह्यो, बेटा, आछो कांम कीधो, पिण नाहर सिंधरा धणीरा सिकार रो छः, तिणरो सोच छः । तरै जषडैं कह्यो, वद[१४] कीधो छः । तिसै करोलां[१५] जाय सिंधरा धणीसूं कह्यो, सिकाररो नाहर थो, तिको

---

१ खाद्यपदार्थों का दुष्काल। २ पाटण की ओर। ३ खेती, घास इत्यादि । ४ समवयस्क बालकों । ५ एक साँस से, बहुत तेज । ६ फरियाद करने । ७ पहिलीवार प्रसूता होने वाली जवान गाय । ८ सीध में । ९ फिटकार, धिक्कार । १० ढोर (स्त्रीलिंग), पशु का खानेवाला) । ११ कलांछ, छलांग । १२ दोनों। १३ खिंचवाकर, घसीट कर। १४ बध, हिंसा की। १५ शिकारियोंने।

पाटणरो धणी भींवो भाटी, तिणरै वंटे मारियो। तरै असवार ५० तलब हुइनै हजूर बुलाया। तरै भींवो जषडो बेऊं, असवारसै-तीनसूं चढिया, तिके हजूर गया नै रांम रांम कीयो। तरै राजा कह्यौ, माहरी रपन[१] रो नाहर कुं मार्यौ। तरै जषड़ो बोल्यो, रजपूतांरो हींदू धरमरो जमारो छः, गऊ ब्राह्मणरा प्रतिपाल कहीजां छां, तिको गाइ मारी सुणी, दूजो बसतीरै नैड़ो आयो, तरै सरीषां साटो[२] थो, श्री परमेश्वर जी मोनैं ही जसरो तिलक दीयो, नै नाहरसूं काई समी नहीं। आ बात जषड़ारा मूंढासूं सांभलि भींवा सांम्हो जोयो। भींवो डीलौं तोवरदार[३] तो खरो, पिण जषड़ारी सिबी डील रोव-रोमंछर[४] रंग मिले नहीं। तरै जांण्यौ, बाप जिसो हुवै कै माता सरीसो हुवै। तिको इणरी माताको रंग चहिरो दीसै छः। तरै कह्यो, भींवाजी, घरे सिधावो, पिण इण जषड़ारो खेत[५] दिपावणो पड़सी, नहींतर थांहरै नै माहरै रस[६] रहैली नहीं। यों कहि सीष दीधी। भींवोजी घरे आया, पिण घणा सचींता होयनैं एकण तूटा[७]-सा ढोलिया ऊपर सूता। तरे पिउसंधी जांण्यौ, सिंध गया, कोई समाचार कह्यौ नही, कांइ जांणीजै, देखां पूछूं। इसो मनमें विचार नै उठ ढोलिया कनै आयनै पूछियो। कह्यो, राज सिंध पधारिया, पिण मोसूं समाचार कह्या नहीं नै दिलगीरो[८] किण बातरी दीसै छः। तरै भींवै

---

१ रक्षा का, पालतू। २ सारीषां साटो (मुहा०) बराबरी वालों में बदला था। ३ तौरदार, रौबदार। ४ रोम-रोमावलि। ५ क्षेत्र, वह क्षेत्र (स्त्री) जिसकी कोख में जावड़ा पैदा हुवा। ६ प्रेम। ७ टूटे हुए। ८ दिल की म्लानता।

कह्यौ, कै तो देस छूटै कै घर छूटै कै जमारा मांहे छराप[1] लागै। तरै पिउसंधी कह्यौ, क्यूं ? तरै भींवै कह्यौ, राजा जपड़ारो खेत देषणनैं कह्यौ, तिको घररी बैरां[2] किण किण देषाई नै नाकारो[3] करां तो देस छूटं। पिउसंधी कह्यौ, इणरो किसो सोच छः, थे अमल[4] करो। तरै दूणां अमल कराया, दारूरा प्याला दीधा नै भींवानै अमलांसूं आंवो[5] कीधो नै सुवांण दीयो। तरै पिउसंधी घोड़ो सांहणी[6] कनांसूं मंगाय पिलांण करि वागो पहिर हथियार बांधि नै सिंघनै चलाया। तिकै दिन-ऊगतै पहली पोल् जाय ऊभी रही।

तठै राजानै सिकाररो घणो इसक छः। तठै चोबदार कनां स्युं मुजरो कहाय नै कहायो, कागड़ा बलोचरो भतीजो-बेटो छः, सो आयो छः, तम मालम करो नै हम सुण्यां है महाराजाकू सिकार खेलणरी घणी इसक छः नै हमकूं पिण इसक छः, सो महाराजानैं कहो सिकार चढीजै, ज्यूं सिकाररो खेल देखां नैं दिखावां। तरै चोपदार आ बात राजासूं मालूम कीवी। तरै राजा घणो राजी हूवौ, करनाल्[7] कराई, भला भला सिकारी साथे लीधा, सिकारी जिनावर —चीता, स्याहगोस[8], कुतरा[9] बाज, सूर, फूदी[10] साथे लीधा नै असवार हुवा नैं वन मांहे गया। तिके आप-आपरै मुहांणे[11] खेलै छः। तठै पिउसंधीरै धके चढै[12] जिके जिनावर, तितरांरो डावो

१ कलंक। २ स्त्रियाँ। ३ नांही। ४ अफीम खाओ, चैन करो। ५ छका कर बेसुध कर दिया। ६ घोड़ों की रक्षक, क्षत्रिय जाति विशेष। ७ विशेष घटना सूचक तोप की ध्वनि। ८ एक पालतू शिकारी जानवर। ९ शिकारी कुत्ते। १० एक शिकारी जानवर। ११ सामने। १२ धकै चढ़ै (मुहा०)=सामने आवे।

कांन काट काट नै घोड़ारो तोबरो भरियो नै कैइक सूर, सांभर, हिरण निजर किया नै अउर उमराव सिकार निजर करि करि नै मुजरो करै, पिण डावो कांन न दीसै। इसी भांत पोहर ३/४ खेल नैं डेरां आया। तरै राजा कह्यौ, मीरजी, थांहरो नांव कहो। तरै कह्यौ, नांव श्री परमेश्वरीरो कै महाराजरो, पिण लोक सिकारखां कहै छः। इसौ सुणि राजा सिकारसूं घणो रीझ्यौ। तरै कड़ा मोती सिरपाव दीधा, पिउसंधी सीष मांगी। तद राजा कह्यौ, थांहरो दरबार छः, अठै ही रोजगार मिलसी, घर तो छताही[१] छः, तिणसूं पांच दिन अठै हीला[२] रहां। तरै पिउसंधी कह्यौ, फेर चाकरीनै हाजर छां। इसो कहि सीष कीधी, तिका आपरै गाँव पाटण आई। तिसै भींवोजी जाग्या। तिसै राजारा वले आदमी आया नै कह्यौ, सितावी[३] करौ, जषड़ारा षेत ल्यावो। तरै पिउसंधी भींवाजीनैं आय कह्यौ, अैं कड़ा मोती पहिरो, सिरपाव पहिरो नै तोबरो ले जावो नै कहिज्यो, सिकार मांहे जिनावरांरा डावा कांन कठै, सिकार खिलाई तिको षेत छः। इतरी बात सुणि घणो खुस्याल होय सारो सरजांम ले हजूर गया, मुजरो कीयो। राजारी निजर तोबरो मेल्यो। राजा कह्यौ, उणरी हकीकत कहो। तरै भींवैजी कह्यौ, तोबरा मांहे वसत[४] छः सो निजर मेली छः नै कड़ा मोती पहिचाणो, नै जिनावरांरा डावा कान कठै छः, ऊ[५] खेत छः। तरै राजा कह्यौ, तोबरो सूंधो[६] करो, देखां सूं। तरै जितरा जिनावर सिकार मांहे आया था, तितरांरा डावा कांनांरो ढेर हूवो। तरै राजा देखनै

१ है ही। २ मिलजुल कर। ३ जल्दी। ४ वस्तु। ५ वह। ६ उलटा, सीधा।

हैरान हूवो। नाहर, सूर, सांभर, पाताळ-छोकला, कालिहार, खरगोश चीता, वघेरा, सीह—इतरां जिनावरारो कान ढेर हूवो। तद राजा कानाने देख भींवाजीनै कह्यो—

दूहो

भूमि परंपो[1] हो नरां, कहा परंपो व्यद[2]।
भुंय विन भला न नीपजै, कण, तृण, तुरी नरिंद ॥
हंजां[3] घरि हंजा हुवै, कग्गां[4] कगा विहाय।
ऊडाणी घर जप्पडो, नग नीपजै स न्याय ॥

अै दूहा कहि सिरपाव देनै सीप दीधी। तरै गांव आया।

अबै वरस दोयनै भींवैजी राम कह्यो, तरै जपड़ो टीकै बैठो। मुपड़ो मूंढा आगै दौड़ै धावै। इसी भांति दोनूं भाई घणा हेत प्यार मांहे रहै। प्रिथमी मांहे दैणा मारणा[5] सूं नांव पायो। दातारां भूम्भारांरा नांम छः, तिणसूं चारण-भाट देस-देसरा रूपक[6] ले आळै[7] आवै। तिके लाप-पसाव[8]

---

१ पहिचान। २ अन्यथा। ३ हसों के। ४ कौवों के। ५ दान देने और युद्ध में मारने से। ६ कविता। ७ पास। ८ लाख-पसाव देने को प्रथा राजपूताने के राजाओं में बहुत प्राचीन काल से रही है। कवियों को सर्वदा लाख रुपये ही नहीं दिये जाते थे वरन् भिन्न-भिन्न राज्यों में कम-बेशी परिमाण में हाथी, घोड़े, रोकड़ी रुपये, सिरपाव, वस्त्राभूषण इत्यादि के रूप में लाख-पसाव दिये जाते थे। उदारणतः— दयालदास कृत राठौड़ों की ख्यात में एक जगह विवरण दिया गया है कि कविराज गोपीनाथ गाडण को बीकानेर के महाराजा गजसिंहजी ने संवत् १८१० में उसके काव्य-ग्रंथ "ग्रंथराज" पर लाख-पसाव दिया था जिसका परिमाण इस प्रकार

पावै । काला-गैहला[१]-रो-दातार कहांणो । इसी भांत बरस २२/२३ मांहे हूवा । मा पिउसंधी अकाईरी राड़सूं जषड़ानै झाली-दिसा[२] कोई कहै नहीं नै जषड़ानै याद नहीं । तठै आषाढ लागतै पिउसंधी आपरा माल्या[३] मांहे पौढी छः । नै पांवडा पांच-सातरै आंतरै जषड़ो आपरा माल्या मांहे पोढियो छः । तठै दिषणाधी झालावाड़-दिसी मेह बीजली सिलाव लेती दीठी । तरै पिउसंधी मोटै साद बोली, आजरी बीजली नै मेह म्हारा जपड़ारै सासरा ऊपर छः । औ सबद जपड़ारै कांने आयो । जषड़ै सोचियो, व्याह तो तीन छः, तिके उगूणाऊ[४] कै उतराधा छै नै माजी दषणाधू सासरो कह्यौ, तिको किसी भांति । राते निद्रा नाई । पोह पीली हूवां[५] सेतषांनै[६] जाय हाथ पग ऊजला करि दांतण कीधो नै स्नान-सेवा करि माजीरै दरसण आया । मुजरो करिनै आगै बैठो नै जषड़ै कह्यो, माजी आप राते म्हारा सासरा-दिसी कह्यौ, सो इण-दिसी सासरो किसो । तरै पिउसंधी मन मांहे विचारियो, मो पापणीरी जोभ रही नहीं, बेटारै कांने पड़ो । तरै मा दीठो झूठ बोलियां वणै तो सपरो । तरै मा कह्यौ, बेटा, मैं नींद में बहिक[७] नै कह्यौ होसी नै थारा सासरा तीन छः, तिके तू जांणे हीज छः। तरै जषड़ै कह्यो, माजी,

---

दिया गया है—रुपया २०००) रोकड़ी, हाथी १, हथणी १, घोड़ा २, सिरपाव १, मोतियों की कठी ।

१ आपत्ति के मार्ग या समय पर सहायक । २ झाली की ओर । ३ महल । ४ पूर्व दिशा की ओर । ५ पोह पीली होते, पौह फटते, उषाकाल में । ६ पाखाने में । ७ बहक, उन्माद, उन्निद्रावस्था

साच हीज फुरमावो, नहीं तो आपच[1] करिस्युं। घणो हठ हूवौ। तरै माता दीठो दोनूं बातां बिगड़ै छै। तद मा कह्यौ, बेटा, हठी झालारी बेटी तोनें बाळपणै परणाई थी। तिणनैं बरस २० हुवा। तिको बिचै आंरा भीलरा भाई अकाईरा गांवां मांहे राह छै, कोस सौ एक ऊपरै सासरौ छै नै कोस ८० तांई अकाईरी सींव छै, तिण सू हूं जायनैं बहू ले आवस्यूं, थे अठै जाबता करौ। भीलांसू दोय वैर छै। तठै थारा सिधावणरो कांम नहीं। तरै जपड़ै कह्यो, वाह-वाह, भली बात कही।

हिवै जपड़ै रैबारी[2]नैं तेड़ तूछियौ, घणी फरवी[3], चलाक सांढ हुवै तिका बताय। तरै रैबारी कह्यौ, महाराजा, रावळै[4] झोक[5] नव छै। तिणमें अकाळगारी तिणरी नांनी बनास पांणो पिवती नै नागरवेली री पनवाड़ी चरनै घरे आवती। तरै जपड़ै उण सांढनैं सारणी[6] मांडी। तिका मास एक मांहे सझाई। तिका कोस पचास जायनै एकै ढाण[7] पाछी आवै। तिण माथै कसणा करायनैं सावणरी तीज ऊपरै साव[8] केसरिया कसूमल पोसाष वणाय भारो गहणो पहिर सासरैनैं चलाया। तिके आधेटे[9] पोता। तठै दिन पोहर एक चढियो छै। तिको अकाई भील आदमी सौ-दोयसू तळावरी पाळ ऊपरां वड़ांरो छाहड़ी हेठो बैठो छै। जांगड़िया[10] गावै छै। अमल गळै छै। तिण समीयै जपड़ो जाय नीकळियो। तरै भीलां दीठो नै कह्यौ, श्री माताजी लुंबो[11] दीधो। इतरै भील बोल्या, जीवतो छूटो, कपड़ा ग्रहणा उरा आप[12]। जांद

---

१ हठ। २ ऊंटों का चरवाहा। ३ तेज। ४ आपके यहाँ। ५ तेज सांढ। ६ तैयार करना। ७ एकसार तेज चाल से। ८ पूरे। ९ आधी दूरी। १० गाने बजाने वाले कमीन, ढोली। ११ प्रसाद, पुरस्कार। १२ दे डाल।

जपड़ं कह्यौ, थे कहो छो सो सगलो तयार छै, पिण हूं आसालूंधो[१] झालांरै सासरै षडवा[२] कीधां जावूंछूं, पाछो फिरतो देस्यूं। तरै भीलां पूछियो, केही षांप[३] छै, किणरो डीकरो[४] छै। जपड़ै कह्यौ, पांप नै वापरो नांव तो रजपूताणी ले आवस्युं तरै कहिसूं। तरै अकाई कह्यौ, वारू-वारू, जा बापा हषरूं कह्यौ[५], रजपूताणी वेगो लेनै आवज्ये.बाप बोल मोटियारांरै[६] एक हीज छै। जरै जपड़ै कह्यौ, आवतो थांसूं जुहार करि सीष मांगि घरे जास्यूं। इतरो कहि मारग चाल्यौ, तिको सासरै गयौ। घणी खुस्याली हुई। वधाई वांटो। दिन १५/१७ रह्यौ। वरांरी सीष मागो। तरै झालां ओझणांरी[७] तयारी कीनी। जपड़ै कह्यौ, म्हे नैं झालीजी एकै दिन मांहे माजीरै हजूर जास्यां षाधरै मारग नै ओझणांनै दिन १०/१५ लागसी आवतांनैं, बीजै निरभै गैलै जासी। इसौ कहि सांढ ऊपर कसणा कराया नै असवार हूवो, तिके दिन पोहर दोढ तथा पूंणा दोय पौर चढायो छै। जठै अकाई भीलांरो झूल[८] लीयां त्यूं हीज वैठो छै। अमल गलणीयें वाढियो[९] छै। कसूंभा वत्तीसा[१०] नीकलै छै। कैइक भील अमलांरी झोकां[११] खायनै रह्या

---

१ आशालुब्ध, प्रेमातुर। २ चलान। ३ जाति। ४ लड़का, पुत्र। ५ वारू वारू जा वापा हषरू कह्यौ=भीलों की भ्रष्ट भाषा का नमूना है। अर्थ—वारी जाऊँ (वलिहारी जाऊँ), वापू, तू ने वहुत ठीक कहा है। ६ वाप वोल मोटियांरांरै—वीर पुरुषों के वाप और वचन एक ही होते हैं। ७ विदाई में वर के साथ भेजा जाने वाला सामान और अनुचरवृन्द। ८ झुंड। ९ अफीम गलने के वास्ते पीसा जा रहा है। १० वत्तीस वार पीस कर छाना हुआ अफीम। ११ झोंके, तरंगें।

छै। कैइक सांपोळा[१] करै छै। क्यां इक अमल चिपठिए[२] चाढियो छै। घणां भीलां अमल कीयो छै। तिसै सजोड़ै[३] जपड़ौ आंवतो दीठो। तरै भील मांहो-मांहे बोल्या, म्हारै डोकरै रपचूयै[४] हय्येक[५] दाष्युं[६] छै, कह्यौ हतो त्यूं हीज आयो। तिसै जपड़ै अलगै ऊभै जुहार कीयो, सांढ भेकी[७]नै रजपूताणीनै कह्यौ, थे सावचेत रहिज्यो, हूं जायनैं पाछो आऊं तिसै थे सांढरी मोहरी[८] लेनै हाथ मांहे आगलै आसण बैसि जाज्यो नै हूं पाछले आसण बैसि जास्यूं, पछै देखां किसी एक सांढ लाती तीखी खड़ौ[९] छो। वांसै[१०] आवणी तिके हूं जांणूं नै उवै जांणे नै सांढ चलावणी थांनैं भलै[११] छै। इसी भांति झालीनैं समझाय अकाई भील कनै आयो। तरै अकाई कह्यौ, जुहार-जुहार, पिण ग्रेहणो तो उतारे आपिनै जोर रपचूताणी[१२] काई हपरी[१३] दीसै छै, जांणे पावाहररो हांह[१४], तो रपचूताणी अमनैं आपि नै थारा हाच[१५] ऊपरां जीवतूं[१६]नै हथियार वगह्या[१७]। तरै जपड़ै कह्यौ, तो म्हारी नैं म्हारी रजपूताणीरो गैहणो भेलो करि ल्याऊं छूं। इसो कहि पाछो फिरियो, तिको सांढि कनै आयो। झालीनै कह्यौ, आगिलै आसण

---

१ नशे में मस्त होकर डिगमिगाना। २ लोहे का वह अंकुश जिसमें बंधी हुई कपड़े की छलनी में अफीम छाना जाता है। ३ वर-वधु के जोड़े में। ४ भीलों की भ्रष्ट भाषा में "राजपूत" (रपचूय)। ५ एक ही बात। ६ कही। ७ बिठाई। ८ ऊँट की नकेल। ९ चलावो। १० पीछे। ११ ज़िम्मेवारी। १२ रजपूतानी। १३ सुन्दर। १४ पावाहर रो हांह= पावासर (मानसरोवर) का हंस। १५ हाच (भ्रष्ट भाषा)=साच, सत्य। १६ जीव, जिन्दगी। १७ बख्सिस की, छोड़ी।

बैसि जावो। तरै झाली मोहरी हाथ मांहे लेनै चढी नै जपड़ै टांग वाली[1] नै कांब[2] चलाई नै सांढ पवने पवन लागी[3]। जिसै जपड़ै कह्यौ, पाप भाटी, बापरो नांव भींवो,मा पिडसंधीरो बेटो छूं। थांतै वैर लेणी आवै छै तो वेगा आवज्यो। इतरा वचन सुण्या नें पोला[4] हूवा नै भील गाँव-गाँव खबर दैणनैं,मारग बांधणनैं दौड़ाया नै अकाईरा आदमी दोयसै भील, एक मोभी[5] बेटो घेवरा, तिको साथ लेनै पोहता। तिको जपड़ो वांसले[6] आसण भीलां सांमो बैठो। तीर एकैसुं भील ७ तथा १० फोड़ै, तिके वळै पाणी न मागै। इसी भांति घेवरै-सुधा भील अढाईसै मारिया नै अकाईरै बांह में तीर लागो, तिको बेऊं बाहां फोड़ि नापी। अरजळ[7] हूवो पड़ियो। तठै जपड़ानै पण[8] छै, जिको लड़ाई करि मरै तिणनै वासदे[9] में घालि पछै आवो जायै। तदि सांढ झेकी नै झालीनै उतारिने कह्यो, थे मोहरी झालियां ऊभा रहौ, म्हारा हथियार छै तिका संवाहो[10], सूरा-पूरा[11] भील कांम आया छै, तिकै भेळा करि लाकड़ी द्यां। इसो कहिनै घीस-घींस[12] नै सांढ कनै न्हाखिया[13], नै अकाई भीलनै सुसकतो देप घावांसुं रंज्यो[14] नांप्यो। जपड़ो दूजां दिसी गयो। × × × × ×
जिसै जपड़ो मडां[15]री टांगां पकड़-पकड़ घीसियां लायो। सैह[16]

---

१ एड मारी। २ चाबुक। ३ पवने पवन लागी (मुहा०)=हवा हो गई। ४ ढीले, शिथिल, हतोत्साह। ५ लाडिला। ६ पिछले आसन (बैठक) पर। ७ व्याकुल। ८ प्रण, प्रतिज्ञा। ९ अग्नि। १० सँभालो। ११ शूरवीर। १२ घसीट घसीट कर। १३ डाले। १४ भरपूर, सराबोर। १५ मृतकों की, शवों की। १६ सभी।

भेळा किया । अकाई नैड़ो पड़ियो देखै छै । तितरै अकाईरै मन मांहे ऊपनी अस इण मौके अचाचूक[१]रो वार करूं नैं जपड़ानैं मार झाली उरी ल्यूं । जिसैं चकमकसूं वासदे पाड़ि[२] जपड़ो पूळो लेनैं फूंक नीची नस करि देतो थो, तिसैं अकाई तरवारि वाही । जपड़ारो माथो ढह[३] पड़ियो । झाली देषती हीज रही, क्यूं समझियो नहीं । तरै लपेटो[४] माथै मेल्ह ने उण हीज सांढ माथै बैसि झाली लेने अकाई गांव आयो । भीळांने गळि लाया । आपरै पाटा-पीड़[५] कराई । झालीने मेहलां मांहे राषी । तिसै दिन १५/१६ मे घाव फूहे आया[६] । पाटावंध[७]नैं वधाई दीधो । भीलां निछरावळ कीधी । झाली घणो कोप कीयो नैं आपघात करणी मांडी, पिण अकाईरै घरवास[८] करणो कबूल्यौ नहीं । तरै अकाई घणो रीसाणो होइ नै झालीनैं पकड़ाई नैं ग्रैहणो उरो लीधो नै पचास जूत्यांरी दिराई । वळे कह्यौ, हमेसां सांपेरो गोवर भेळो करावो नै थपावो ने दोय अढाई मणरी घरटी दोळी[९] वैसाणो नै सवामण धान हमेसा पीसाड़ो न अरटियै[१०] पाव एक सूत कतावो, पुराणा जव सेर एक खावानैं द्यौ नै अभूनै[११] नोहरै पड़ी राखौ, हमेसा दिन ऊगतै पचास पैजारां[१२]री द्यौ । इसा हवाल मांहे नोहरै राषी । तिका हमेसा कह्यौ जितरो करै । कपड़ा मोटसूता, तिके धोवण पावै नहीं । कांगसी केसां फेरण पावै नहीं । माथो धावण पावै नहीं, केस पराकण[१३] पावै नहीं । झाली मांहे अै थोक[१४] है ।

---

१ अचानक । २ जला कर । ३ गिर पड़ा । ४ साफ़ा, पगड़ी । ५ मरहम पट्टी । ६ घाव मिलने को हुए । ७ पट्टी बांधने वाला । ८ गृहवास, स्त्री बन कर रहना । ९ चक्की के पास । १० तक्ली पर । ११ सुनसान, निर्जन मकान में । १२ जूतों की । १३ सुलझाने । १४ यत्रणाएँ ।

हिवै लारै ओभणो पोहतो । तठै पिउसंधीनै जषड़ारो घणो सोच ऊपनो, जषड़ो कुसल् नहीं, बिचै भीलांरै हाथ बेऊँ रह्या, पिण मारियाँ पकड़ियांरी निघै[1] नहीं । तरै चारण एक करणीदांन, तिण जषड़ारा दांन—घोड़ा, ऊंट, सिरपाव, कुरब[2] घणा पाया था । तिण मैला कपड़ा पहिर अकाईरै गाँव आयो । तिको अकाईसूं सुभराज[3] कीयो । तिसै उठारा चारण भाट अमलांरा कोट आया । आवतां हीज कह्यौ, जषड़ा रा भुजारा भांजणहार, कलियां बैरांरा काढणहार[4]नै घणी आसीसां पोहचै । तरै ऊकाई घणो आदर दीधो । इसा सुभराज चारण बैठे-बैठे सुण्या । तिसै दरबार बडो कियो[5] । अकाई कह्यौ, दूबलो-सो चारणियो छै, अणेंनै[6] नोहरै डेरो दिराड़ो[7], भाली-तीरै[8] बाटी करै षवराड़ो[9], रूड़ां जिमाड़ज्यो[10] । तद चारण चारणनैं लीयां नोहरै आयौ । आटो घी दीनो नै कह्यौ, भाली, चारणनै बाटी करै आपज्यो । तरै चारण तूटै से मांचै बैठो । भाली रोटी करै छै । चारण पूछियो, थारो रैहणो किसै मैहल छै । इतरो सुण भाली बेऊं हाथांसूं छाती माथो कूटण लागी, हाथ वाढ-वाढ खांण लागी । तिके हाथांरै लोहीरी धारां छूटी । तरै चारण नैड़े जाय ऊपरांसू धूजतै-धूजतै[11] हाथ पकड़िया नै कह्यौ, लिषमी माता, तोनै पूछियो तो कोई अनरथ कीधो नहीं । भाली आपरी

---

१ खबर । २ प्रतिष्ठा । ३ चारण लोग राजाओं के सामने "शुभराज" शब्द कहकर आशीर्वाद कहते हैं । ४ कलिकाल में प्रतिशोध लेने में समर्थ । ५ दरबार बड़ो कियो (मुहा०)=दरबार समाप्त किया । ६ इसको । ७ दिलावो । ८ भाली के पास । ९ खिलाओ । १० जिमाओ, भोजन कराओ । ११ कांपते कांपते ।

त्रिपत थो त्युं कही, भींवा भाटीरा मोभीरी परणी छूं[1]। सरब बात चारण सांभली। रोटी क्युं पाधो क्युं न पाधी। पाछो पाटण दिन पाँच मांहे आयो। सरब मांडिनै बात कही। तरै मुषड़ै नै पिडसंधीनै जपड़ारो घणो सोच हूवो, पिण झाली दासीपणै, तिणरी ओगाल[2]री घणी फिक्कर हुई।

तरै मुषड़ै गायांरा छांग[3] मांहे टोघड़ा[4] दोय मोटा, जातीला[5] सांडरा था, त्यांनै घणा जाबता मांडि दूध धपाऊ पावै, वलै घोरी चूनडी[6] करनै दीजै। तिसे बरस १५ मांहे सारिया, रातब दाणो दीजै। इसी विध बरस दोय हुवा, तरै नाथिया[7]नै पँटावणां[8] मांडिया। तिके पांच कोस जायनै बैल[9]-जूतां पाछा आवै, बिच मांहे पोटा[10] छंगास[11] करै नहीं। इसी भांत कोस ४० जायनै चालीस पाछा दौड़िया नै दौड़िया हीज आवै। जरै मुषड़ै हलकी गुजरातण बैली जोति नै हथियार बांधि, तरगस दोय, कवांण दोय वैल ऊपरां मेलि[12] चलाया। तिके दिन एक मांहे गया। अकाईरै गाँव जाय पोहतो। दरबार गयो। अकाईनैं खबर हुई, चारण एक आयो छै। तरै भीलां अकाईनै कह्यौ, बापा, फूला चारणिया कन्है केहड़ी[13] धांहषरा[14] वलधिया[15] छै; बापा, तुम्हारी अहवारी[16] जोगा छै। तरै अकाई कह्यौ, वारू, नोहरा मांहे उतारो दिरावो, चारणियानै मारे ठोके नैं उरा लेहां[17]। तिसै चारण आय कह्यौ, गढवा डेरो ल्यो। मुषडो बैल बैठो नौहरे आय

---

१ विवाहिता स्त्री हूँ। २ कलंक, दुःख। ३ टोला, झुंड। ४ सांड, युवा गोवत्स। ५ अच्छी जाति के। ६ घी में सनी हुई आटे की बाटियाँ। ७ नाथ डाली। ८ जोतना। ९ बहली, रथ, गाड़ी। १० गोबर। ११ गोमूत्र। १२ रख-कर। १३ कैसी। १४ उत्तम जातिके। १५ बैल। १६ सवारी। १७ छीन लेंगे।

ऊतरियो। चाकर झालीनैं आयनैं कह्यौ, चारणनैं बाटी करनै आपज्यो। तिसै झाली मुषड़ारी सबी[1] देष रोवण लागी। तरै मुषड़ै पूछियो, बेदल[2] क्यूं हुवै। तरै झाली कह्यौ, भींवा भाटीरा बडा बेटारी परणी छूं, मो पापणीरो घणो खोटो जमारो छै। तरै मुखड़ै अठी-उठी जोयनैं कह्यो, झाली, तोसूं एक बात दाखूं[3] किणीनैं न कहै तो। तरै झाली बोली, मो पापण मांहे तो घणी विपत पड़ी छै, वळे अबै सूं करिस्युं। तद मुषड़ै आपरो आपो परगासियो[4] नै कह्यौ, जो थांहरै सासरै चालणो हुवै तो उठो, पिण बैल षड़ज्यो[5], बैलरो जाबतो घणो करिज्यो नै वांसे आवसो तिणनै हूं घणो ही समझावसूं। इतरो सुणत-समान[6] झाली बैल ऊपरां बैसी नै जषड़ै बैलिया जोतिया नै गांवरै बारै बैल लीधी नै कह्यौ, झालो लियां जावूं छूं, मुषड़ो माहरो नांव छै, नै आवै तिको ठाकुर बेगो आवज्यो। तरै आ बात भीलां सुणी नै ढोल हूवौ। तरै अकाई बेटा-सूधा भील २०० लेनै चढियो। तिका मुषड़ो हळवै हळवै बैल षड़ाई। भील ताता हूवा आंण पोहता[7]। तरै मुषड़ो एकै तीरसूं भील १०/१५ फोड़ै। तिकै धरती हीज पड़ै। अकाई दोय बेटां सूधो मारिया। भील पाछो एक ही न गयो। सरब भील मारिया।

इसी भांति मुषड़ै जषड़ारो वैर काढियो नै घरै आयो। जठै झाली रांम रांम करि ऊठी नै मुषड़ासूं कह्यौ, देवर थांरी घणो बेल पसरो[8], पूतरा[9] पोतांसूं वधो, धान धीणो[10] धापो, घणो राज वधतो होज्यो।

---

१ मूर्त्ति, आकृति। २ दुःखी। ३ कहूं। ४ आत्मत्व प्रकाशित किया। ५ चलाना। ६ सुनते ही। ७ आ पहुँचे। ८ वेल बढ़े, वश-लता बढ़े। ९ पुत्र। १० गाय बैल आदि धन।

कोई वळै रजपूतरो बेटो इसी भांत वैर लेज्यो। पिण मो पापणीनै लाक्कड़ी दे[1], ज्यूं पाप तो कटै नहीं, पिण क्यूं हळकी होऊं, थांहरा भाईरी षवासी[2] मांहे रहूं। तरै मुषड़ै कह्यौ, भली विचारी। तद अरोगी[3] चिण सत्य करायो[4]। तिका सत्यलोक पोंहती।

दूहो

खूटी[5] ताइ खांनाह, जिण नीपायो जप्पड़ो।
मिले नवि मेलंतांह, मांटी दूजा मांटव्यां॥
विहदातार विनाह, जाचक क्युं जीवै नहीं।
खूटी ताइ खांनाह, जिणै नीपायौ जप्पड़ो॥
पांतरियां पहलो इ, जाइ जुहारो जप्पड़ो।
नर बीजा निरलोइ, आंप्यां तळ आवै नहीं॥

इति जपड़ा मुषड़ारी बात कही। सूरवीर दातारां लही।
॥ इति श्री जषड़ा मुषड़ारी बात सम्पूर्णम् ॥

---

१ लकड़ी दो, दाहसस्कार करो। २ चाकरी, सेवा। ३ चिता। ४ सती कराई। ५ दूहा-अनुवाद—(१) वे कांने (खजाने, खान) ही समाप्त हो गईं, जिन्होंने जषड़ा-जैसे वीर-पुरुषों को पैदा किया। दूसरे पुरुषों में ऐसा पुरुषश्रेष्ठ खोजने पर भी नहीं मिलता।

(२) दातारों के विना याचक किसी प्रकार जी नहीं सकते। वे खाने ही खूट गईं जिनमें जषड़ा जैसा वीर पैदा हुआ।

(३) वीरों की पंक्तियों में सब से प्रथम जषड़ा का अभिवादन (जुहार) करना चाहिए। (उसकी तुलना में) दूसरे निरलोभी (निस्वार्थी) लोग आखों के तले नहीं आते—ठीक नहीं जँचते।

जैतसी ऊदावत

—+*+—

संवत् १४९६ भाद्रवा सुदी ४ राव सूजाजीरो[1] जन्म। संवत् १५४८ राव सूजोजी देवलोक हूवा। राव सूजारै पुत्र वाघो १ नरो २ ऊदो ३ सांगो ४ प्रियाग ५। प्रथम राव सेखो देइदास। राव सूजैजी बैठां वाघैजी रांम कह्यौ[2]। पछै टीकै[3] राव गांगो[4] बैठा। वीरमदे वाघावत[5] सोझत राजथान कीयो। सेखैजी[6] पीपाड़ राजथांन कीयो। इण तरा राजै रहै छै।

[अथ वारता]

राव गांगोजी जोधपुर राज करै। तरै धरतीरो वेध[7], राजरा अणेसा[8] ऊपरां नागोर दोलतियाखांन पातिसाही करै। तरै सेखैजी दोलतियाखांनसूं बतगाव[9] कीयो, जोधपुर सूधी[10] आधी धरती थांरी नै आधी धरती म्हांरी, नै थे मदत करो तो राव गांगानै

---

१ मारवाड़ के राव जोधाजी की दूसरी रानी हाडी जसमादे थी, जिनके तीन पुत्र नींबा, सूजा, सातल हुए। जोधाजी के बाद सूजाजी राव बन कर राज्यगद्दी पर बैठे। २ मर गये। ३ राजगद्दी पर। ४ गांगोजी राव सूजाजी के पौत्र थे। ५ बाघा के पुत्र। ६ ये भी बाघाजी के एक पुत्र थे। ७ वैर। ८ ईर्षा। ९ सलाह की। १० समेत।

उठाय[1] द्यां। तरै दोलतियाखांननै हूंस जागी[2] नै हांकारो भरियो। आपरो सामांन करिण लागो। तरै राव गांगानै खबर जांसूसां आंण[3] दीधी, थां ऊपरां सेखोजी नै दोलतियाखांन नागोरी सांमांन करि आवै छै। तरै राव गांगोजी आरावौ[4]-सांमांन सफ्त करि नै घणो साथ सांमांन लेनै कूंच कीधो। उठीसू[5] दोलतियाखांन नागोरी दरियाजोस हाथी लेनै कूच कीयो। तिणां मांहे सेखोजी फोजरा मुद्दी[6] हूवा। आंम्हो-सामां[7] डेरा दीया। संवत् १५ रा चैत्र बदी ११ रै दिन लड़ाई कीधी। तिको दोलतियाखांनरै हाथी दरियाजोस[8] छै, तिण भागां फोज भागी। तिण ऊपरां राठोड़ांरो साथ, तीखा ततखरा[9] होइनै तरवारियांरा बांड ऊडायां[10]। हाथी महावत कांम आयो। तरै दोलतियाखांनरो साथ पिण भागो। तिण समै सेखैजी सैंधा मूंढारी राड़[11], बीजो भतीजो, तिणसू सेखैजी पग मांडिया[12]। आपरा साथसू लड़िया। तिके पूरे लोहे पड़िया[13]। साथ सहु कटांणो[14]। राव गांगाजीरी फते हुई। सेखोजी लोहांसू धाप[15] ऊतरिया[16]। तरै राव गांगाजी खवासनै कहिनै अमल खवायो, पांणी पाया। क्यूं[17] सचेत हुवा। तरै

---

१ राज से हटा दे। २ जोश आया। ३ लाकर। ४ गोला-बारूद का सामान तैयार करके। ५ उधर से। ६ नेता, अगुवा। ७ आमने सामने। ८ हाथी का नाम विशेष। ९ तीव्र। १० बरबराड वर्षा की। ११ परिचित सम्बन्धियों के साथ युद्ध। १२ डट गये। १३ घावों से भरपूर घायल होकर गिरे। १४ सब कट गया। १५ तृप्त होकर। १६ गिरे। ७ कुछ

रावजी डूगरसी ऊदावत, जैतसी ऊदावत, जगनाथ नै तेजसी डूगरस्योत यां च्यारांनै कह्यौ, थे सेखाजी कनै जावो. सचेत होय थांनै[1] क्यूं जीत-हार दिसां[2] पूछै तो थे सेखाजीरी दिलासा[3] करिज्यो। तिण समैं सेखोजी आंखि खोलि नै बोल्या, क्यूं भायां, जीतो कुण। तरै डूंगरसीजी कह्यौ, जीता तो राज छो, काकाजीरी फते हुई। सेखजी कह्यौ, जो म्हारी फतै हुई हुतो तो थे म्हारै तीरै[4] ऊभा न रहता, पिण भवस्य[5]। धरती नरवेध नीलोही[6] री सींची रहै। इतरै डूगरसीजी बोल्या, काकाजी, रजपूतांरो साथ घणो अबखो[7] छै, पांणीरी तिस आगै, तिणसूं राज अब मोखंतर[8] पधारो स[9] कोई साथ अनपाणो भेळो हुवै। जरै राव सेखोजी बोलिया, हां भतीज युंहीज। म्हारा जीवणामें सकार[10] कोई नहीं, पिण म्हारो जीव च्यार बातां मै अटक्यो छै। तरै डूंगरसीजी कह्यौ, तिके च्यार वातां किसी, तिके म्हांनै कहो। तरां सेखोजी बोलिया, इतरा दिनां म्हारी मत[11] संभालियां पछै म्हे कदेइ मांहे अकेला रसोड़े जीम्यां न छां नै सदा-मद[12] पातियो[13] दे घणा रजपूतांरा भूल[14] माहे जीम्यां। तिणसूं डूंगरसी भतीज, थारो जीव दलेल[15] छै, रजपूतांनै राख जांणै छै। तिणसूं ओ म्हारो पण तूं झालि[16], ज्यू म्हारो जोव

---

१ तुमको। २ के लिये। ३ धैर्य बधाना। ४ पास में। ५ भावी प्रबल है। ६ पराक्रमी अक्षत पुरुष के वशवर्त्ती है। ७ कठिन। ८ मोक्षांतर, मोक्ष, सद्गति। ९ जिससे। १० अर्थ, प्रयोजन। ११ बुद्धि। १२ सदा की तरह, नियमतः। १३ पंक्तिबद्ध। १४ समूह। १५ उदार, विशाल। १६ ग्रहणकर।

सोगो[1] हाइ। तरै इण वातरो पिण डूगरसी ऊदावत हांकारो भरियो। वीजी वात, आपरै हाथे सांग छःताकड़ीगैल[2] रहै, तिणरो नांव नागण। तिका तेजसी डूगरस्योतनै दीधी नै कह्यो, तेजा, आ थारै हाथ राखे। तीजी वात, आपरै पहरणरो वगतर 'जलहर' थो, तिको जगनाथनै दीधो नै कह्यौ, चोथी वात करड़ी[3] छै, जिणरी आसंग होय तिको हांकारो भरो। तरै तेजसीजी बोलिया, काकाजी, करड़ी वात जैता भतीजनै फुरमावो। जरै सेखैजी कह्यौ, स्यावास जैता भतीज, तो विना इसी आसंग[4] कुण करै।

अबै सेखोजी कहै छै :—

रजपूत एक म्हारो, जाति में सूंडो, नांम राजो, मोसूं रीसायनै समाणसो[5] छडाणो कीयो[6]। तिको सूराचन्द गयो। तठै पतो चहुवांण राज करै। तिको दसरावो आयां माताजी री पूजा करै, तिणमें माणस[7] एक चढावै। तिको राजो सूंडो तिण दिन जाय पहुतो। आगै कोई चोर पकड़ नै माताजीनै चढ़ावैता। तिको उण दिन चोर कोई नहीं। तरां आदमी चाढणरी विरियां[8] हुई। रात पोर सवा[9] आई। राजा माताजीरै देवरै पूजारो साज लेनै वैठा छै। चाकरांनै हुकम कीयो छै, आदमी ल्यावो। तरै चाकर दोड़िया। आगै वाजार में आवै तो सूंडै राजैरो वेटो वरप सात में थो, तिको वाजारमें रमै थो। तिणनै चाकरां पकड़ियो। टावर थो, घीघावण[10]

---

१ चित्त शान्त हो। २ छः तराजू के वजन का, छः घड़ी तौल का (एक घड़ी कम से कम ५ सेर की गिनी जाती है)। ३ कठोर। ४ सामर्थ्य। ५ स्त्री-पुत्र सहित। ६ छोड़ चला। ७ मनुष्य, नर-बलि। ८ के समय। ९ सवा प्रहर। १० दहाड़ मार कर रोने लगा।

लागो । तरै राजो दोड़ चाकरांरो हाथ पकड़ बोल्यो, क्यूं भायां, आजरौ दिन भूखो सिपाई आय बाजार में वासो लीयो छै, म्हांतो थांरा देसरो विगाड़ कीयो सूझै नही नै इण टाबर नै पकड़ियो तिको कासूं कहो छौ। तितरै बाजाररा बांण्यां बोल्या, अरे परदेसी, थारा बेटानै माताजीनै चढावसी। तरै राजौ सूंडौ आपरा बेटानै छोडाय माताजीरै थांनक[1] जाणनै साथे हुवो। आगै राजारै हजूर ले गया, मालुम कीयो। तरै राजा कह्यौ, तयारी करो। इसो राजै सुणीयो। तरै कह्यौ, राजाजी, हूं सूंडो रजपूत छूं, सेखा सूजावतरै वास वसूं छूं नै म्हारा धणी[2] सूं आंमनो[3] कर दांणो-पाणी[4] अठै लायो छै नै थे बिना खून-तकसीर[5] बिना मोनै मारो छो, पिण ठाकुरे म्हारो धणी छै तिको वैर लीयां बिना रहैलो नही, पछै थांरो खातर में आवै त्युं करो। अबार तो जोर नही, पिण पगपीटो[6] तो सेखोजी करसी। तरै राजा कह्यौ, सेखो सूजावत पहुंचै तिण दिन वेगो मोनै मारिज्यो। इतिरो कहि राजा सूंडानै माताजीनै चाढियो। राजारी रजपूताणी नै मोटियार[7] पोपाड़ अफूटा[8] आया। तरै सेखैजी सूराचन्द ऊपरा दोड़ण[9] री मनसा घणो कीवी, पिण जोग कदेही मिलियो नही नै अठै सेखोजी कांम आया लोहे भर पड़िया। तरै कह्यौ, जैतसी भतीज, तूं रजपूताई में सखरो[10] छै, कलियां वरांरो वाहरू[11] छै, तिको औ वैर

---

१ देवालय। २ स्वामी। ३ रीस, क्रोध। ४ अन्नजल। ५ कसूर। ६ पैर पीटना, उद्योग। ७ आदमी। ८ वापिस। ९ आक्रमण करने की। १० ओ-जस्वी, बड़ा। ११ कलिकाल के अथवा पुराने, वैर का प्रतिशोध करनेवाला।

पहिर[1] । तरां जैतसी हांकारो भरियो । सेखोजी तो मोखंतर हूवा । तरां संसकार करि नै रावजी सहिर जोधपुर पधारिया नै जैतसी ऊदावत छिपीयें आया (राजथांन छिपीयै[2]) । तिको पांचा मांहे वैर पैहरियो । तिण वैर काढण[3] री घणी फिकर रहै । राते नींद आंख्यां नावं । ढोलिया ऊपर ढाल गोडां[4] मांहे देनै योगेसर-ज्यू बैठो रहै । नीसासा चतुर-पोहर मेलै । इसी तरै जैतसी रहै ।

एकै दिन प्रसतावै[5] सोलंखणीजी जैतसीजीरी मासू कह्यौ, बहूजी साहिब[6], राजरा बेटानै मोसूं मूंढै बोलियांनै मास च्यार हुवा, न जांणी -जै देही चाक[7] छै कै न छै, कनां कोई मोटो सोच छै, तिणसूं म्हारी तो आसग[8] पूछणरी नहीं, राज आरोगणनै मांहे पधारै, तरै पूछज्यो । इतरो कहि नै कांम लागा । तितरै जैतसीजो मांहे आरोगण[9] नै पधारिया । तरां बहूजी बोल्या, बेटा जैतसो, थारो डील तो गाढो[10] चाक दीसै छै नै थे राते पोढो नही, सुख न करो छो, तिको कासूं जाणोजै । तरै जैतसीजी नीसासो[11] मेल नै कह्यौ, बहूजी साहिब, काको सेखोजी कांम आया, तरै राजा सूंडारो वैर पहिरियो थो, सो दसराहो पिण दिन २० में आयो नै बोलरो सलक[12] दीसै नहीं

---

१ स्वीकार कर । २ राजस्थान के ठिकाने "छिपियै" में । ३ प्रतिशोध करने । ४ घुटनों में । ५ के समय । ६ राजपूत घरों में माता को बच्चे 'बहूजी सा', 'बहूजी साह', 'बहूजी' इत्यादि सम्बोधन से पुकारते हैं, बच्चा अपनी दादी और दादे का अनुकरण करके ऐसा कहता है । ७ स्वस्थ । ८ हौसला, हिम्मत । ९ भोजनार्थ । १० खूब तन्दुरुस्त । ११ निश्वास, दुःखभरी दीर्घ स्वास । १२ निबाहने का ढंग ।

छै। भायां में हासो[1] होसी। सूरचंद पिण अलगो[2] नै राजासूं मामलो करणो, तिणसूं फिकर घणी। दीहां[3] आवड़ै[4] नही, राते नींद आवै नहीं। इण सोच मांहे सूझै नहीं। इण भांति कहिनै बारै आयो। साथ लेनै तलावरा वड़ां पीपलां हेठै बैठा छै। जांगड़िया ऊभां[5] छै। अमल गलीजै छै। कसूंभो निकलै छै।

तिण समै रजपूत एक, साख पंवार, नांम राघोदे। तिणरो वास रातां-ढूंढां[6] छै। तिको दोयनड़ी[7] चहुवांणरै परणियो थो। तिको सासरै जातो थो। तिणरै फाटो बागो[8], फाटी पाघ, तूटी-सी पैजार[9], तूटा-सा हथियार। तिणसूं अलगो लाजतो[10] कैरां[11] मांहे छांनो[12] नीकलियो। तिको जैतसीजीरै निजरां चढियो। तरां आदमी मेल बुलायो नै पूछियो, कठै वास, कठै जास्यो, नै छांना अलगा टलता कूं निकलो। तरै राघवदे कह्यौ, महाराजा, तूटो[13] सिपाई सांमांन विना छूं, तिका दोयनड़ी जैतारण[14] रो गांव छै। तठै ओझूणो[15] लेणनै जाऊं छूं। तरै जैतसीजी कह्यो, भली वात। तिण हीज वेलां आपरा कड़ा, मोती, सिरपाव दीधा, नै अमलरी गोटी[16] एक, मिटाईरो करंडियो[17], दारूरी वतक, पानांसूं भरनै पांनदांन दीधो, और

१ हँसी। २ दूर। ३ दिन में। ४ मन का लगना। ५ ढाढी लोग गाते हैं। ६ लाल मिट्टी से पुते हुए टूटे-फूटे कच्चे मकान। ७ गाँव का नाम। ८ अँगरखी। ९ जूते। १० लज्जित होता। ११ करीलों। १२ छिपता हुआ। १३ गरीबी का मारा। १४ मारवाड़ के जैतारण परगने में दोयनड़ी नामक गाँव। १५ गौना, स्त्री को अपने पीहर से लाना। १६ टिकिया। १७ छबड़ी।

सेझवालो[1] जोताय आदमी च्यार साथे देनै बिदा कीयो। जांगड़ियांरो[2] जोड़ी साथे दीधो। इतरा देनै बिदा कीयो नै कह्यौ, रावजी, सासरै जाईजै तिको इण भांति जाईजै, सासरारा सुख नै सरगापुर[3]रा सुख सरीखा छै, पिण दिन पांच तथा दस रहै तो घणो आघ[4] वधै। इण भांति कहि रुपिया सौ-एक खरचीरा वंधाया सासरै गोठ सारू। असै तरै सूं बिदा करि आप दरबार आया। अबै राघवदे सासरै गयो। दिन पांच रह्यौ। आणो[5] करि छिपीयै आयो। तिको जैतसीजीरै वास बसियो।

अबै जैतसीजी सूराचन्द ऊपरै चढणरी तयारी कीधी। चोबोस तो आपरा रजपूत, पच्चवीसमो राघवदे नै छावीसमा आप चढिया। तिकै आछा सांवण[6] मांग्या। तरै पहिली हिरण मालाला हुवा[7]। तिण ऊपरां रूपां[8] मालाली हुई। तरां पछै गोरहर[9] मालालो हुवो। तरा पछै नाहर[10] वडाक[11] उवेड़ो[12] हुवो। तरां सांवणियां[13] सावण बेध्या[14]नै कह्यौ यां सांवणां सूराचन्दरो राजा तो हाथ चढै नै आपां मांहे कुसल बरतै नै वेढरो मांमलो छै, खित्रीरो धरम छै, पिण सूराचन्दरो राजा तो मारियो। इसी तरै सूं उछाह करता उंमंग मांहे घोड़ा धीमा-धीमा खड़ै[15] छै। तिकै पहिलो महिलांण[16] बीलाड़ै[17]

---

१ रथ, सुखपाल। २ ढोलियों की। ३ स्वर्ग-भूमि। ४ मान, आदर। ५ गौना लेकर। ६ शकुन। ७ सामने से गुजरे। ८ एक प्रकार का पक्षी। ९ बन का एक प्रकार का पशु (?) १० बैल, सांड। ११ दीर्घकाय। १२ भेट हुवा। १३ शकुनियोंने। १४ विश्लेषण किया, अर्थ किया। १५ चलाते हैं। १६ पड़ाव। १७ मारवाड़ का एक प्राचीन नगर।

कीयो। बीजै दिन कूच कीयो। जरां[1] वळे[2] सावण हूवा। तिणमें फूही[3] डावी-थकी बोली। दहियापूछि[4]रो दिठाळो[5] हुवो। रूपां मालाली हुई नै वळे कोड कीयो[6]। आगै नाहर उवेड़ो हूवो। जरै मन विवणो[7] हूवो। सारां सिरदारां सांवण बांद[8] आघा चलाया। तिको कोस दसरै माथै मैलांण कीयो। तीजै दिन चढिया। तरै सांवण हूवा, सांड धड़ूकियो[9]। आगै देवसादी तठा आगै वांहपूररै ड़ावो राजा सादियो। तारां जैतसीजी सांवण बांद घणा राजी थका चढिया। दिन सातमै मारग जातां मांहे सारा साथनें त्रिस लागी नै सूराचन्दसूं कोस च्यार तथा पाँच ऊपरां पोहता। तिसिया[10] पांणी जोवै छै। तरै कोहर[11] एक निजर आयो। तिण ऊपरां लुगाई एक पांणी भरै छै। तिका देखनै जैतसी आपरा साथसूं[12] कोहर आया नै कह्यौ, बाई रांम-रांम, पांणी पावो। तरां आसीस दे डोल भरी नै काढियो। तरै जैतसी जी आपरा घोड़ारै पताकां[13] भारी थी, तिण ऊपरां जळ आरोगणरो रूपैटो[14] थो। तिको भरनै जैतसीजी जळ अरोग्यो। तिणहीज रूपोटास्यूं सर्व साथ जळ आरोगियो। जारां[15] कूवा ऊपरै ऊभी थी, पाणी पावै थी, तिण देखनै कह्यौ, रावतां भायां, साच बोलज्यो, थां मांहे जैतसी ऊदावत किसो? तारां इसो सांभळ सर्व साथ चमक[16]

---

१ जब। २ फिर। ३ एक जानवर। ४ एक जानवर। ५ दिखलावा, दर्शन। ६ हर्ष किया। ७ चिन्तित हुआ। ८ शकुनों का स्वागत करके। ९ दहाड़ा। १० तृषित, पियासे, प्यासे। ११ कुँआ। १२ साथियों सहित। १३ जीन का पिछला भाग। १४ प्याला। १५ जब। १६ चमत्कृत होकर।

अचम्भै रह्यौ, जांणियो काई सगत[१] देवी छै। तरै जैतसीजी बोल्या, बाई, म्हे तो राजाजीरा उमराव छां। तारां पिणहारी कह्यौ, हां वीरा, थे कहो तिको सोह[२] साच छै पिण, एक म्हारी वात सांभळो। जैता-रणरै पड़गनै गांव बलाड़ो छै, जठै सीलगो करमाणंद[३] छै, तिणरी हूं बेटीछूं, म्हारो नांव हरकुंवरी छै। तिको मोनै आईदांन खड़िया[४]रा वेटानै परणाई छै। तिको गांव राजावासरो सासरो छै। तिको अठाथी अयकोस ऊपरा छै। ओ कोहर राजावासरो छै। तिणसूं मैं जैतसी ऊदावतरो नांव लीयो छै। नै थे छो इसा असवार, एकै रूपैंटे जळ आरोगियो, तिको यूं हीज इसा इकलालिया[५] होसी, त्यांरो हीज कारज सुधरसी। नै वळे एक बात सांभळो। अठै थांहरो ओद्रावो[६] घणो होय रह्यो छै; जैतसी ऊदावत दसराहा ऊपरां राजा सूडारा वैर मै सूराचन्द ऊपरां दोड़ करसी, तिणसूं सूराचन्दरा राजारै आज दसराहेरो घणो जतन करै छै। पांच-पांच सै रजपूतांरी चोकी सात बैठी छै। घणो गाढ[७] हुवै छै। बाहिरलां-मांहिलांरी घणी निघै[८] कीजै छै। सो थे उठीनै सूराचन्दरा झाड़ां खेह लगावण[९]नै जावौ छो तो हूं थांरी धरमरी पींपळी[१०] छूं। राज मो आगै आपो परगासो[११],

---

१ शक्ति। २ सभी। ३ चारणों की सीलगा शाखा का कर्मानन्द नामक चारण। ४ खड़िया नामक शाखा का आईदान नामक चारण। ५ एकता, प्रेम का वर्त्ताव करने वाले। ६ आतंक। ७ विचार, खोज, ध्यान। ८ खोज। ९ झाडां खेह लगावणनैं (मुहा०)=के मानमर्दन करने को। १० बहिन, 'कूकूकन्यां', 'पीपल-कन्या', 'छुआसणी'—ये नाम राजस्थानी में बहिन के वास्ते आते हैं। ११ आत्मत्व प्रकाशित करो।

ज्यूं हूं पिण थांनै मांहिला भेदरी वात कहिनै सुंणाऊं। तारां जैतसीजी जैतारणरी बोलीरी पारिखा करिनै जांण्यो करमाणंद सीळगासूं घणो रांम-रांम छै। तरां जैतसीजी कह्यौ, बाई, हूं जैतो नै आयो तो राजा सूंडारा वैर ऊपरां छूं, धगपीटो-सो करण सारू[1], पिण बाई, थे तो घणो गाढ बतायो, म्हे भूंब[2] किसी विध करां। तरां बाई बोली, आज दसराहो छै, थे म्हारै सासरै आयनै उठै म्हारो नांम पूछता आवज्यो। आगै थांनै म्हारै सासरिया[3] पूछसी, कठै वास, आगै किनरेयक कांम, कुण साख। तरै थे कहिज्यौ, साख तो गोड़ छां, वास तीवीजी[4], म्हारो नांव सरवण, आगै सूराचन्द चाकरीनै जावां छां, म्हानै परवांनो दे बुलाया छै, आज घणा कोसांरा खड़िया आया छां दसरावारा जुहार सारू[5]। अठै आईदांन खड़ियारो बेटो परणियो छै, तिण बाईसूं दोय संदेसा कहिणा छै। तरै म्हारा सासरिया पूछसी, राजरै बहूसूं कठारी सैंध[6]। तरै थे कहिज्यो, म्हारै पीळी आंखांरो धणी[7] सांमदांन आसियो[8] छै। तिणरी भाणेजी छै। तिका नांनेरै[9] आवणेसूं दरबारसूं घणो विवहार छै नै म्हारै पिण भाणेजी छै, नै म्हे बाईनै पूछियो थो, थारो सासरो कठै किसै गांव छै, तारां बाई राजावासिया-दिसां कह्यौ थो। नै वळे अबार म्हांनै राजाजीरो परवाणो आयो। तरै सांमदानरै तो खेतपात[10] ल्यैण-दैणरो कांम

---

१ निरर्थक उद्योग मात्र करने के लिए। २ आक्रमण। ३ सझुराल वाले। ४ गांव का नाम। ५ दशहरे के अभिवादन के लिए। ६ पहिचान। ७ पीली आँखोंवाला। ८ आसिया शाखा का सांमदान नामक चारण। ९ ननिहाल में। १० खेती-बेती का काम।

हुवो। तरै म्हांनै सांमदान कह्यो, थे बाईसूं बिगर-मिल्यां[1] जावो मती, क्युं[2] सवागारो सांमांन[3] मेलियो छै। तिणसूं म्हांनै आज सूराचंद जावणो नै महाराजसूं मिलणो। तिणसूं अठै घोड़ांनै सास खवावां[4]नै म्हे पिण घड़ीयेक कड़लोला[5] करां। पछै आघा चढिस्यां।

इसी भांति समझाय घड़ो भरिनै आप तो घरांनै आई अनै तेजसीजी घड़ी दोय बीती पछै घोड़ांनै धीमा-धीमा खड़तां राजा-वासियै आया नै पूछियो, अठै आईदांन खड़ियैरी कोटड़ी कठीनै छै। तारां चारणांरो साथ असवार तरैदार[6]-सा देखनै हथियार बांधि बांधि नै भेला हुवा नै पूछियो, कठारा असवार, कठै वास, आगै कठै जास्यो नै आईदांन खड़ियारी नै थांरै कठारी ओलखांण[7]। तरै जैतसी कह्यो, तिवीजी बसां छां, साख गोड़ छै, म्हांरो नांम सरबण छै नै म्हांरो चारण सांमदांन छै, तिणरी भांणेजो सीलगा करमाणंदरी बेटी छै। अठै परणाई छै। जिकणनै क्युं वेस-वागारो मेलियो छै। नै आगै तो राजाजी परवांनो दे बुलाया छै, जिको आज दसराहो छै, जुहार करण सारू हजूर जांणो छै। नै घणी दूर रा खड़िया आया छां, नै बाईसूं मिलणो छै। तारां खड़ियारा साथ नै परतीत आई। सगांरा नांम-ठांम ठीक पहुता, वेसास्या[8]। तरै खड़ियै आईदांन आय सुभराज कीयो। तरै जैतसीजी घोड़ासूं उतरिया। बांह पसाव[9] करिनै मिलिया। आईदांन साथे होय

---

१ बिना मिले हुए। २ कुछ। ३ सुहाग-सामग्री। ४ साँस खिलाने को। ५ कमर सीधी करें। ६ तरहदार से, ओजस्वी से। ७ जान पहिचान। ८ विश्वास किया। ९ भुजाओं से आलिंगन करके मिले।

कोटड़ी आया। आयनै कोटड़ी में एक अलायदो[१] नोरो[२] छै, तिणमै डेरो दिरायो। हथियार छुडाया। मांचा[३] ढालिया। मांहे खबर दीधी। जैतसीजी मांहे जुहार कहाड़ियो[४]। आईदांन मांहे जाय बहूनै पूछियो, बहू, थे इयां रजपूतांनै ओळखो छो। तारां बहू बोली, बापजी, तिबीजी मुसाळ[५] छै, गांवरो धणी सरवण गोड़ छै। ताहरां निसंदेह वात मानी। जीमणरी ताकीधी[६] कीधी। जरै जीमणनै पंच-धारी लापसी[७] मोकळी[८] मंगळीक[९] कीधी। घणा दाळभात वणाया। घणा बेसवारां[१०] रांधिया सांळणा[११] बणाया। जीमण तयार हूवो। तरां आईदांन जैतसीजी कनै गयो नै कह्यो, पधारीजै, रसोड़ो तयार हूवो छै। तरां जैतसीजी मन मांहे सोच कीधो जे म्हांनै तो चारण, भाट, बांमण[१२] सवासणी[१३]रो खाणरो पण[१४] छै, पिण वेळ्यां देख विणजै सो बाणियो[१५], नहीं गिंवार। इसो आलोच[१६] करिनै मन ऊपरलो गाढ[१७] कीयो, पिण मांहे अरोगणनै पांतियै बैस आरोगिया। जीम चळू[१८] भरि पांन-बीड़ा आरोगनै नोहरै आया। कड़लोळा

---

१ एकान्तवर्ती। २ नोहरा, वासस्थान। ३ चारपाई। ४ कहलाया। ५ ननिहाल। ६ त्वरा, शीघ्रता। ७ एक प्रकार का मीठा पकवान। ८ खूब। ९ मांगलिक—'लपसी' मांगलिक अवसरों पर राजस्थान के सभी गृहस्थों में पकाई जाती है। १० मसालों से मिश्रित। ११ शाक, चटनी आदि। १२ ब्राह्मण। १३ बहिन, बुआ इत्यादि। १४ इन सब के घर का अन्न न खाने का प्रण। १५ वेल्यां······बाणियो (मुहा०)=समय देखकर उचित व्यवहार करे वह तो चतुर वणिक अन्यथा···। १६ विचार। १७ ऊपरी मन से घनिष्ठता दिखलाई। १८ आचमन करके।

कीया। नै कह्यो छै,—'जीम्या जद ही जांणियै टुक हेक वासो तांणियै[१]'। इतरै आईदांन आपरा समस्त साथ ले मांहे जीमण गया। पांतियै[२] बैठा। तरै बाई बारै आई। जेतसीजीनैं डेरो दीयो तठै आई। आसीस देनै धरती वैठी। तरै जैतसीजी वोल्या, बाई, म्हांनै पण छै, बांमण, चारण, भाट, सवासणी—इतरांरो विस्वो[३] खांणरो पण छै, सो पण भांज्यो थारा दाखीण[४] सूं। इतरो कहि कटारीरी पड़दड़ी[५] मांहि सू मोहर च्यार काढि छांनी-सी हाथ मांहे दीनी नै कह्यो, वाई, रजपूत छूं तो थारो अवसाण[६] कदेही भूलू नही, पिण अवै काई सला[७] दो नै कहो, म्हे किसी भांति सूराचन्दसू झूब[८] करां। तारां वाई बोली, सुराचन्दरो राजा छै सो तिको लाखेरीरो गोड़ रांमजी तिणरी बेटी परणियो छै। तिकणरो नांम विजैकुंवर छै। तिणनै बरसा-बरस[९] व्यास तथा प्रोहितरै साथे सवागो मेलै छै। तिके असवार पचीस तथा तीसांसू आवै छै। तिके कदेहो दिन आथमियै[१०] आवै छै, कदेहो घड़ी च्याररी रात गयां आवै छै। तिके अठै होयनै नोकलै छै। कदेही पोर दोढ रात गयां आवै छै। सु कदेहोक इण गांव में वल़ करै छै। वल़[११] करनै दिन आथमतै चढै छै। तिणसू थे सूराचन्द जास्यो तरै चोकीदार खड़भड़सी[१२]। उवे जांणसी जैतसी ऊदावत

---

१ जीम्या···तांणियै (मुहा०)=भोजन किया हुआ तभी समझना चाहिये जब थोड़ी देर ठहरा जाय। २ पक्ति में। ३ अन्न पदार्थ आदि यत्किंचित्। ४ दाक्षिण्य से, चतुराई से। ५ कोष में। ६ अहसान, उपकार। ७ सलाह। ८ युद्ध। ९ प्रतिवर्ष। १० अस्त होते समय। ११ भोजन। १२ चौंक जावेंगे।

अवसि दसराहै भूंब करसो। इण ऊपरै आजरै दिन घणो जाबतो करै छै। तिणसूं चोकीदार पूछसी तरै थे मैं कह्यौ ज्यूं कहज्यो—लाखेरीरो राजा रांमजी, तिणरो प्रोहित हरदेवजी छै, बाई सारू सवागो ल्याया छै। तिण ऊपरां थांनै मांहे लेसी नै अठै थांरो सबोल[1] होय तो म्हारो फूटरो[2] दीसै। कह्यो छै—

पूणो पीहरियां तणो सासरियै न पमाय।
पीहरड़ै सबलाइयां बेटी दूणी थाय[3] ॥

इणरै वासतै राजसूं मोनै इतरो कहिणो पड़ियो। इतरी वात कहि नांवं-ठांव बताय आप तो घर मांहे गई। अबै आईदांन खड़ियो जीमनै बारै आयो। जैतसीजीसूं वातां करै छै। जारां कह्यो, ज राजसूं म्हे इतरो गाढ[4] पूछणरो कीधो, सो राज सुणियो होसी। अठै आगै बरस च्यार पहिली रजपूत एक साख सूंडो राठोड़ राजो नांम, तिको आपणै राजा माताजीनै चाढियो। तारां तिण मरतै सेखा सूजावतरो नांम लीयो नै कह्यौ, म्हारै पाछै सेखो सूजावत मारवाड़रो धणी, तिको म्हारो वेर मांगसी। तिणसूं राव गांगाजीरै नै सेखाजीरै लड़ाई हुई। तरै सेखोजी कांम आया। तिण वरियां जीव निकळतां जैतसी ऊदावत छिपीयैवास, तिणनै बैर सूंप्यो छै। तिणरी बात अठै जासूसां आंण कही छै। जैतसी ऊदावत दसराहा बिना कदेही वैरमें दोड़ै नहीं।

---

१ बोलबाला, सफलता, विजय। २ भला, अच्छा। ३ ससुराल में पीहर के सुख का पौना अंश भी नहीं रहता; पीहर में फलीफूली हुई लड़की, उसी सुख से जीवन में दिनदूनी बढ़ती है। ४ रहस्य।

तिणसूं सूराचन्दरै गोरवैं[1] चोताळै[2] असंया[3] असवार देखै, तरै पूछण रो गाढ घणो करै। तिण ऊपरां राजसूं पूछणरो गाढ कीयो। राज तो मोटा सरदार छो, मोटां राजांरा सगा छो नै राज इण दिन इण मोसर पधारिया तिको राजरो वडो सो मुजरो समिझयो। अवार दिन दस पहिली सुणियो छै, जैतसी ऊदावतरै आवणरी तयारी कीधी छै। तिणसूं राज पधारिया, वडो अवसांण[4] पूगो। जैतसीजी बोल्या, तो म्हांनै सिताव[5] जाय भेळौ हुवणो नै राजाजीरै चोकी पोहरारो जावतो करिणो।

इतरी वात करतां तीजो पोहर आयो। तारां जैतसी जी नै सारो साथ फेरां-सारां[6] गया; हाथ पग ऊजळा कीया, अमल गळिया, तिके करड़ा अमल[7] कीया। पछै आख्यांरा गोख[8], कानांरा मोर[9] छांटिया, तीखा कुरला कीया, घड़ी एक अमलनै पोढाड़ियो[10]। पछै सिनांन-संपाड़ो करि पाघ बांधी, तुलछीदळ पाघ मांहे मेल्यो, काया श्रीनारायण प्रीत संकल्पी[11]। अवै सारो साथ हथियार बांधै छै। तिको हथियार किसा-एक छै—तरवारियां किसी-एक छै—थेट[12]री नीपनी[13], सीरोही दांणादार[14], दोय आंगळ वाढ[15] फेरियां छकड़ामें वाहै तो एक घाव दोय टूक करै—तिसड़ी तरवारियां

---

१ शहर के पास कोस २/३ की दूरी पर की गोचारण की भूमि या चरागाह। २ चौताल, बड़ा ताल, मैदान, चौगान। ३ अपरिचित। ४ औसान हुवा, कार्य सिद्ध हुवा। ५ जल्दी। ६ घूमने-फिरने। ७ अफीम का गहरा नशा। ८ आँखों के पलक (गवाक्ष)। ९ कानों के पृष्ठ। १० जमाया। ११ श्री भगवान के प्रीत्यर्थ समर्पित की। १२ ठेठ की, खास। १३ उत्पन्न, पैदा हुई। १४ दानेदार किस्म का असली फौलाद, जो सिरोही की तलवारों में लगता था। १५ काट करने पर।

बेवड़ी[१] कड़्यां[२] बांधो। पछै कटारी बांधी। तिका कटारी किसी-एक छै—थेट बूंदीरी नीपनी, कड़कती वीजळी, छेड़ी सांपण[३], घणा सोना में गरगाव[४] कीधी, सकलात[५]रा म्यांन मांहे लपेटी, उचाढा[६] में गरकाब कीधी थकी बांधीजै छै। तरां पछै तरगस कड़ियां लगावै। तिकण में कालबूत[७]री नीसरी, सांठी[८] कांकरै[९] गजवेलरा भळका[१०], सोनैरी नखसी[११], तिके बांधीजै। पछै कबाणां चाक[१२] कीजै छै। तिके किणहेक भांतरी कबांण छै—असल सींगण[१३], सेर-जवांन खांचतां बड़बड़ाट[१४] करै, कायर देख भागै, अढारटांकरै[१५] चिलै लागै, लंकी कबूतररी गरदन ज्यू बांकी। तिके बांहां में घालीजै छै। तठा पछै ढालां बांधीजै छै। तिके किसी-हेक छै—असल साखी[१६] गैंडारी, घणांरी मारी वधै, मोहर-तोलै[१७] रंग लागै। तरवार, तीर, बरछीरो दाव[१८] लागै नही। इसी ढालां अलीवंध नाखीजै छै। तठा पछै सेल, तिके किसाहीक[१९] छै—सोपारीरै छड़[२०], सार[२१]रै फळ सूधी सवारी झळझळाट करै, वैरियांरा रगतरी भूखी। तिका हाथ में झाल फेरीजै छै। इसी भांति सांमांन करतां दिन घड़ी एक पाछलो आय रह्यो।

---

१ दुहरी। २ कमर में। ३ छोड़ने पर सर्पिणी की तरह वार करने वाली। ४ जड़ी हुई। ५……(?)। ६……(?)। ७ कलाबुत्त्। ८ मज़बूत, सुन्दर (सुष्ठु)। ९ दानेदार, उभरी हुई। १० दमक। ११ नक़ाशी। १२ तैयार। १३ सींग की बनी हुई। १४ टंकार। १५ अठारह टक भार वाले चिल्ले पर चढ़ती है। १६ साक्षात् असली, बिलकुल असली। १७ मोहर के बराबर तोले जाने वाले अर्थात् बहुमूल्य। १८ प्रहार, घाव। १९ कैसे-एक। २० सुपारी के पेड़ की लकड़ी से बने हुए डंडे वाली। २१ लोहा।

सूरज रसणां[1] मांहे जाय पोतो। तिण समै श्रीमाताजीनै समरि श्रीनारायणजीनै नमस्कार करि घोड़ांसूं असवार हुवा। तारां बाईसूं मिलिया, मोहर चार सिरपाव, सवागारी[2] दीधी नै सीख मांगी। तारां बाई आसीस दीधी, मनोकामना सिद्ध। इतरो कह्यौ, असवार हुवा॥ आईदांन खड़ियो पोहचावण सारू साथे हूवो, मारग बतायो। तारां जैतसीजी ऊभा राखिया, सुभराज कीयो। तारां आपरा कड़ांरी जोड़ी, मोती सिर-पाव देनै सीख दीधी। आप आघा खड़िया—

श्लोक

उद्यमं साहसं धीर्ज्यं बलं बुध्य पराक्रमं

षड़ेते जस्य होवंती तस्य देवापि संकती ?[3]

वारता—

इसी भांति घोड़ा धीमा-धीमा खड़िया, हथियार चलावता जायै छै। राति पोहर एक वितीत हुवां थेट[4] सूराचन्दरै गोरमै पोता। आगै कोस ऊपरै चोका मारवाड़-सांमो पांचसै सूं[5] बैठा छै। तिके साथ आवतो देख खड़भड़या; हाकां हलबलो[6] पड़ियो। तारां असवार एक आगै दोड़नै कह्यो, साथ मांहिलो[7] छै, लाखेरोसूं प्रोहित हरदेवजी

---

१ पृथ्वी, क्षितिज। २ सौभाग्य-सामग्री। ३ यह श्लोक बोलचाल की भ्रष्ट सस्कृत में लिखा हुवा है—शुद्धरूप ऐसा होगा।

उद्यमं साहसः धैर्य्यं, बलं बुद्धि पराक्रमम्।

षड़ेते यस्य वर्त्तन्ते, तस्य देवापि शंकिता॥

४ ठीक, ठेठ, ऐन। ५ के साथ। ६ हलचल। ७ अन्दरूनी, अपने ही।

आई सारू सवागो ल्याया छै। तारां उठी[1] रा साथमें खबर मेलाई[2] जो लाखेरीथी प्रोहितजी आया छै। मांहिसू हुकम आयो, प्रोहितजी छै तो आवण द्यो। तारां जैतसीजी आपरा साथसू घणो सावधांन हुवा थका मांहे गया नै चलाया[3]। तिके चोकी साते हो लांघी। कोठड़ी प्रोल गया। पोलियां नै पूछिया, राजाजी कठीनै[4] छै। तारां पोलिये कह्यो, माताजीरै देवल मांहे छै नै गोड़जी पिण हजूर छै, तिके पूजा में छै, और तो सारी पूजा हुई छै, पिण मांणस चढावणरी तयारी करै छै सो राज सांमला[5] महिलां मांहे डेरा दिरावो। तारां जैतसीजी देवल-सामां चलाया, सूधा देहरै ही गया। घोड़ासू उतरिया नै दोढी लोप[6] मांहे गया। आगै देखै तो राजाजी उवाड़े माथे माताजीरै आगै हाला-दोली[7] करै छै। चोर एक बांध्यो छै। तिणनै चाढण[8]री तयारी कीधी छै। तिण समै जाय जैतसीजी राजानै वकारियो[9]। कह्यो, राजा सूराचन्द, थांहसूं[10] सूडा राजारो बैर मांगूं, तोमें रजपूती होय तिका करि। तारां[11] सूराचन्दरा राजासूं तो काइं हुवो नहीं। राघोदे आघा वधतो थको[12] सेलरी राजारै घमोड़ी[13]। तिका पैलै[14] पार नीकली। तरै गोड़[15] दीठो, दीखै तो

---

१ उधर के। २ पहुंचाई, भिजवाई। ३ चल पड़ने की आज्ञा दी। ४ किधर। ५ सामने वाले। ६ उलांघ कर। ७ स्तुति-प्रार्थना। ८ बलिदान करने की। ९ प्रचारा। १० तुझसे। ११ तब। १२ आघो बधतो थको= आगे बढ़ते हुए। १३ मारी। १४ दूसरी ओर। १५ गौड़ी-रानी।

नोटः—"वकारियो कह्यो, राजा" से आगे के ४/५ शब्द हस्तलिखित पोथी में अंतिम पक्ति हैं और कटे हुए हैं।

वैरायत[१]। जरै सूराचन्दरा राजारै हाथरो सेल देहरैरै खूंणै[२] ऊभो थो, तिको गोड़ हाथ में लेनै राघवदेरै घमोड़ी। तिको राघवदे पँवार कांम आयो। तिण समै चोर बांध्यो थो, तिण जैतसीजीनै कह्यो, माहराज, मोनै बांध्यो छै, तिको म्हारा हाथ छोडो ज्यूं मोसूं चाकरी हुवै तिका करूं। तरां चोर बांध्यो थो, तिको छोडियो नै तरवार हाथ में दीधी। उण चोर गोला[३], माहिलवाड़ियां[४] रो साथ सारो बाढियो[५] नै जैतसीजी कोट मांहिला[६] रजपूत चोकी बैठा था त्यां ऊपरां पाड़िया[७]। मांहिलो साथ हाकियो-वाकियो[८] हुवो, रंग मांहे भंग कीयो। इणां तो लोह बजायो। आदमी सौ-दोढ मारिया। तरां चोर कनासूं मड़ांरा[९] माथा मँगाय माताजी आगै बावर-कोट[१०] करायो नै जैतसीजी कह्यो, माता, धाई[११] कै न धाई, जो धाई न होय तो वळे चढाऊं। तरै माताजी प्रश्न[१२] होय नै कह्यो, इतरा दिन आदमी मांगती, अबै आजसूं हीज धाई नै थारै साथ सहाई छूं। इसो वर दीयो।

अबै सूराचन्द मांहे रोळ[१३] पड़ी, कूकवो[१४] हूवो, चोकीवाळां नै खबर दोड़ी, वेगा आय भेळा[१५] हुवो, जैतसी आयो—छांनो नायो, राजासूं धोह[१६] हुवो। इसो सांभळ नै सगळै साथ दोड़ मची[१७]। बाहिरला-माहिलारी कांई खबर पड़ै नहीं। आपचक[१८] लागो। तिण

---

१ वैर-प्रतिशोध लेनेवाला है। २ कोने में। ३ सेवक-चाकर। ४ राज्य-महल में रहने वाले नौकर-चाकर। ५ काटा। ६ अन्दर वाले। ७ पड़े। ८ हक्के बक्के। ९ मृतकों के। १० टीबा, ढेर। ११ तृप्त हुई। १२ प्रसन्न। १३ शोरगुल। १४ कूकना, रोना। १५ एकत्रित। १६ धोखा। १७ हड़बड़ी मची। १८ घबराहट।

समै जैतसी ऊदावत आपरा साथसूं पाछा मारवाड़नै चलाया। तिके दिन चार में छिपीयै आया। जरै आगै बधाईदार आयो। तरै गांव मांहिसूं ढोल नगारा ले बधायनै मांहे लीया। कलियां वैरांरो वाहरू, इसो विरुद[1] लाधो।

इसी भांति जैतसी ऊदावत सेखा सूजावत कनांसं वैर, ओढ[2] नै कीयो। सम्बत् १८६८ मांहे जैतसीजी हुवा।

।। इति श्री जैतसी ऊदावतरी वात संपूर्णम् ।।

---

१ प्रशस्ति, यश प्राप्त किया। २ लेकर।

पाबूजीरी बात

—•*•—

धाँधलजी महेवे रहै सू अै उठेसूँ छोड-अर अठे पाटणरे तलाव आय उतरिया। अठे तलाव ऊपर अपछरा उतरै। ताहराँ धाँधलजीरो डेरो थकाँ[1] अपछरावाँ ऊतरी। ताहराँ धाँधल अपछरावाँ देखनै एके अपछरानूँ आपड़[2] राखी। ताहराँ अपछरा बोली। कही—बडा रजपूत, तैं बुरी कीवी, मने अपछराने अपड़नो न हुती। तठे धाँधलजी कही, जू तू म्हारे घर-वास रह[3]। तद अपछरा बोली। कही—जे थाँ म्हारो पीछो सँभालियो[4] तो हूँ थाँसूँ परी जाईस। ताहराँ घाँधल कही—थारो पीछो कोई सँभालाँ नहीं। अै बोल करनै रह्या अर उठै पाटणसूँ चालिया सू अठे कोलू आया।

अठे आगे पमो घोरंधार राज करै। ताहराँ धाँवल पमे पास तो न गयो अर कोलू आय गाडा छोडिया। तठे रहताँ अपछरारे पेटरा दोय टाबर हुवा। अेक बेटी तैरो नाँव सोना, अर अेक बेटो तैरो नाँव पाबू। तद अपछरारो मोहल[5] एकायँत[6] कीयो। उठे अपछरा रहै। धाँधलजी अपछरारी वारीरे दिन आप जावै। तद अेके दिन धाँधलजी विचारी

---

१ होते हुए। २ पकड़। मेरी स्त्री हो। ४ आगेपीछे की खबर की। ५ महल। ६ एकांत में।

जू देखाँ, अपछरा कही हती जू म्हारो पीछो सॅभाले मती, सू आज तो जाय देखीस, देखाँ कासूँ करै छै। तद पाछले पोहररो धाँधल अपछरारे मोहल गयो। ता पछे आगे अपछरा सिंघणी हुई छै अर पाबू सहजे सिंघणोनूं चूंघे छै। तद धाँधल दोठो। इतरे अपछरा फेर आपरो रूप कीयो, पाबू मिनख हुवो। तद धाँधल मोहल भीतर गयो। ताहराँ अपछरा कही—राज, म्हाँ थाँसूँ कवल[१] कियो हंतो जू जेही दिन पीछो संभालियो तेही दिन हूं थाँसूँ परी जाईस, सू आज दिन थाँ पीछो सॅभालियो छै सू म्हे जावाँ छाँ। इतरी कहनै अपछरा उडी सू पाधरो अकास चढ गई। धाँधल देखतो हीज रह्यो।

तद वाँसे[२] धाँधल पाबूने उठे हीज राखियो छै। धाय पास रहै। अर छोकरी[३] हती सू राखी। तठे धाँधलजी तो कितरे दिने देवलोक हुवा। अर पाबू अर बूडो दोय बेटा। तद बूडो टीके बैठो। लोक-चाकर सरब[४] बूडेरा हुवा। पाबूजी पासे कोई नै[५] रह्यो।

तठे धाँधलरी दोय बेटी। तैमें पेमा तो जींदराव खीचीने परणाई अर सोना देवड़े सिरोहीरे धणोने परणाई।

तठे बूडो तो राज करै अर पाबू बरस पाँचेक माँहि, पण करा-मातीक[६]। सू एके साँढ चढियो सिकार ले आवै। तद इये भाँत रहताँ सात थोरी—चाँदियो, देवियो, खावू, पेमलो, खलमल, खाँधारो, बासल—अै सात भाई। सू अै आने वाघेलेंरे चाकर। सू आनेरे देस माँहे काल। तद थोरियाँ एक जिनावर विणासियो[७]। तद आनेरे

---

१ कौल, प्रतिज्ञा। २ पीछे। ३ दासी। ४ सर्व, राव। ५ नहीं। ६ करामातवाला। ७ विनाश किया, मारा।

कवरनूं खबर गई जू[१] थोरियाँ जिनावर मारियो छै। ताहराँ[२] कंवर आयनै थोरियाँने हटकिया[३]। तठे[४] थोरियाँ अर कँवररे खानाजंगी[५] हुई। तेसूँ कँवर काम आयो। ताहराँ अै थोरी कवरनूं मार गाडा जोडने टाबर लेनै नाठा। तठे आनेनूं खबर गई जू थोरी कँवरनूं मार अर नाठा आवै छै। तठे लारांसूं आनो चढियो। तद आनो आय पहूंतो[६]। ताहराँ अै लड़िया। तेसूं थोरियाँरो बाप काम आयो। आनो इहाँरो बाप मारनै पाछो घिरियो। तद अै थोरी जेरे ही वास[७] जावै तिका ही राखै नहीं। कहै—आनै वावेलेसूं पोहचाँ[८] नहीं। तद चालिया-चालिया पमेरे आया। ताहराँ पमे थोरियाँने राखिया। तद कामदाराँ-परधानाँ कही—राज, अै थोरी आनेरे बेटेनूं मार-अर आया छै, जो थाँ राखिया तो आनेसूं वेर पड़सी, आपाँ पोहचाँ नही। तद पमे पण आनेसूं डरते थोरियाँने विदा दीवी। कही—धाँधलै[९] जावो, थाँने राखसी। ताहराँ अै थोरी गाडा लेनै बूडेजी पासे आया। आय बूडेजीसूं मुजरो कियो। कही—राज, म्हाँने राखो तो म्हे रहाँ। ताहराँ बूडे तो नीछो[१०] दियो। कही—राज, म्हारे तो दरकार काई[११] नही, पाबू भाईरे चाकर न छे, ओ थाँने राखसी।

तद अै गाडा छोडनै पाबूजीरे महल आया। कह्यो—पाबूजी कठे? ताहराँ धाय कही जू पाबूजी सिकार गया छै। तद अै पण वाँसे[१२] सिकार गया। आगे पाबूजी हिरणनूं नीर साँधियो

---

१ कि। २ तब। ३ डाँटा। ४ उसके बाद। ५ लड़ाई। ६ पहुँचा। ७ गाँव। ८ पार नहीं पा सकते। ९ धाँधल का देश या राज्य। १० जवाब। ११ कोई। १२ पीछे पीछे।

है। साँढ बैठी छै। इतरै थोरियाँ पूछियो। कही—रे छोकरा, पावूजी कठे छै? तद पावूजी बोलिया। कही—पावूजी आप सिकार खेलणनूँ पधारिया छै। तठे थोरी पण उठे ऊभा। तद थोरियाँ आपस में समस्या बोली[1]। कहियो—छोकरो ऊभो छै, जो आपाँ साँढ लेवाँ तो आजरी आपणी वल्[2] कराँ। इतरी थोरियाँ विचारी। तठे पावूजी तो कारणीक मरद[3], पावूजी इयाँरे जीवरी लखी। तद पावूजी बोलिया। कही—रे आ साँढ थे ले जावो, थाँरे डेरे आजरी वल् करो, पावूजीनूँ हूँ कह लेइस। तद थोरिया साँढ लेनै डेरे गया। तठे इयाँ साँढ मारनै डेरे वल् कीवी। अर पावूजी हिरण लेनै डेरे आया।

तठे पाछले पोहररा थोरी पावूजीरे मुजरे आया। आगे पावूजी बठा छै। तठे थोरियाँ विचारियो। कही—रे ओ तो ओ हीज, जै[4] आपाँने साँढ दई हती। तद थोरियाँ धायने पूछी। कही—पावूजी कठे? ताहराँ धाय कह्यो—रे वीरा, औ बैठा, तूँ ओळखै नहीं? तद इयाँ पावूजीसूँ सिलाम कीवी। तद पावूजी चाँदेने कही—रे चाँदा, म्हारी साँढ तने भळाई हंती सू कठे? ताहराँ चाँदे कही—राज, थाँ म्हाँने दीवी वल् माँहे, सू म्हाँ खाधी छै। ताहराँ पावूजी कही—रे अैसी किसी हुई छै सू साँढ खाधी, वळनूँ सीधो दिरासाँ, पण साँढ किसी भाँत खाधी छै? ताहराँ पावूजी कही—साँढ थाँ खाधी काई नहीं। ताहराँ चाँदे कही—राज, खाधी, सु हमे[5] कठेसूँ ले आवाँ?

---

१ समस्या बोली=सलाह की। २ मांसयुक्त भोजन। ३ कारण-वश मनुष्य बने हुए, अवतारी, लीला-पुरुष। ४ जिसने। ५ अब।

ताहरां पाबूजी साथे माणस[1] देनै[2] कही—घरे जाय खबर तो करो। ताहरां थोरी माणसरे साथे हुयनै डेरे जाय देखै तो कासूं[3] ? सांढ बैठी छै, जोवै छै। तद थोरियां आपरी बैरांने[4] पूछी। कही—हे, आ सांढ अठे के[5] बांधी ? ताहरां बैरां पण[6] कही—राज, आगे तो नहीं थी, पण हणे हीज[7] म्हारे निजर आई। ताहरां थोरियां विचारी जू ओ कडो रजपूत करामातीक छै, आपांने ओ राखसी। तद अै सांढ लियां-लियां पाबूजी पासे आया। तद पाबूजी कही—रे, सांढ थे कहता हता जू खाधी ! तद थोरियां कही—राज समथा[8], म्हांनूं राज परचो[9] देखायो। ताहरां पाबूजी कही—तो थे रहसो ? ताहरां थोरियां कही—राज, म्हे रहसां। तद थोरी पाबूजी पासे चाकर रह्या। अै इये भांत रहे छै।

पछे बूडेजीरी बेटी केल्हण गोगेजी चवाणनूं परणाई। तद केई[10] गायां संकलपियां, केई कंई[11] सकलपियो, अर पाबूजी कही जू बाई, हूं तने दोदे सूमरेरी सांढांरा वरग[12] आंण देईस[13]। तद गोगेजी हंसिया। कही—ओ दोदो सूमरो छोटो रावण कहीजे, तेरी सांढां किसी भांत ले आसी ? तठे पाबूजी बोलिया। कही—सांढां आण देईस। गोगाजी तो परणीजनै हलाणो[14] ले गांव गया छै अर वांसे पाबूजी हरिये थोरीनूं कही—रे हरिया, दोदेरी सांढां हेर आवज्ये, सांढां बाईनूं आण देवां, बाईने सासरिया हंससी, कहसी काको सांढां कद आण देसी।

---

१ आदमी (नौकर)। २ देकर। ३ क्या। ४ स्त्रियों को। ५ किसने। ६ भी। ७ अभी। ८ सामर्थ्यवान्। ९ चमत्कार। १० किसीने। ११ कुछ। १२ झुंड। १३ लादूंगा। १४ दहेज आदि।

तठे हरियो तो साँढाँरो हेरू[1] गयो छै अर चाँदियो रोज पाबूजीने कहै जू आने बाघेलेरे माथे म्हारो बैर छै, मने बैर दिरावो।

तठे एके दिन सिरोहीमें देवड़ेरी बाघेली राणी अर सोना महलायत में बैठा चौपड़ खेलै छै। सू बाघेलीरे बाप गहणो दियो हंतो, तैसूँ बाघेली गहणेरी बडाई करै, आपणो गहणो वखाणै, अर सोनल रूपरी फूटरी सू आपरो रूप वखाणै। तठे अै आपसमें बोलियाँ[2]। ताहरां बाघेली सोनानूँ मेहणो दियो। कही—थारो भाई थोरियाँसूँ भेलो जीमै। तठे सोनल रीस कीवी। तैसूँ देवड़े पण कही जू थे रीस क्यों करी, साच कहै छै जू पाबू थोरियाँसूँ भेलो तो वैसै छै। तद सोना कही—थे कहो सू खरी, पण जिसा भाईरे थोरी छै तिसा थाँरे अमराव[3] ही कोई नहीं। इतरी सोना कही। तैसूँ देवड़ो रीस कर उठियो। तठे ताजणो[4] देवड़ेरे हाथ हंतो। तैसूँ देवड़ै तीन ताजणा मारया। तद सोना कागद लिखने पाबूजीनूँ मेल्हियो। लिखियो जू इमै भाँत बाघेलीरे कहे देवड़े मोनूँ चोट वाही। कागद आदमी ले जाय नै पाबूजीरे हाथ दियो। तद पाबूजी कागद वाँचने चाँदेनूँ बुलाय अर कही जू तयारी करो, आपाँ देवड़े ऊपर जासाँ, बाईरो कागद आयो छै।

तठे अै सात असवार थोरी नै[5] अेक असवार पाबूजी। पाबूजीरे चढण कालमी[6]। काछेला चारण समुंद्र खेप भरण[7] गया हंता। सू

---

[1] खोज में। [2] बोलचाल हो गई, बात-ही-बात में छेड़छाड़ हो गई। [3] उमराव, सरदार। [4] चाबुक। [5] और। [6] घोड़ी का नाम। [7] व्यापार के लिए सामान।

इहाँरे एक घोडी । जद अै समुद्ररे कांठै[1] आय उतरिया, तद रातरो जल-घोड़ो नीसरनै घोडोनूॅं लागो । तैरी काल्वी घोडी नीपनी[2] । सु आ घोडो काछेली पासाँ जींदराव खीची मांगी । तद चारणाँ न दीवी । अर बूडे मांगी तद पण न दीवी । काछेलाँ घोडी पावूजीनूॅं दीवी । तद कही—राज, थाँने घोडी देवाँ छाँ सू थे म्हाँरी परवरदास्त[3] घणी करज्यो । तद पावूजी कही—थाँनूॅं काम पड़ियाँ जूती पहराँ[4] नहीं । ओ बोल कर लीवी । तैसूॅं जींदराव अर बूडे दोनाँ ही चारणासूॅं रीस कीवी, दुख पायो ।

तठे पावूजी असवार हुयनै बूडेरे डेरे आया । बूडेसूॅं मुजरो कियो । तठे पावूजी भीतर भाभीनूॅं मुजरो कहायो । ताहराँ छोकरी भीतर जायनै डोड-गहेलड़ीनूॅं कही जू बाईजी राज, पावूजी थाँनूॅं जुहार कहावै छै । ताहराँ डोड-गहेली छोकरीनूॅं कही जू देवरनै कह जू थाँने बाईजी भीतर बुलावै छै । ताहराँ पावूजी भीतर गया । तद डोड-गहेली पावूजीनूॅं कही जू पावू, थाँने चारण पासे घोडी लेणी न हुती, थाँरे भाई माँगी हंती तैने लेणी नहीं । ताहराँ पावूजी कही जू जो भाभेजीरे[5] लेणी छै तो आ हाजर छै । ताहराँ भोजाई कही जू हमे काहणनूॅं[6] लेवै, पण तूॅं घोड़ीरो कासूॅं[7] करीस, खेत वाह अर बैठो खा, पण दीसै छै घोड़ी लीवी छै तो धाड़ा करसी । ताहराँ पावूजी कही जू जो बूडेजीरे घोडी लेणी छै तो लेवो अर जो थे

---

१ किनारे । २ जनमी । ३ पालना, रक्षा । ४ जूती तक पहनने की ढील न करें, शीघ्रातिशीघ्र आवेंगे । ५ बड़े भाई के । ६ किस लिए । ७ क्या ।

मेहणा बोलो छो तो म्हे रजपूत, घोड़ा म्हाँने ही चाहीजे छै, अर धाड़ेरो कहो छो तो डीडवाणेरा[1] होज धाड़ा ले आवाँ।

इतरो पाबूजी कही तद डोड-गहेली बोली। कही—जासो तो सही पण म्हारा भाई असा न छै जिके थाँने धाड़ो ले आवण देवै, का तो पोंहच अर राखै अर जो जाणै जू बहनोईरो भाई छै तो मारै नहीं तो अव्वल आँसुवे रोवावै। तठे पाबूजी कह्यो—म्हे राठोड़ छाँ, डोडां कदे राठोड़ कोई नाठियो सुणियो नहीं।

डीडवाणे डोड राज करता हुंता। तठे बूडोजी परणिया हुंता। तठे पाबूजी भोजाईसूँ वाद करनै उठे डेरे आया। तठे चाँदेनूँ बुलायनै पाबूजी कही जू चाँदा, आपाँ देवड़े पछे जासाँ पण पहली डीडवाणेरो धाड़ो ले-अर आसाँ। तद अै चढिया। पाबूजी असवार नै थोरी साते भाई था। तठे अै चालिया सु डीडवाणेरे निजीक आया। ताहराँ पाबूजी तो अेक थल माथे तरगस ऊँचो नाखनै, आप घोड़ो बाँधनै, गोडो[2] खाय बैठा अर थोरियाँ साँढाँरा वरग लिया। तठे थोरियाँ जायनै सात-सात आपड़नै चढ़-अर साँढाँ चलाई। तद रैबारियाँ जायनै डोडाँ आगे पुकारियो। कही—साँढाँ लीवी, वाहर[3] चढो। तद डोड पूछी। कह्यो—रे कितरा एक असवार छै। ताहराँ इयाँ कही—राज, सात प्यादा थोरी चोरटा छै, तिके लियाँ जावै छै। ताहराँ वाहर चढिया। तठे थोरी तो साँढाँ लेनै आया निसरिया अर वाँसेसूँ वाहररा असवार जे थल पाबूजी बैठा हुंता नै थलरी बराबर

---

१ डीडवाणा में डोड राजपूतों का राज्य था, डोड गहेलड़ी वहीं की राजकुमारी थी। २ घुटने के बल। ३ रक्षार्थ।

आया। तठै पाबूजी तीर-कारी[1] कीवी। तेसूँ असवार दसेक मार लिया। तठै पाबूजी चाँदेनूँ अर बीजा थोरियाँनूँ साद[2] कियो। कही—पाछा आवो। ताहराँ थोरी पाछा विरिया। तठै घोड़ा लेनै थोरी चढिया[3]। इतरे वाँसे सिरदार दोड़ आय पहूँता। ताहराँ इयाँ पाबूजीरे साथरा थोरियाँ डोडाँनूँ आपड़ लिया। ताहराँ बाकीरी फोज पाछी विरी। तद पाबूजी कही—रे साँढाँ छोड देवो, आपाँने इयाँ डोडाँसूँ काम हंतो सू ले हालो। ताहराँ अै डोडाँने लेनै रातूं-रात चालिया सु कोलू आया। तठै डोडाँनूँ तो कोटड़ी माँहे राखिया अर आप मोहलमें जाय पोढिया।

तद परभात हुवो। ताहराँ पाबूजी जागिया। तद पाबूजी धायनूँ कही—धायजी, थे डोड-गहेलीनूँ जाय अठे ले आवो, कहो जू पाबूजी कह्यो छै जू थे भाभीजी आयनै म्हारो मालियो देखो, मैं नवो करायो छै। तठै धाय तो बूडेरी बहूने लेण गई अर पाबूजी थोरियाँनूँ कही—थे डोडाँने पाघसूँ मुस्कियाँ बाँधनै चूँटिया तोड़ रोवाय झरोखे नीचे आय ऊभो। इतरे धायजी डोड-गहेलीनूँ कही—राज, थाँने पाबूजी बुलावै, कहै छै जू म्हाँ नवो मालियो करायो छै सु थे पधारनै देखो। ताहराँ डोड-गहेली बहली बैसनै पाबूरे महल आई। आगे पाबूजी बैठा हंता सू उठ मुजरो कियो। कही—भाभीजी राज, झरोखे नीचे ख्याल[4] छै, देखो। ताहराँ आ झरोखे नीचे देखण लागी। नीचे जैसो ही देखियो तैसो थोरियाँ डोडाँरे चूँटी तोड़ी। तैसूँ

---

१ तीरंदाजी। २ शब्द किया, पुकारा। ३ थोरियों के पास अभी तक चढ़ने को घोड़े नहीं थे। ४ तमाशा, खेल।

डोड रोवण लागा। तद डोड-गहेली देखै तो कासूँ ? भाई नीचे बाँध्या छै अर रोवै छै। ताहराँ डोड-गहेली कही—पावू, ओ कासूँ सूल[1] छै, मैं तो तोनूँ हँसती वात कही हती। तद पावूजी कही—भाभीजी, हूँ पण हँसतो ले आयो छूँ, पण रजपूताँनूँ वैण बोलजे नहीं, महणा कपूतानूँ कहीजे। तद डोड-गहेली कही—भली कीवी, हमें छोडो। ताहराँ पावूजी डोडाँनूँ भोजाईनूँ दिया अर आप डेरे बैठा। तठे डोड-गहेली भायाँनूँ ले जाय दिन च्यार राखनै पछै घराँरी सीख दीवी छै।

अर पावूजी देवड़े ऊपर चढण लागा। तठे पावूजी असवार हुवण लागा। इतरै हरियो साँढाँ हेरनै आयो। पावूजीनूँ कही-राज, दोदेरी साँढाँ आपाँरे हाथ न आवे, दोदो जोरावळ छै, दोदेरो राज वडो राज छै, बीच पंचनद[2] वहै छै, ओ दूजो रावण बाजे छै, आपाँ उठे जावणरा नहीं। इतरी हरिये थोरी आपनै कही छै, आपां उठे जावणरा नहीं। तठे पावूजी कही-तो भले थिरता सनमा लेसाँ, हणे तो देवड़े ऊपर हालो। तठे अै आठ असवार ने एक हरियो प्यादो नवे आदमी सिरोही ऊपर चढिया। तठे बीच आनो बाघेलो रहतो। आनेरो वडो राज हंतो, पण अै तो करामातीक। तठे बीच जाँवताँ चाँदे कही-राज, ओ तो अठे रहै छै, अर म्हारो वैर छै। ताहराँ अै चालिया। आनेरै सहर आया। आनेरो वाग हंतो जू जिको वाग आय उतरतो तेनूँ जीवतो जाँवण देतो नहीं। तठे आनेनू माळी जायनै कहो जू राज, केई

[1] कलंक। [2] सम्भवतः सिन्धुनदीसे तात्पर्य है।

असवार आय उतरिया छै, बाग सरव खोस खाधो। तठे आनो इतरी सुणनै असवारी करनै, चढियो। तठे पाबूजी अर आनेरे लड़ाई हुई। तेसूं आनेरो सरव साथ मरांणो। आनो पण काम आयो। तद पाबूजी आनेनूं मारनै आनेरे कंवरनूं कही-तने पण मारीस। तठे आनेरे बेटे आपरी मारो गहणो पाबूजीरी निजर कियो अर पाबूजी कवरनूं टीके बैसाणियो। आनेरे बेटेनूं टीके बैसाणनै आप आय देवड़े ऊपर गया।

रातूं-रात जायनै सिरोही घेरी। तठे देवड़ेनूं पाबूजी कही जू देवडा, तूं जाणीस जू पाबूजी मैंसूं मिलण आयो छै, सू हूं मिलण नायो[१] छूं, तैं दाईने चावखा वाहा छै तेरे वास्तां आयो छूं। तठे देवड़ो पण असवार सरव भेला करनै पाबूजीरे साहमो[२] आयो। तठे लड़ाई हुई। तद पाबूजी चांदनूं कही जू चांदा, देवड़ो आपां मारो मती, आण्ड[३] लेवो। तद अै लडिया। तेसूं देवडेरो साथ सरव मरांणो अर देवड़ानूं आपड़ आ कही—देवड़ेरे खांडो ..... मारो मती। ताहरां पाबूजीरी बहन वहली वैसनै भाई पासे आय कही—भाई, देवडानूं मने कांचलीरो[४] दे। तठे पाबूजी देवड़ानूं बहननूं कांचलीरो करनै छोड, आनेरी बेटी बाघेलीरो मारो गहणो बहननूं देनै कही-बाई, ओ गहणो तने दायजेरो छै। तठे सालो-बहनोई आपसमें रस हुवा[५] छै। ओ पाबूजीनूं लेनै सिरोही गढ मांहे गयो छै। तठे

---

१ नहीं आयाहूँ। २ सामने। ३ पकड़। ४ बहिन को बड़ा भाई कांचली (अंगिया) पुरष्काररूप में देता है, ऐसी कौटम्बिक प्रथा है। ५ मित्र होगये।

सोनलने पाबूजी साथ लेनै बाघेलोनूं बाप सुणावणने[1] गया छै। तठे सोना बाघेलोनूं कही जू बाईजी, थे लोकचार करो, थांरे आने बाघेले बापनूं म्हारो भाई मार आयो छै-थोरियांरे वेर मांहे। तठे बाघेली बापरो गोडो वलायो छै[2]।

पाबूजी अठे बहनरे भात करनै जीम-अर आप उठेसूं चढियो। तद चांदेनूं कही, थारे बापरो पण वैर लियो छै अर बाईरो पण वैण पालियो छै, हमे[3] चालो दोदेरी सांढां ले आणनै भतीजीनूं देवां, उवेनूं पण सासरिया महणा[4] देसी। तठेसूं चढिया सू अै दोदेरे चालिया। हरियेनूं आगे किन्हो। तद बीच मिरजो खान रहे। तठे इयेरे पण एक बाग। तेमें उत्तर सकै कोई नहीं। जिको उत्तरै तेनूं मारै। इयेरो पण बडो राज। ताहरां पाबूजी चालिया। मिरजे खानरो सहर-बाग आयो। तठे बागमे जायनै बाग सो[5] तोड़ खुवार[6] किन्हो। ताहरां[7] माली उठे जायनै पुकारियो छै जू असवार अेक उतरियो छै सू बाग सरब विघूंसियो[8] छै। तद इयें पूछी। कही-किसो एक रजपूत छै। तद माली कही–राज, हिंदू छै, डावो पाव बांधे छै जी, इयेसूं आपां पोंहचां नहीं[9], जे आनो बाघेलो मारियो तेसूं आपां पोंहच सकां नही, साहमो रसाळ[10] ले हालो। तठे सियो घोडा, कपड़ो, मेवो लेनै साहमो बाग आयनै

पाबूजीसुं मिलियो। तठे पाबूजी इयेसुं राजी हुवा। तद बीजो तो सरब पाछो दियो नै अेक घोड़ो राखियो। ते ऊपर हरियेनूं चाढियो।

अठे इयेसूं मेल करनै पाबूजी आप चढ़िया छै तिके पंचनदी[1] ऊपर आय ऊभा। ताहरां पाबूजी चांदेनूं कही—चांदा, पाणीरो थाग[2] ले, देखां कितरोहेक ऊंडो छै। ताहरां चांदिये थाग लियो, नदी वांसांरे डांभ[3] वहै। तद चांदे कही—राज, पार हुई सकां नहीं, अर अठै डेरो करो, कदे उलै[4] पार सांढां आसी तद आपां लेसां। इये भांत बात करतां पाबूजी माया फेरी तेसूं पेलै[5] पार जाय ऊभा रह्या। ताहरां चांदे फेर परचो[6] पायो। ताहरां चांदेनूं कही—चांदा, सांढांरा वरग[7] घेरो। तद थोरियां जायनै सांढां सरब लेनै टोळेनूं बांध लियो। अै सांढां लेनै पाबूजी पासे आया। तठे पाबूजी टीलो रेबारी हतो तेने छोडनै, बांडै[8]ऊंट चाढनै कही—रे तूं दादेनूं कही जू सांढांरा टोळा राठोड लियां जावै छै, जे घेर सकै तो वेगो आये। तठे रेबारी तो जाय पुकारियो। कही—रावण सिळामत, सांढांरा वरग सरब लिया। ताहरां दोदे कही—रे भांग खाधो छै नहीं, इसो आज कुण छै जो दोदे सूमरे[9] सूं बैर करै, सांढां

---

१ पंजाब। २ गहराई, थाह। ३ बांसोंभर डूब जाने वाली थाह (गहराई)। ४ इस तरफ, इधर वाले। ५ परले, उधरवाले। ६ पराक्रम का प्रमाण। ७ वर्ग, झुंड। ८ अग-भग वाला ऊंट, शैतान ऊंट। ९ सूमरा अथवा ऊमर-सूमरा भाटी जातिके क्षत्रियों की एक शाखा का नाम है जो ले पश्चिमी राजस्थान में रहते थे।

लेवै ? ताहरां रेबारी कही—राज, इतरी कही छै जू राठोड़ सांढां लियां छै, जो आय सकै तो वेगो आये ।

इतरो सांभळनै दोदो सूमरो साथ भेळो करनै चढियो छै । अर पाबूजी सांढां लेनै मेल्हनै धाकळी[1] सू पांणी मांहे दीवी । तेसूं सांढां जैसो आड[2] तिरै ते भांतरी तिरनै साथ पार नदी करी । करनै आघा चालिया । तठे दोदे मिरजे खानरे सहर आयने मिरजेनूं कही जू राठोड़ सांढां लीवी, तूं पण बाहर आव । मिरजो दोदेरो चाकर हुंतो । तद मिरजो पण चढ दोदेरे साहमो आयो । ताहरां मिरजे कही जू दीवान, थे आघा मतो जावो, सांढां पाबू राठोड़ लियां छै, आपां घोड़ा मारियां पोंहचां नहीं, पाछा हालो, नै आन्नो बाघेलो मारियो छै सू थांसूं पण मरै नहीं । तठे मिरजे इतरी कही तेसूं दोदो पाछो फिरियो ।

दोदो तो फिरनै घरे आयो । अर पाबूजी सांढां लियां सोढांरे सहर मांहे निसरिया । तठे कोटरे नीचेकर निसरिया । तठे सोढी झरोखे मांहे बैठी पाबूजीनूं दीठी । तद सोढी मानूं कही जू पछे ही मने परणासो नो पाबूजी जावै छै, मने परणावो । ताहरां इये आपरे मांटीनूं[3] कहाई । तठे सोढे आदमीनूं वांसे[4] मेल्हियो नै पाबूजीनूं कहायो—राज, म्हारे परणीजनै पधारो । ताहरां पाबूजी कही जू आज तो धाड़ो[5] लियां जावां छां, पाछे आय परणीजसां । ताहरां सोढे आदमी साथे नाळेर मेल्हियो[6] । ताहरां आदमी टीको काढ,

---

१ हांक लगाई । २ मगरमच्छ । ३ पतिको । ४ पीछे । ५ धाड़ा, डाका । ६ नरियल भेजा, सगाई करते समय राजस्थान में लड़की की ओरसे लड़के को नरियल भेजे जाने की प्रथा है ।

नालेर पाबूजीरे हाथ दैने सगाई कर पाछा फिरिया अर पाबूजी पावरी[1] साँढाँ लैनै ददरेवे[2] आया।

आगे गोगोजी बिराजे ।ताहराँ केल्हण घर माहे बैठी हंती। गोगोजी केल्हणनूँ रोज हँसता। कहता जू काको दोदेरी साँढाँ कद आण देसी। इतरे हरियो आयो। आयनै कही जू केल्हणबाई घरे छै नही ? तठे केल्हण कह्यो-हवै[3] बीरा, छाँ। ताहराँ हरिये कही—बाई, पाबूजी पधारिया छै, दोदेरा वरग तनै संकलपिया[4] हंता सू ले आया छै, सम्भाल़ लेवो। तठे गोगोजी बाहर आया नै पाबूजीसूँ मिलिया। तठे साँढाँ सरब सँभाल़ भतीजीनूँ दीवी अर कही—एके बाँडे ऊंट बिना बीजा वरग सरब छै सू ले। तठे सरब गोगेजी सँभाई[5]। पण गोगेजीरे मन माहे विश्वास रह्यो जू दोदो आज बडो जोरवल़ छै, तैरी साँढाँ केसूँ लीवी जावै छै, कठे बीजी जायगांसूँ ले आयो छै। तठे गोगेजी पाबूजीनूं भगत कीवो नै विचारी जू पाबूरी करामात पण देखीस !

जीमनै बैठा ताहराँ गोगेजी पाबूजीनूँ कही जू पाबूजी, म्हारे केईरो नाँव लियो वैर छै सू जो थे अठै रहो तो म्हारो वैर लेवो। ताहराँ पाबूजी कह्यो—बोहत भलाँ, रहसाँ। ताहराँ रात पड़ी। तठे गोगेजी पाबूजीनूँ कही—आपाँ परभाते सौण[6] लेसाँ, जो सौण हुवा तो वैरनै चढसाँ। ताहराँ पाबूजी कही—सौण किसो लेसो ? आपाँ

---

१ सोधी। २ राजस्थान के एक गाँवका नाम। अब यह बीकानेर राज्य में है। ३ हाँ। ४ सकल्प करके दिया था। ५ ग्रहण की, सम्भाल ली। ६ शकुन।

जठे चढसाँ जठे फते कर आसाँ। तो पण गोगेजी कही—आपरी धरती माँहे सौण हीज छै। तठे रात तो अै पोढ रह्या छै अर परभात हुवाँ गोगोजी पाबूजी बेऊँ[1] घोड़े चढ़नै सौणनूँ निसरिया। तठे सौण तो कोई हुओ नहीं। ताहराँ अेक रूख नीचे जाय जाजम बिछायनै सुता अर घोड़ो-घोड़ी दोनाँने कायजाँ[2] ढालनै चरणनूँ छोडिया छै। इतरे ठंढो वखत हुवो। ताहराँ अै जागिया। तठे गोगोजी उठिया। कही—घोडा ले आवाँ, पछे आपाँ घरे जावाँ। तद पाबूजी कही—राज वैसो, हूँ ले आईस। ताहराँ गोगेजी कही—थे छोटा तोई सुसरा छो, पग बडा छो, थे वैसो, हूँ ले आईस। ताहराँ पाबूजी कही—आ तो साँची, पण थे बूढा छो अर म्हे मोटियार[3] छाँ। ताहराँ पाबूजी घोड़े-घोड़ीरी खवर करणने गया। आगे जाय देखै तो कासूँ? नाग दोय छै तिके खड़ा-खड़ा घोड़ो-घोड़ी चारै छै अर दोयाँ नागाँरो घोड़ाँरे पगा माँहे दावणो छै। तठे पाबूजी देखनै विचारी जू आ मने गोगेजी करामात दिखाली छै। तठे पाबूजी पाछा आया। पाछा आयनै गोगेजीनूँ कही—राज मने तो घोड़ा दीसै नहीं, कठे निसरिया, मने तो मिलिया नहो। ताहराँ पाबूजी जाजम बैठा अर गोगोजी बरछी लेनै खवर करणनूँ गया। आगे देखै तो कासूँ? पाणीरो वडो हवद छै, भरियो छै, तेमे एक नाव छै, तेमें घोड़ा दोनूँ छै, सू नावमें तिरै छै, हवद ऊँडो बहोत। गोगेजी विचारी जू आ मने पाबूजी करामात देखाली छै। आ जाणनै

---

१ दोनों। २ जानवरों के पैरों में वधन अथवा अर्गला डालना, जिससे वे भागकर न जा सकें। ३ जवान।

गोगोजी पाछा पाबूजी पासे आया। ताहरां पाबूजी कही—राज, घोड़ा लाधा ? ताहरां गोगोजी कही—राज, म्हारे मन मांहे संदेह थो सू हमें मिटियो, मैं थांने लाधा[1]। तद पाबूजी गोगोजी भेला हुयनै घोड़ांनूं आया। आगे देखै तो कासूं ? ऊभा छूटा चरै छै। तद अै घोड़ा लेनै, लगामां देनै, असवार हुयनै गोगेजीरी कोटड़ी ले आया छै। पाबूजीनूं भगत[2] जिमायनै विदा दीवी छै। पाबूजी अर थोरी असवार हुयनै सांढां देनै कोलू आया छै। तठे बरस अेक पाबूजी कोलू रह्या।

पाबूजीनें बरस बारह हुवा। ताहरां सोढे सावो[3] लिख मेल्हियो। कही—जान कर वेगा आवज्यो। तठे पाबूजी जानरी तयारी कीवी। जोदराव खीचो बुलायो, गोगेजीनूं बुलाया अर बूडेजी जानरी तयारी कीवी अर देवड़ो न आयो। तठे जान चढी। ताहरां चांदेरी बेटीरो पण सावो हंतो। तद सातगांव बेटी दीवी हंती तेरी सात जानां आवी। ताहरां चांदेनूं पाबूजी कही जू चांदा, थारे पण विवाह छै, तूं अठे रह। तद चांदियो तो डेरे रह्यो अर देवियो साथे हुवो। ताहरां जानियां बीच जांवतां जाननूं बडा कारा[4] सौण हुवा। ताहरां लोकां सौणियां[5] कही—राज, सौण भला न हुवा छै, पाछा फिरो, बीजे सावे परणीजसां। ताहरां पाबूजी कही—थे पाछा फिरो, हूं तो कोई फिरूं नही, लोक कहसे जू पाबूजीरो तेल चढी रही। ताहरां पाबूजी तो आघा चढिया। साथे अेक देवियो हुवो अर बीजा सरब पाछा फिरिया।

---

१ आपका भेद पालिया। २ भक्तिपूर्वक। ३ विवाह-लग्न। ४ खराब। ५ शकुन बूझनेवालोंने।

ताहरां पाबूजी घड़ी दोय रात गयां धाट[1] जाय पहूँता। उठे सोढां भली भांतसूँ विवाह कियो। ताहरां पाबूजी फेरा लेनै हालण लागा। ताहरां सोढां कही—राज, म्हांमें चूक किसी जू जीमो नहीं नै कोई भगत लेवो नहीं सु किसे वासते, दिन दोय च्यार रहज्यो, जान दायजो देनै विदा करां। ताहरा पाबूजी कही जू म्हांने सौण लावा[2] हुवा छै, तेहूँ रातेरात घरां जाईस, पाछे मासेकनूँ[3] भगत दायजो ले जाईस। ताहरां सोढां कही—तो चढो। तद पाबूजी चढिया। तठे सोढी पण कही—हूँ पण नहीं रहूँ, साथे हुईस। तठे सोढीजी पण वहली वैस साथे हुवा छै। ताहरां वहली वांसे[4] राखी। पाबूजी सोढीनूँ आपरे वांसे कालवी ऊपर चढाय लीवी। उठेरा चालिया रातों-रात कालू आया। पाबूजी अर सोढी जाय मोहलमें पोढिया छै अर देवो आपरे घरे जाय सूतो छै।

तठे जानी जींदराव आयो हंतो। तठे पाबूजी बूडेजी जींदरावनूं सीख दीवी। ताहरां जींदराव जांवते मारगमें काछेलांरो धण सरब लियो। ताहरां गोरी[5] आय पुकारियो। कही—जींदराव खीची धण[6] सरब लियां जावै छै। तद विरोड़ी चारण आयनै बूडे आगे कूकी। कही—बूडा, वाहर धाय, खीची गायां घेरियां। ताहरां बूडे कही—हे चारण, म्हारी आंख दूखै छै, आज तो कोई चढां नहीं। ताहरां चारण कूकती-कूकती पाबूजीरे महल आयनै चांदेनूं कही—चांदा, पाबूजी नहीं अर खीची धण सरब लियो, तूं चढ। ताहरां चांदे कही—हे कूक ना,

१ सोढोंका देश। २ खराब। ३ एक महीने के लगभग। ४ पीछे। ५ गाय बैल चरानेवाला। ६ गाय-बैल।

पाबूजी आया छै। इतरे पाबूजी पण झरोखे माँहे गळो काढियो। कही—कासूँ छै ? ताहराँ चाँदे कही—विरोड़ी चारणरो धण जींद-राव लियो अर बूडो चढै नहीं। ताहराँ पाबूजी घोड़ी जीण करायनै चढिया नै आहेड़ी[1] पण सरब चढिया। सातवीस जानी नै सात चाँदेरा भाई अै पाबूजी साथे चढिया। तिके जाय पहूँता। उठै लड़ाई हुई। ताहराँ खीचीरो लोक सरब घिरियो। पाबूजी धण सरब लेनै चालिया अर धणनै गूजत्रे कोहर[2] चाढियो। पण पाणी नीसरै नहीं। तद विरोड़ी कह्यो—वडा राठोड़, ज्यों फेरिया[3] त्यों पाय[4]। तठे वांसे कोहर माँहे घातनै पाबूजी आप वारो लेवण लागा। तठे अेक वारो काढियो। तेसं काठा कूंडी खेळी अेके वारेसूँ सरब भरिया। धण सरब पायो ।

अर वाँसे वीरोड़ीरी छोटी बहन बूडेनूँ जाय पुकारी। कही—बूडा, हमे तू कितरा-एक काळ जीवीस, पाबूजी तो काम आया। इतरी इये कही तेसूँ बूडेनूँ छोह[5] छूटो। बूडोजी असवारी कर चढिया। तेसूँ पहूँता ताहराँ जींदरावनूँ कही—रे खीची, ऊभो रह, पाबू मारने कठे जाईस। तद खीचो सोस[6] कियो। कही – राज, पाबूजी तो धण ले पाछा फिरिया, थे लड़ो मती जाँणे। पण बूडो मानै नहीं। तठे लड़ाई हुई। बूडोजी काम आया। ताहराँ खीची आपरे लोकाँनूँ कही जू आज आपाँ पाबू मारियो नहीं तो पछे आपाँने नहीं छोडेलो, मारो। ताहराँ, जींदराव कुडल[7] पण पँमे घोरंधारनूँ कह्यो जू अै

---

१ थोरी, जो चाँदे के यहाँ बराती होकर आये थे। २ गूजवा नामका कुँआ। ३ लौटा लाया (गाय-बैलोंको)। ४ पिला। ५ प्रेम। ६ आवाज दी। ७ पँमेकी राजधानी।

राठोड़ छै, थारी धरती दबाँवता-दबाँवता सरब राज लेसी अर जो आवै तो आज दाव छै, पाबूनूँ माराँ। ताहराँ पॅमो पण चढियो। अै भेळा हुयनै पाबूजी ऊपर आया। तठै पाबूजी गायाँ पायनै छोडी छै। इतरे खेह दीठी। कही—रे चाँदा, आ खेह केरी ? तद चाँदे कही—राज, खीची आयो। अर पहलड़ो लड़ाई माँहे चाँदे खीचीनूँ तरवार वाही हंती। तद पाबूजी तरवार आपड़ लीवी। कही—मारो मती, बाई राँड हुसी। तद चाँदे कही—राज, आप तरवार आपड़ी सू बुरो कीवी, अै छोडै (?) छै, मराया भला। पण पाबूजी मारण दिया नहीं। तठै फोज आई। तद चाँदे कही—राज, जो मारियो हुवै होत तो पाप कटियो हुत, हरामखोर आयो। तठै पाबूजी तो वुहा[1] ने लड़ाई कीवी। बडो रिठ वाजियो[2]। तेसूँ पाबूजी काम आया। सात-बीस अहेड़ी हंता सु सरब काम आया। खीची तो लड़ाई करनै आपरे घरे गयो अर पाबूजीरे सोढी सती हुई। अर डोड-गहेलीरे सात मासरो गरभ सू आ सती हुई तद लोकाँ कही—थारे पेट माँहि बेटो छै सू सती मतो हुवो। ताहराँ डोडगहेली छुरी लेनै पेट भ्फरड़ने[3] माँहे बेटो काढियो अर धायनूँ दियो। कही—इयेनूँ पाळे, ओ बडो देवनीक[4] मरद हुसी। तठै नाँव भ्फरड़ो दियो। पछे भ्फरड़ो बरस बारहरो हुवो। ताहराँ भ्फरड़े काके-बापरा वैर लियो, जींदराव खीचीनूँ मारियो। तिको भ्फरड़ो अजे जीवै छै। तेनूँ गोरखनाथजी मिलिया।

---

१ चले। २ घोर युद्ध हुआ। ३ काटकर। ४ देव-तुल्य।

(१) जगदेव पँवार

(१) प्राचीन काल में परमार जाति के राजपूत बड़े प्रतापी हुए। सिंध से लेकर मालवा तक का विस्तृत देश उनके अधिकार में था। उनके बड़े भारी प्रताप और महान् साम्राज्य के कारण ही यह कहावत प्रसिद्ध हो गई कि—

पिरथी-तणा पँवार, पिरथी परमारॉ-तणी।
एक उजीणी धार, बीजो आबू बैसणो॥

उस समय परमारों के दो राज्य थे। पश्चिमी अर्थात् राजस्थानी राज्य की राजधानी आबू में थी और पूर्वी अर्थात् मालवीय राज्य की राजधानी धारा।

(२) राजस्थान के प्राचीन इतिहास-ग्रंथों, ख्यातों और कविपरंपरा में अणहिलवाड़ पाटण के राजा सिद्धराज सोलंकी जयसिंह और जगदेव पँवार की बात प्रसिद्ध है। नैणसी की राजस्थान की ख्यात में सोलंकियों की वंशावली दी हुई है। वहाँ लिखा है कि सं० १०१७ विक्रमी मे मूलराज सोलंकी ने चावड़ों से पाटण का राज्य छीन लिया और ४५ वर्ष तक राज्य किया। इसके बाद ४० वर्ष तक उसके दो उत्तराधिकारियों ने राज्य को अपने बाहुबल से खूब बढ़ाया। सिद्धराज जयसिंह देव विक्रमी संवत् ११५० में

पाट बैठा और उसने ४९ वर्ष तक राज्य किया। इसने अपने समय में रुद्रमाल का प्रसिद्ध शिवालय बनाया था जिसको बादशाह अलाउद्दीन ने गुजरात-विध्वंस के समय नष्टभ्रष्ट कर दिया था। सरस्वती नदी के तट पर माधव का प्राचीन मदिर और सिद्धपुर नामक छोटा सा नगर भी इसी राजा ने बनवाया था। लगभग २२५ वर्षों तक सोलंकियों का राज्य पाटण में रहा। बाद में सं० १२५३ में वहाँ सोलंकियों की दूसरी प्रबल शाखा बघेलों का अधिकार हो गया। सोलंकियों के राज्य का विवरण ख्यात में इस प्रकार दिया है—

कबित्त—

मूलू पैंताल़ीस, बरस दस कियो चन्दगिर।
बलभ अढाई बरस, साढ बारह द्रोणागिर॥
भीम बरस चाल़ीस, बरस चाल़ीस करणगह।
एक घाट पंचास, राज जयसिह बरणाह॥
कुंवरपाल़ तीस त्रिहुं, आगल बरस तीन मुलराजंह।
विलसी भीम सत्तर सहरस बरस साठ अगलीक चह॥

(३) जगदेव पँवार के सम्बन्ध में नैणसी की ख्यात में परमारों की एक वंशावली में लिखा है कि उदैबंध (चंद) अथवा उदयादित्य नामक पँवार के दो पुत्र रणधवल और जयदेव (जगदेव) हुए जिनमें रणधवल तो राजधानी (धार) में राज्य करता रहा और जगदेव ने सिद्धराव सोलंकी की चाकरी ग्रहण की और कंकाली (देवी) को अपना मस्तक दिया।

(४) उदयादित्य प्रसिद्ध दानवीर भोज के उत्तराधिकारी जयसिंह के पीछे मालवे का अधीश्वर हुआ। उसका शासनकाल शिलालेखों से १११६ से ११४३ वि० सं० तक ठहरता है। संभव है उसने और आगे तक राज्य किया हो। शिलालेखों के अनुसार उसके दो पुत्र थे— (१) लक्ष्मदेव, और (२) नरवर्मा। जगदेव का उल्लेख नहीं मिलता। उदयादित्य प्रतापी राजा हुआ है। उसका मांडू के सुलतान के अधीन होने की कथा भाटों की कल्पनामात्र है। जगदेव का उल्लेख मालव-नरेश अर्जुन वर्मा ने अपना पूर्वज कहकर किया है जिससे उसका ऐतिहासिक व्यक्ति होना सिद्ध है। भाटों में और जनता में जगदेव का नाम बहुत प्रसिद्ध है।

---

(२) जगमाल मालावत

(१) मारवाड़ राज्य को स्थापित करने वाले राठोड़ राव सीहोजी की आठवीं पीढ़ी में राव सलखोजी बड़े प्रतापी क्षत्रिय हुए। उनके पुत्र राव मल्लीनाथजी हुए जो अपनी वीरता और धर्मनिष्ठा के कारण राजस्थान मे देवता की तरह पूजे जाते हैं। जोधपुर राज्य की प्राचीन राजधानी मंडोर में राव मल्लीनाथजी की विशाल मूर्ति अब भी विद्यमान है। इन्हीं राव मल्लीनाथजी के पीछे जोधपुर राज्य का दक्षिण-पश्चिमी भूभाग 'मालाणी' कहलाया जो मारवाड़ राज्य की सीमा पर स्थित है और जिसका मुख्य नगर बाड़मेर है।

राव मल्लीनाथजी के सुपुत्र कुंवर जगमालजी अपने पिता की तरह ही इतिहास-प्रख्यात वीर हुए। दोनों पिता-पुत्र मारवाड़ के महेवा नगर में रहते थे। मल्लीनाथजी तो वृद्ध हो गये, अतएव सात्विकी वृत्ति धारण कर रात-दिन ईश-भजन में समय विताते थे। राज्य का कार्य कुँवर जगमालजी करते थे।

(२) राजस्थान में चैत्रशुक्ला ३ को गणगौर का त्यौहार बड़े समारोह के साथ मनाया जाता है। दशहरे के बाद यही त्यौहार राजस्थान का सर्वप्रधान सार्वजनिक त्यौहार कहा जा सकता है। तृतीया को सन्ध्या के समय भिन्न २ हिन्दू जातियों के स्त्री-पुरुष ईश्वर (महादेव) और गौरी (गणगौर) की प्रतिमाएं सजा कर गाते बजाते हुए जलूस निकालते है। जलाशय पर जलूस समाप्त होता है जहाँ पर पूजा होती है। "अनुमान से यह त्यौहार पार्वती के गौने (मुकलावा) का सूचक है। मुद्राराक्षस आदि संस्कृत नाटकों में "बसंतोत्सव" के नाम से जो उत्सव वर्णित है, शायद उसी ने गणगौर का रूप धारण कर लिया हो।"

स्त्रियाँ और लड़कियाँ इस त्यौहार को विशेप निष्ठा के साथ लगभग १५ दिन तक मनाती हैं। लड़कियों की भक्ति में आदर्श वर-प्राप्ति की कामना रहती है और स्त्रियों की पूजा मे सौभाग्य-रक्षा की।

(३) राव जगमालजी और गींदोली की बात के अतिरिक्त ऐसी ही एक दूसरी बात राजस्थान में प्रसिद्ध है, जिसका स्मारक "गणगोर"

त्यौहार के अवसर पर गाया जाने वाला 'घुड़लो' गीत है। कहते हैं कि सं० १५४८ विक्रमी चैत्र कृ० १ शुक्रवार के दिन मारवाड़ के गाँव कोसाणाँ (पीपाड़ के पास) की बहुत सी क्षत्रिय कन्याएँ बस्ती से बाहर तालाब पर गौरी की पूजा के लिए गई थीं। उनमें से १४० को अजमेर का मुसलमान सूबेदार मल्लूखाँ पकड़ ले गया। यह खबर पाते ही मारवाड़ के राव सातलजी राठौड़ ने चढ़ाई की और उन कन्याओं को लौटा लाये। साथ में मुसलमान अमीर उमरावों की कई कन्याएँ भी ले आए जिनमें एक घुड़लाखाँ सेनापति की कन्या भी थी। इस युद्ध में घुड़लाखां का सिर रावजी के सेनापति सारंगजी खीची के तीरों से बिंध गया था। इस छिदे हुए सिर को खीची सरदार ने प्रतिकार के रूप में उन तीजणियों को भेंट किया। आज भी इस घटना के स्मारक-स्वरूप गणगौर त्यौहार के दिनों में सन्ध्या के समय कुमारी कन्याएँ अनेक छिद्रवाला घड़ा सिर पर लेकर और उसमें दीपक रखकर कुटुम्बियों के घरों में घूमती हैं। चत्र शु० ३ को इस घुड़ले का सिर तलवार से छेदा जाता है, क्योंकि इसी दिन घुड़लाखाँ का शिरच्छेद हुआ था।

---

(३) वीरमदे सोनगरा

'नवकोटो' मारवाड़ के राज्य में जालोर का परगना प्राचीन काल से वीरभूमि की तरह राजस्थान में प्रतिष्ठित रहा है।

दुर्ग के पूर्व की ओर एक मील पर अर्वली पर्वतमाला से

निकलने वाली शूकरी नामक बरसाती नदी बहती है। जालोर परगने के अन्तर्गत इस नदी द्वारा सींची हुई ३६० गाँवों की उर्वरा भूमि पड़ती है। पहले यह किला पँवार राजपूतों के अधिकार में था। परन्तु १३ वीं शताब्दि में चौहान राव कीर्त्तिपाल ने उसे पँवारों से छीन लिया। तबसे कई शताब्दियों तक चोहानों की एक शाखा सोनगरा—राजपूतों के अधिकार में यह दुर्ग रहा। इन्हीं सोनगरों के राव कान्हड़दे के राजत्वकाल में दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन ने इस किले पर आक्रमण किया। अलाउद्दीन जैसे प्रबल शत्रु के विरुद्ध चौहानों ने १२ वर्ष तक इसकी वीरता के साथ रक्षा की और अन्त में आपस के वैमनस्य के कारण यह किला विक्रम संबत १३६८ वैसाख शु० ५ बुधवार के दिन अलाउद्दीन के हाथ में चला गया।

विक्रमी सं० १३३९ से १३५४ के बीच में जालोर में रावल सामन्तसिंह राज्य करता था। उसके कान्हड़दे और मालदेव नामक दो पुत्र हुए। पिता के बाद ज्येष्ठ कुमार कान्हड़दे जालोर की राजगद्दी पर बैठा। इसी कान्हडदे का परम प्रतापी वीरपुत्र वीरमदे हुआ।

---

(४) कहवाट सरवहियो

(१) सरवहिया या संखरिया सोलंकी राजपूतों की १६ शाखाओं मे से शाखा है (टाड)।

---

(६) जैतसी ऊदावत

जोधपुर राज्य के बसाने वाले राव जोधाजी राठोड़ राजस्थान में बड़े पराक्रमी राजा हो गये हैं। इनका जन्म सं० १४८४ के वैसाख में हुआ। संवत् १५१५ में इन्होंने जोधपुर नगर बसाया। राव जोधाजी की ७ रानियों से १५ पुत्र उत्पन्न हुए, जिनमें सातलजी अपने पिता की मृत्यु होने पर संवत् १५४५ में जोधपुर की गद्दी पर बैठे। तीन वर्ष के बाद इनकी मृत्यु होगई और राव सूजाजी सिंहासनासीन हुए। इन्होंने २५ वर्ष तक राज्य किया।

राव जोधाजी के पुत्रों में सभी बड़े उत्साही और पराक्रमी वीर हुए। इन्होंने मारवाड़ राज्य को खूब विस्तृत किया और अच्छे २ नगर बसाये। कुँवर दूदाजी ने प्रसिद्ध नगर मेड़ता बसाया। इन्हींके वंशधर राठोड़ वीर जयमलने बड़ी वीरता के साथ चित्तौड़ की अकबर के विरुद्ध रक्षा की थी। कुँवर करमसिंह और रायपाल ने खींवसर, सांवतसिंह ने डाबरा और भारमल ने विलाड़ा बसाया। कुँवर बीकाजी ने बीकानेर राज्य की स्थापना की। कुँवर बीदाजी ने बीदासर बसाया।

इस कहानी के प्रारम्भिक भाग में प्रस्तावना के रूप में राव सूजाजी से पहले के मारवाड़ के राजाओं का वृत्तान्त दिया हुआ है जो कहानी में विशेष महत्व नहीं रखता, परन्तु ऐतिहासिक विज्ञप्ति की तरह पाठकों को रुचिकर हो सकता है। अतएव उस अंश को यहां पर अविकल उद्धृत कर देते हैं—

राव जोधा भार्या हुलणी[1] जांमणादे—पुत्र, जोगा १, भारमल २, कुम्भक्रन ३। जोधा भार्या दूजी हाडी जसमादे—पुत्र,नींबा १, सूजा २, सातल ३। तीजी राव जोधा भार्या भटियांणी—पुत्र, वरगवीर १, करमसी २, रायपाल ३। चौथी रांणी राव जोधा भार्या सांखली नवरंगदे—पुत्र, वोका १, वीदा २। पांचमी राव जोधा भार्या देवड़ी सूड़वदे—पुत्र, सावतसो १। राव जोधा भार्या छठी वाघेली मैणलदे पुत्र—सिवराज १। राव जोधा भार्या सातमो सोनगरी चांपां—पुत्र, दूदा १, वरसिंघ २। सू राव जोधैजीरै पाट सूजोजी बैठा। संवत् १५४५ राव जोधोजी देवगत हुवा नै सुजोजी पाट बंठा। संवत १५१६ चैत्र सुदि ६। वरसिह १ दूदैजी मेड़तो वसायो। दूदैजी मेड़तै राज कोयो। पछै संवत् १५२२ मिती वैसाख सुदि ३ दूदासर खोदायो। करमसी रायपाल खीवसर बसायो। सिवराज धूनाड़ो वसायो। राव जोधा पुत्र सांवतसी तिण डांबरो बसायो। भारमल वोलाड़ो बसायो। संवत् १५४५ मिती वैसाख सुदि १ शनिवार बीकैजी बीकांनेर वसाई। संवत १५४५ वीकै कोटरी नींव दोनी। पहिली जांगलू गाव रेहता, पछै संवत् १५६८ वीदै बीदासर वसायो। सातल वरस त्र पछै जोधाजी रै टीकै बैठो। पछै सूजोजी पाट वैठा। तिण सातल नडो धण लै छै। संबत् १५१७ चैत्र मांहे राव जोधैजी वरसिंह दूदाजी नै देसोटो दीधो। तिको देवड़ीजी समेता गांव गगडांणारै तलाव सेझवालो छुडायो। तिण समै गगडांणा मांहे जैतमल रावत ऊदो रहै।

---

१ गुहिलोत वंशीय क्षत्रियों की शाखा 'हुल'—उसकी कन्या।

तिण वरसिंघ दूदानै घणो मोहतव[१] दे कोटड़ी मांहे राखिया। तिण समै लखमण गहलोत कूचौरे राज करै। तिणरै ऐराकण घोड़ियां तिको वरसी नै नरसिंघ सींधल जैतारण राज करै। तरै लखमण गहलोत वछेरा २ ऐराकी नरसिंघ खींदा सिंधलरै निजर मेलिया। तिके गगडांणा माहे होयनै जांता था। तरै रावत ऊदै घोड़ा खोस[२] लीया। तिण ऊपरै लखमण गैहलोत नै खींदो सींधल चाढनै आया। तरै बडी लडाई हुई। खींदो लखमण न्हाठा[३]। वरसिंघ दूदैजी हाथ दिखाया। पछै भैंसियां गगडांणारी ऊछरी[४] थी तिके वेझपारी झंगी[५] झाडां[६] मांहे पाणी देख बैस रही। तरै सारो साथ खोझणनै[७] चढिया। तरै वरसिंघजी दूदोजी घोड़ै चढिया वेझपै लाधी[८]। तिके लेनै गगडांणै गया। तरै बरसिंघजी दूदैजी रावत ऊदानै कह्यो जे थे कहो तो वेझपा तीरै[९] बास अेक बसीनै बसावां। तरै जोसी तेड़नै मोहरत पूछिया नै कह्यो, अठै आगै मांनधातारो वसायो मेड़तो छै, तिको मोटो सहिर थो। एकै दिन अतीतनै[१०] संतायो तिणरा सरापसूं ऊजड़ हुवो छै, तिको वसावो। तिको कनै गांव धोळेराव छै। तठै मेरां[११] रो थांणो रहे छै। तिको मेरांनै दाळ[१२] देता नै रहता। इतरो सुण, मेरांसूं वतगाव कीनो,-थारै पाडोस राव जोधाजीरा बेटा वरसिंघ नै दूदो थाहरो पाडोस वसै छै, थांहरा कांमनै तयार छै। मेरां परमांण कीनों। मेडतो वसियो। पछै मेर जोरावर देखिनै वेसासिया[१३]।

---

१ मुहब्बत, इज्जत। २ छीन लिया। ३ भाग गये। ४ निकली थी। ५ बीहड़, घनी। ६ दरख्तों। ७ खोजने। ८ पाई। ९ के पास। १० योगी को। ११ मारवाड़ की एक जंगली जाति। १२ कर, दातव्य। १३ विश्वास किया।

चूक[१] करिनै मेरांनै मारिया। तिकै अठारै-वीसी मेर मारिया। तठै गोठ करी। तिणै समीयैरो कवित्त—

गगडांणो बासीयो लासां[२] घोड़ा सैवांरै।
धोलेराव विधुंस मेर वीसी अठारै॥
आल[३] भयंकर आप घाव वैरचां सिर घतै[४]।
मोजावाद मचकोड[५] थाप[६] दूदो मेड़तै॥
लखमणो भांज घोड़ा लिया खींदो रिण भुय खेसियो[७]।
वैजल पाटंवरां आभरण ऊदो अरि आदेसियो॥

इतरो मेड़तारो समीयो[८]।

(७) पाबूजी

(१) पाबूजी राजस्थान के एक प्रसिद्ध राठौड़ वीर हो गये हैं जो अपनी वीरता और सात्विक आचरण के लिए इस देश की जनता में देवता की तरह पूजे जाते हैं। इन्होंने गायों और अनाश्रितों की रक्षा में अपने प्राण दिये थे और अनेक कठोर प्रतिज्ञाओं का पालन किया था। इनके वीरता के कार्य राजस्थान में "पाबूजीरा परवाड़ा" नाम से चारण-भाट और ग्राम्य गायकों में प्रसिद्ध है और गाँव-गाँव में गाये जाते है। इनके नाम पर अनेक सार्वजनिक मेले लगते है। जगह-जगह पर इनके मन्दिर बने हुए हैं जहाँ इनकी पूजा होती

---

१ कपट। २ घोड़ोंकी पंक्ति। ३ युद्ध। ४ मारे। ५ नष्ट करके। ६ स्थापित करके। ७ भगादिया। ८ इतिहास।

होती है। ग्रामीण जनता में इनके प्रति अनन्य भक्ति देखी जाती है।

(२) पाबूजी के प्राणोत्सर्ग की कथा एक दूसरे रूप में भी प्रचलित है जो नीचे दी जाती है—

[पाबूजीरी वात बीजी]

नागोर कने जायल़ नांव गांव। उठे जींदराव खीची राज करै। देवल़जी नांव चारणी पण उठै रहै। सु अै देवल़जी देवीरो अवतार। देवल़जी पासे काल़मी नांव अेक घोड़ी हुंती सु घणी फूटरी[1] अर देवनीक[2] हुंती। सारी बात समझती। सु आ घोड़ी देवल़जी पासे जींदराव मांगी पण देवल़जी नै दीवी। तेसूं जींदराव घणी रीस कीवी। दुख पायो। और देवल़जीनूं सॅतावण लागो। ताहरां देवल़जी आपरो धण सरब लेयनै पाबूजी पासे आय रह्या। तठे पाबूजी घोड़ीरो वखाण घणो सांभल़ियो। देवल़जी पासे घोड़ी मांगी। ताहरां देवल़जी कही—घोड़ी थांनूं देसां पण म्हारे धणरी रुखाल़ी थानूं करणी पड़सी। ताहरां पाबूजी बोल कियो। कही—थांरे काम पड़ियां म्हे जूती पण पहरां नहीं। ओ बोल कर घोड़ी लीवी।

तठे आ वात जींदराव सांभल़ी जू चारणी घोड़ी पाबूजीनूं दीवी। ताहरां घणी रीस करी। देवल़जीरो धण ले जावणनूं घणी कोसीस करै पण पाबूजी थकां जोर कांई चालै नहीं।

तठे ऊमरकोटमें सोढा राज करै। इयांरै अेक राजकंवरी। कॅवरी पाबूजीरो घणो वखाण सांभल़ियो। ताहरां विचारी—वर

---

१ सुन्दर। २ देव-वंशीय।

मिलै तो पाबूजी जिसो । ताहरां कँवरी आपरी मांने कही—मने परणावो तो पाबूजीनं हीज । इये आपरे मांटीनं कही । ताहरां सोढे आपरा आदमी सगाई करणनं मेलिहया । सू अै पाबूजी कने आया । ताहरां पाबूजी कही—मैं म्हारो माथो देवलजीरे धणरी रुखाली खातर दियो छै सू कुण जाणे कद काम आऊं । तेसूं हूं विवाह करूं नहीं, थे कंवरीरो विवाह दूजी जांयगां करो । तठे आदमी पाछा ऊमरकोट आया । समाचार सरब सोढेनं कह्या । ताहरां सोढी कह्यो—हूं परणूं तो पाबूजीनं हीज । तठे सोढे आदमी भले[1] भेजिया । आदमियां जायनै पाबूजीनं हकीकत सरब कही अर सगाई करनै पाछा फिरिया ।

पछे सोढां सावो लिख मेलिहयो । कही—जान कर वेगा आवज्यो । ताहरां पाबूजी देवलजी पासे गया । कही—सोढी हठ पकड़्यो छै सू आज्ञा होय तो ऊमरकोट जाऊं । ताहरां देवलजी कही—राज, भलां ही पधारो, लारेसूं जींदराव धणनूं घेरसी तो कालमी आपनूं कहसी, तठे थे एक खिणरी पण देर मती करीज्यो । इण भांतसूं आज्ञा लेयनै पाबूजी फिरिया अर जानरी तयारी करी । पछे जान चढ़ी सू ऊमरकोट दिन दोय में जाय पूगी । सोढां घणी भगत कीवी अर भली भांतसूं विवाह कियो । वींद अर वींदणी चॅवरीमें बैठा । फेरा हुवण लगा । इतरामें पाबूजीरी घोड़ी कालमी हींस मार उठी, सू पाबूजी तो झट हथलेवो छोडनै चँवरी मांहे ऊभा हुवा अर तुरन्त कालमीरी पीठ आया ।

---

[1] फिर ।

तठे सोढां कहीं—राज,म्हांमें चूक किसी सू इण भांतसूं हालिया। तठे पाबूजी बोलिया। कही—राज, चूक कांई नहीं, पण म्हां बोल दियो छै, आगे आ घोड़ी चारणां पासे हंती सू जींदराव खीची मांगी पण चारणां नै दीवी अर घणां सरदारां मांगी पण नै दीवी, पछे मने दीवी अर कही—राज, घोड़ी थांनूं देवां छां सु म्हांरे कामरे खातर थांनूं माथो देणो पड़सी। जद मैं बोल कर घोड़ी चारणां पासे लीवी अर आज चारणां माथे संकट पड़ियो छै सु म्हे अबै ठहरां नहीं। इतरी कहनै पाबूजी हालिया।

अठे पाबूजी ऊमरकोट परणणनूं गया ताहरां जींदराव खीची विचारी जू चारणांसूं बदलो लेवणरो मोको हणे[1] छै। ताहरां जींदराव जायलसूं निसरियो अर धांधलै आयो। देवलजीरो धण रोहीमें चरतो हंतो सू घेरियो अर लेनै हालियो। तठे गोरी देवलजी पासे जायनै पुकारियो। कही जू जींदराव खीची धण सरब लियां जावै छै, ताहरां देवलजी पाबूजीनूं याद किया अर ऊमरकोट में कालमी हींस मारी। ताहरां पाबूजी ऊमरकोटसूं हाल-अर[2] कोलू आया अर जींदराव ऊपर चढिया। जींदराव धण लेयनै चालियो जावै छै। इतरामें पाबूजी औचक आयनै पड़िया अर धण सरब घेरनै पाछा फिरिया। पण अेक बाछड़ो आयो नहीं जिणसूं दूजो बार भलै खीचियांरै लारे गया। तठे खीचियां पाबूजीनूं अेकला देखनै घेरिया। घमासाण माचियो। तठे बींदरे वेस मांहे ज पाबूजी काम आया। सोढी साथे सती हुई।

---

१ अभी। २ चलकर।

पाबूजी के विषय में अनेक गीत प्रसिद्ध हैं जिनमें से एकाध के कुछ अंश नीचे दिये जाते हैं—

(१) गीत पहलड़ो

नेह निज रीझरी बात चित्त ना धरी,
प्रेम गवरी-तणो नाँहि पायो ।
राजकँवरी जिका चढी चँवरी रही,
आप भँवरी-तणी पीठ आयो ॥[१]

(२) गीत दूजो

(१)

प्रथम नेह भीनो, महा क्रोध भीनो पछे,
लाभ चँवरी समर झोक लागै ।
राम-कँवरी वरी जेण वागे रसिक,
वरी घड़ कँवारी तेण वागे ॥[२]

१—गीत का अनुवाद—अपनी रीझ के स्नेह पर तनिक भी चित्त न दिया, गोरी (अपनी व्याही हुई स्त्री) का प्रेम भी नहीं पाया । राजकुमारी चौंरो (विवाह-मंडप) में चढ़ी रही और स्वयं काली घोड़ी (कालिमी) की पीठ पर सवार होकर चल पड़ा ।

२—(पाबूजी) पहले तो प्रेम से सिंचित हुआ, बाद में महाक्रोध से । चौंरी (विवाह-मंडप) का लाभ समर के आक्रमणों में पाया । रसिकवरने जिस सुसज्जित वेष से राजकुमारी को वरा, उसी वेष से शत्रु की कुँवारी (अप्रतिहत) सेना का वरण किया (परास्त किया) ।

(२)

हुवे मंगल़ धवल़ दमंगल़ वीर हक,
रंग तूठो कमध जंग रूठो ।
सघण वूठो कुसुम वोह जिण मोड़ सिर,
विखम उण मोड़ सिर लोह वूठो ॥[१]

(३)

करण अखियात चढियो भलां काल़मी,
निबाहण बयण भुज बांधिया नेत ।
पॅवाराँ सदन वर-माल़सूँ पूजियो,
खलॉ किरमाल़सूँ पूजियो खेत ॥[२]

१—इधर चारों ओर धवल मंगल (विवाहसम्बन्धी मंगलगीत) हो रहे । उधर युद्ध में वीरों का कोलाहल और युद्ध सम्बन्धी मारू गीत हो रहे हैं । राठौड़ वीर पाबू इधर विवाहमंडप में प्रेम से उल्लसित हुआ, उधर युद्ध में क्रोध से क्षुब्ध हुआ । विवाह के समय जिस मुकुटशोभित सिर पर कुसुमों की सघन वर्षा हुई थी उसी मुकुट-शोभित शीश पर युद्ध में लोहे की विषम वर्षा हुई ।

२—पाबूजी अपना यश प्रख्यात करने को श्रेष्ठ घोड़ी कालिमी पर चढ़े, वचन निवाहने के लिए, नेत्रों को लक्ष्योद्दिष्ट किये हुए और भुजाएँ सन्नद्ध किये हुए । जो मस्तक पँवारों के घर में वरमाला से पूजा गया वही रणक्षेत्र में शत्रुओं द्वारा तलवार से पूजा गया ।

(४)

सूर वाहर चढे चारणाँ–सुरहरी,
इतै जस जितै गिरनार–आबू ।
बिहँड खल खीचियाँ–तणा दल विभाड़े,
पोढियो सेज रण–भोम पाबू ![१]

१—चारणों की गायों की रक्षा के लिए शूरवीर पावूजी रक्षार्थ चढ़े। उनका यश तब तक रहेगा जब तक आवू और गिरनार पर्वत अटल रहेंगे। दुष्ट खीची-क्षत्रियों के दल को नष्ट-भ्रष्ट करके वीर पावू रणभूमिरूपी शय्या पर सदा के लिए सो गया।